Anupam Agrawal and akfunworld present...

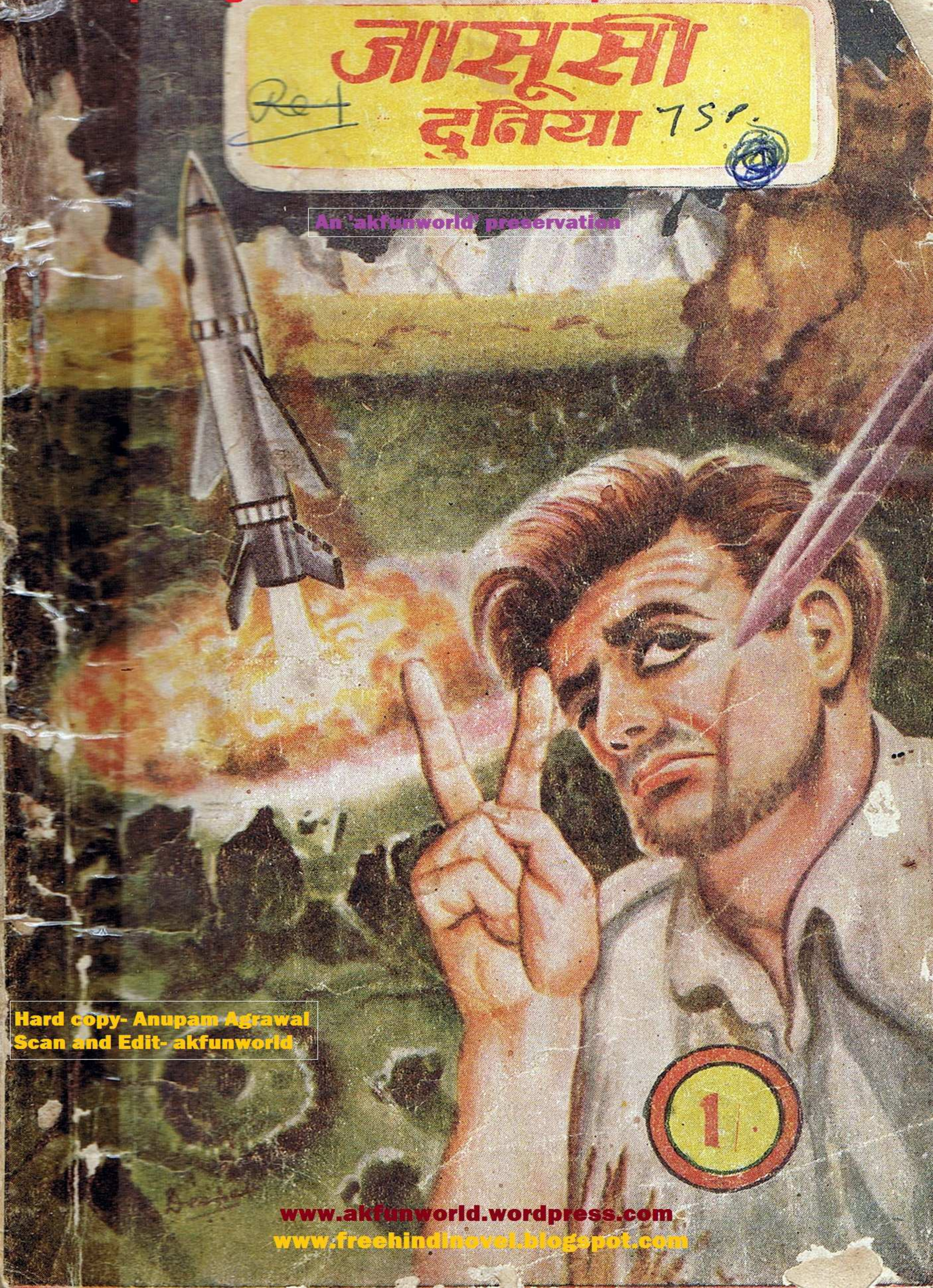

An 'akfunworld' preservation
Hard copy- Anupam Agrawal
Scan and Edit- akfunworld
www.akfunworld.wordpress.com
www.freehindinovel.blogspot.com

FPGL (55) R-1 TSP. (120)

हिन्दी, उर्दू और बंगला में प्रकाशित होने वाली !

जासूसी दुनिया हिन्दी

का

पैंतीसवाँ अंक ★ द्वितीय संस्करण

विकराल छाया

लेखक :

इब्ने सफ़ी बी० ए०

अनुवादक :—प्रेम प्रकाश

३५ वाँ अङ्क — द्वितीय संस्करण

वार्षिक मूल्य — इस अङ्क का मूल्य

१० रुपये — १ रुपया

akfunworld

www.akfunworld.wordpress.com

प्रकाशक :

जासूसी दुनिया प्रकाशन

इलाहाबाद—२

Fantastique Library

सर्वाधिकार सुरक्षित हैं।

इस कहानी के पात्र तथा घटनायें काल्पनिक हैं।

प्रथम संस्करण नवम्बर सन १९५५ ई०
द्वितीय संस्करण नवम्बर सन १९६८ ई०

प्रकाशक:
जासूसी दुनिया प्रकाशन
इलाहाबाद—३

टेलीफोन नम्बर ५१२०

श्री अब्बास हुसैनी प्रधान सम्पादक, मुद्रक तथा प्रकाशक, ने नकहत पब्लिकेशन के लिये जनता प्रेस, इलाहाबाद से छपवाकर मासिक पत्रिका जासूसी दुनिया हिन्दी कार्यालय इलाहाबाद—३ से प्रकाशित किया।

—: सूची :—

१—सम्पादकीय
२—विकराल छाया
३—ग़ज़ल
४—आर्ज़ू की बस्ती में
५—समाचार

सम्पादकीय

प्रस्तुत अङ्क "विकराल छाया" जासूसी दुनिया हिन्दी का पैंतीसवां अङ्क है।

इस से पहले जासूसी दुनिया हिन्दी के १ से लेकर ३४ अङ्क तक द्वितीय संस्करण के रूप में प्रकाशित हो चुके हैं और द्वितीय संस्करण का यह क्रम उस समय तक चलता रहेगा जब तक जासूसी दुनिया हिन्दी के प्रेमियों की ओर से जासूसी दुनिया हिन्दी के पुराने अङ्कों की माँग शेष रहेगी।

वास्तव में यह क्रम हमने उन प्रेमियों के लिये आरम्भ किया है जिन्होंने ने यह अङ्क नहीं पढ़े हैं या जिनके सेट अपूर्ण रह गये हैं।

जिन प्रेमियों को अब भी किसी कारण वश यह अँक पढ़ने को

न मिले हों और वह इन्हें पढ़ना चाहते हों वह कार्यालय को अग्रिम मूल्य भेज कर रजिस्ट्री द्वारा मंगवा सकते हैं।

साधारण अंकों का मूल्य १ रुपया है और विशेषांको का मूल्य १ रुपया ५० पैसे हैं। मूल्य के साथ एक रुपया रजिस्ट्री खर्च भी आना आवश्यक है। १ से ४ अंक तक समाप्त हो गये हैं, शेष सब अंक मिल जायेंगे।

प्रस्तुत अंक "विकराल छाया" अत्यन्त सनसनी पूर्ण कहानी का नाम है, इस कहानी की भयंकरता देखकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। नखों की बीमारी से लोगों का मर जाना जितना आश्चर्य जनक है उतना ही भयंकर भी। इसके अतिरिक्त कब्रिस्तान की कब्रों से मुर्दों की हड्डियां निकालना कुछ कम भयंकर नहीं और फिर वह क्षण तो बहुत ही लोम हर्ष है जब विनोद और हमीद आपस ही में एक दूसरे पर गोलियां चलाते है। मगर इन भयंकरताओं के साथ वह स्त्री दिलचस्पी का बहुत ही अच्छा साधन बनी रहती है जो स्टेज की नर्तकी होने के साथ ही साथ हर एक से रोमान्स लड़ाने की आदी है।

२५ नवम्बर सन १९६८ ई० को जासूसी दुनिया प्रकाशन द्वारा प्रकाशित होने वाले महान विशेषांक **'रोशनी की दीवार"** को सुन्दर से सुन्दर बना कर प्रस्तुत करने में हम रात दिन लगे हुये हैं। हमारी पूरी कोशिश है कि हम इसे नियत तिथि पर आपके हाथों में पहुँचा दें।

अब्बास हुसैनी।

www.akfunworld.wordpress.com

विकराल छाया

लेखक :—इब्ने सफी बी० ए०

★कार में लाश

सूर्य के अस्त होते ही पूरे शहर पर धुन्ध छा गई और ठण्ड के कारण सड़क पर चलने वालों के दांत बजने लगे। हमीद को इसकी आशा नहीं थी कि सर्दी अकस्मात इतनी बढ़ जायेगी। वह दोपहर ही को आफिस से निकल भागा था। उसके शरीर पर एक हलके कपड़े का सूट था। और अब वह ठण्ड को भुलाने के लिये ठीक उसी भाव में अंग्रेजी का एक गीत गुन गुना रहा था जैसे सर्दी में कुत्ते के पिल्ले बेसुरेपन से च्यांव म्यांव करते हैं।

और मजा तो यह था कि वह घर भी जाना नहीं चाहता था। वास्तव में वह एक सुन्दर औरत की पीछा कर रहा था। लड़की की कार आगे थी और हमीद की टैक्सी पीछे। वह टैक्सी में बैठा हुआ सोच रहा था कि आखिर उस स्त्री में कौन सी ऐसी विशेषता थी जिसने उसे उसका पीछा करने पर विवश कर दिया था। हमीद कई दिन से उस स्त्री का पीछा कर रहा था किन्तु अभी तक ऐसा अवसर नहीं हाथ आया था कि जिससे लाभ उठाकर वह उसका परिचय प्राप्त कर सकता। बस वह स्त्री प्रति दिन उसे कहीं न कहीं दिखाई दे जाती और उसका पीछा करने लगता था। हमीद को

अपनी इस मूर्खता पर क्रोध भी आता किन्तु फिर भी वह पीछा करता रहता।

अचानक अगली मोटर एक झटके के साथ घूमी और उस सड़क पर फर्राटे भरने लगी जो नियाग्रा होटल की ओर जाती थी। हमीद सोचने लगा कि अगर वह नियाग्रा होटल ही जा रही है तो उसका सम्बन्ध अवश्य किसी दौलतमन्द घराने से होगा।

थोड़ी देर के बाद अगली कार नियाग्रा होटल के कम्पाउन्ड में प्रवेश कर रही थी। हमीद ने अपनी टैक्सी बाहर ही रुकवा दी। यद्यपि हमीद इस होटल में अनेकों बार आ चुका था, मगर इस समय वह स्त्री कुछ इस प्रकार उसके मस्तिष्क पर छाई हुई थी कि उसे यहां के नियम भी भूल गये थे।

स्त्री डाइनिंग हाल में पहुँच चुकी थी। उसके बाद हमीद ने भी अन्दर घुसना चाहा किन्तु बाहर खड़े हुये बिल कैप्टेन ने उसे रुकने का संकेत करते हुये एक नोटिस बोर्ड की ओर उंगली उठाई। बोर्ड पर लिखा था:—

"सन्ध्या के मनोरंजन के लिए इवनिंग सूट में आना आवश्यक था।"

"में ड्युटी पर पर हूँ...समझे?" हमीद झल्ला कर बोला।

"मैं भी ड्युटी ही पर हूँ हजूर!" बिल कैप्टेन ने कहा।

"मेरा कार्ड मैनेजर तक पहुँचा दो—" हमीद उसे घूर कर बोला।

"यह हो सकता है—" बिल कैप्टेन ने मुस्कुरा कर कहा, फिर एक बिल ब्वाय को बुलाकर उससे कहा।

"साहेब का कार्ड मैनेजर साहेब तक पहुँचा दो।"

हमीद ने कार्ड निकाल कर उसे दे दिया।

थोड़ी देर के बाद मैनेजर स्वयं द्वार पर उपस्थित था।

"ओह—कप्तान साहेब! मुझे दुःख है—" मैनेजर बोला "बिल

कैप्टेन का कोई दोष नहीं है और आप भी यहाँ के लिये नये नहीं हैं।"

"ठीक है!" हमीद बोला "मैं एक आदमी की निगरानी कर रहा हूँ और संयोग से मेरे विभाग का कानून किसी भी सूट की परवाह नहीं करता।

"क्या कोई खास बात है?" मैनेजर व्याकुल होकर बोला "आज यहाँ कर्नल साहेब भी उपस्थित हैं।"

"कौन!" हमीद चौंककर बोला "क्या विनोद कु...।"

"जी हां—" मैनेजर बीच ही में बोल पड़ा वह सदैव किसी खास काम ही के लिये यहां आते हैं।"

हमीद बौखला गया क्योंकि उसने मैंनेजर से बिल्कुल झूठी बात कही थी। वह सोचने लगा कि अगर विनोद को इस झूठ का पता चल गया तो विपत्ति आजायेगी—और दूसरी विपत्ति यह थी कि मैंनेजर से इस प्रकार की बात करने के बाद वह वापस भी नहीं जा सकता था।

"आप अन्दर चल सकते हैं मगर आपको कर्नल साहेब ही की मेज पर बैठना होगा क्योंकि सब मेजें भरी हुई हैं और वह अपनी मेज पर अकेले हैं।"

हमीद की बौखलाहट और बढ़ गई।

"बहुत अच्छा—" वह ज़ल्दी से बोला।

अन्दर पहुँचने पर एक वेटर हमीद को विनोद की मेज तक ले गया।

विनोद के सामने काफी की ट्रे रक्खी हुई थी और वह कुर्सी पर टेक लगाये सिगार पी रहा था। उसने हमीद को घूर कर देखा।

हमीद जल्दी से बैठता हुआ बोला।

"आप की तबियत तो ठीक है ना। मैंने सुना था..."

"तुम इस सूट में यहां कैसे ?" विनोद ने उसकी बात काट कर पूछा।

"ओह...मेरे लिये कहीं कोई प्रतिबन्ध नहीं। मैं महान व्यक्ति हूँ।"

विनोद कुछ नहीं बोला। बस उसे घूरता रहा।

हमीद ने थोड़ी देर के बाद कहा।

"मैं व्हिस्की पीऊँगा।

"आज मैंने ऐसे जूते पहिन रक्खे हैं जिन्हें उतारने में अधिक देर नहीं लगेगी।"

"क्या बगल में दबा कर भागने का इरादा है!" हमीद ने ढिठाई से पूछा।

विनोद कुछ नहीं बोला। उसने प्याली में काफी उँडेली और उसमें दूध डाले बिना चीनी मिलाने लगा।

हमीद उसकी ओर से नजर हटा कर चारों ओर देखने लगा मगर वह औरत उसे कहीं नही दिखाई पड़ी।

"आप यहां कैसे आये हैं ?" हमीद ने विनोद से पूछा।

"जैसे तुम आये हो—"

"क्या मतलब ?" हमीद चौंक पड़ा।

"मतलब यह है कि मैं भी उसी स्त्री के लिये यहां आया हुँ जिसका पीछा करते हुये तुम यहां तक आये हो।"

"क्या ? हमीद बौखला गया "क्या आप सचमुच जादूगर है।"

"नहीं...लेकिन मेरा अनुभव तुमसे अधिक है। इस बात का अनुमान मैंने तुम्हारे सूट से लगाया है।"

"सूट से !...भला वह किस प्रकार ?"

"अगर तुम घर ही से यहां आने का इरादा करके चले होते तो इवनिंग सूट पहिन कर आते क्योंकि तुम यहाँ का नियम जानते

थे—मगर तुमने शायद उसे कहीं मार्ग में देख लिया और अपनी गन्दी प्रकृति से विवश होकर उसके पीछे लग गये...है ना यही बात।"

हमीद कुछ नहीं बोला। विनोद ने सिगार सुलगाते हुये फिर कहा।

"लेकिन तुम यह नही जानते कि वह है कौन ?"

"यह आप किस प्रकार कह सकते हैं ?"

"तुम्हारे इस सूट ही के आधार पर...तुम उसे जानते होते तब भी इस सूट में इस समय यहां कभी न आते। तुम्हारे शरीर पर इवनिंग सूट होता।"

"मैं नहीं समझा।"

"अभी समझ जाओगे—" विनोद मुस्कुरा कर बोला।

"खैर...वह तो मैं समझ ही लूँगा !" हमीद ने व्यंग करते हुये कहा "लेकिन यह आपने कब से औरत के पीछे दौड़ना आरम्भ कर दिया है !"

"इसका उत्तर यह है कि मुझे भी कुछ औरतें दिलचस्पी लेने पर विवश कर देती हैं।"

"अच्छा—" हमीद चकित होकर बोला "तो वह औरत उन्हीं कुछ औरतों में से है ?"

"हां—बल्कि उससे भी अधिक।"

"तब तो आप इस बारे में अब मुझे किसी प्रकार से बुरा नहीं कह सकते—" हमीद चहककर बोला।

"क्यों ?"

"इसलिये कि जब ऐसा पाषाण हृदय वाला व्यक्ति औरतों के पीछे होटलों के चक्कर काट सकता है तो यह रसिया...भला कब चूकने वाला है !"

विनोद केवल मुस्कुराकर रह गया।

सहसा आर्केस्ट्रा की मधुर ध्वनि गूँज उठी और हमीद को याद

आ गया कि आज तो नियाग्रा में एक स्पेशल प्रोग्राम है। उसने प्रातः काल के समाचार पत्र में नियाग्रा होटल के आज के प्रोग्राम के बारे में पढ़ा था। इटली की सुप्रसिद्ध नर्तकी ग्रेटा अपनी कला स्टेज पर प्रस्तुत करने वाली थी।

हमीद की दृष्टि स्टेज की ओर उठी। स्टेज की झिलमिलाता हुआ पर्दा बीच से दो भागों में विभाजित होकर धीरे-धीरे दाहिने बायें सरक रहा था।

और हमीद की बौखलाहट उस समय सचमुच पागलपन तक पहुँच गई जब उसने उसी स्त्री को स्टेज पर खड़े देखा, जिसका पीछा करता हुआ वह यहाँ तक आया था। इस समय वह ऐसे वस्त्र में थी कि उसका सारा कोमल शरीर झलक रहा था। हमीद ने जल्दी से अपनी आँखों पर हाथ रख लिया।

"क्यों!" विनोद बोला "मैंने कहा था ना कि तुम उस औरत को नहीं जानते।"

"मुझे आश्चर्य है कि यही ग्रेटा है। मैं तो इसे हिन्दुस्तानी औरत समझे हुये था–" हमीद ने घृणात्मक स्वर में कहा "अच्छा अब मैं चला।"

"क्यों—बैठो—" विनोद बोला।

"आप मुझसे शपथ ले लीजिये जो मैं इसकी टाँगें देखने के अभीप्राय से आया हुँ —" हमीद ने मुँह बनाकर कहा "इस प्रकार का नंगा नृत्य देखकर मेरा दिल मतलाने लगता है—और फिर यह पश्चिमी नृत्य...तोबा तोबा...बिल्कुल ऐसा लगता है जैसे कोई भेड़ा हवा से लड़ रहा हो!"

विनोद कुछ नहीं बोला। वह नृत्य देखने के बजाय हाल की मेजों का निरीक्षण कर रहा था दूसरे लोगों ने खाना पीना छोड़ दिया था और इतनी लग्न के साथ स्टेज पर थिरकते हुये अर्धनग्न शरीर

को देख रहे थे मानो पैदा होने के बाद से अब तक इसी की प्रतीक्षा करते रहे हों।"

ग्रेटा नाचते-नाचते स्टेज से हाल के फर्श पर उतर आई। अब उसने एक इटैलियन गीत भी आरम्भ कर दी थी। वह नाचते-नाचते किसी मेज के पास रुककर लोगों को छेड़ती, और फिर नाचती हुई दूसरी ओर घूम जाती। उसके हाथ में एक रेशमी रूमाल था, जिसे वह तमाशा देखने वालों के चेहरों पर लहराती जाती थी।

"अगर वह इधर आ गई तो क्या होगा!" हमीद बड़-बड़ा उठा।

"तुम्हें बुखार क्यों चढ़ रहा है—" विनोद बोला।

"मुझे आपकी चिन्ता है। मेरा बुखार तो अब काफी पुराना हो चुका है।"

"मेरी चिन्ता मत करो—मैं प्रतिदिन ढाई सौ डन्ड और पाँच सौ बैठकें लगाता हूँ। दूसरे मैं भाजी खाने वाला नहीं बल्कि मांसहारी ठाकुर हूँ।

"इधर ही आ रही है—" हमीद व्यग्र हो उठा।

"अपनी नाक पर रूमाल रख लो—" विनोद ने हमीद से कहा और स्वयं भी जेब से रूमाल निकालकर इस प्रकार नाक पर रख लिया कि होंठ तक छिप गये।

हमीद के लिये यह परामर्श हास्यप्रद तो अवश्य था, किन्तु जब विनोद ने स्वयं अपनी नाक पर रूमाल रख लिया तो उसे भी रूमाल रखना पड़ा।

ग्रेटा इन दोनों के चेहरों पर भी अपना रेशमी रूमाल लहराती हुई चली गई।

"क्या बदबूदार थी!" हमीद ने मुँह पर से रूमाल हटाकर कहा।

विनोद मुस्कुरा उठा मगर कुछ बोला नहीं।

ग्रेटा दूर निकल गई थी। विनोद ने भी अपनी नाक पर रुमाल हटा लिया और ग्रेटा की ओर देखने लगा।

"आखिर यह क्या बात है!" हमीद ने पूछा।

"कैसी बात ?"

"क्या ग्रेटा के सौन्दर्य ने आपको प्रभावित किया है ?"

"अगर मैं सौन्दर्य की वास्तविक्ता को न जानता होता तो तुम यह कह सकते थे !"

"सौन्दर्य की वास्तविक्ता ! मैं नहीं समझा कि आप क्या कहना चाहते हैं।"

"क्या तुम किसी ऐसी औरत को पसन्द करोगे जिसकी गर्दन एक फिट लम्बी हो ?"

"तो क्या आप मुझे किसी ऊँटनी से प्रेम करने के लिये बाध्य करेंगे।"

"तुम्हारी बात का यह अर्थ हुआ कि तुम ऐसी औरत को पसन्द नहीं करोगे—" विनोद मुस्मुराकर बोला "है ना...मगर संसार में एक जाति ऐसी भी है, जिसके लोगों की दृष्टि में सबसे सुन्दर स्त्री वही है, जिसकी गर्दन सबसे लम्बी हो, इसलिये उस जाति वाले अपनी लड़कियों की गर्दनें बचपन ही से बढ़ाने का प्रयत्न करने लगते हैं और फलस्वरूप उस जाति की स्त्रियों की गर्दनें एक एक फिट लम्बी होती हैं। संसार में एक जाति ऐसी भी है जिसकी दृष्टि में सौन्दर्य चिपटी नाक पर निर्भर है। क्या तुम किसी नक चिपटी स्त्री को पसन्द करोगे !"

"आप कहना क्या चाहते हैं !"

"यही कि सौन्दर्य केवल बकवास है। न कोई सुन्दर है न कोई कुरूप ! जिस वस्तु की कोई सीमा ही नियत न हो उसका वर्णन ही मैं बेकार समझता हूँ।"

"आपका तर्क है तो जोरदार मगर इस प्रकार तो नहीं लिया जा सकता ।"

"तो क्या मैं मर गया हूँ ?"

"हां ! जिसकी अनुभूतियाँ सौन्दर्य को कोई स्थान नहीं दे सकती उसे तो मैं मुर्दा ही समझता हूँ—" हमीद बोला ।

विनोद खिल खिलाकर हँस पड़ा ।

"अगर तुम्हारे तर्क को सत्य मान लिया जाये तब भी मैं मरा नहीं हूँ जीवित हूँ, क्योंकि मुझे अपनी आयर डियल टेरियर कुतिया के पिल्ले बड़े सुन्दर मालुम होते हैं और मैं उन्हें घंटों अपलक देखता रहता हूँ ।"

हमीद इस मर्म वितर्क से घबड़ाकर ग्रेटा को देखने लगा, जो अब स्टेज पर वापस चली गई थी, और स्टेज के पर्दे के दोनों भाग धीरे-धीरे आपस में मिल जाने के लिये खिसक रहे थे ।

दूसरे ही क्षण आर्कस्ट्रा शान्त हो गया और हाल तालियों से गूँज उठा ।

"आपने बेकार बातों में उलझा रक्खा और असली बात न बता के—" हमीद ने कहा "आखिर नाक पर रूमाल रखने का क्या अर्थ था ?"

"हमीद साहेब ! यह एक लम्बी कहानी है, अगर अभी न पूछिये तो अच्छा है ।"

"नहीं पूछूँगा—" हमीद ने मुंह बनाकर कहा ।

"तुम जानते हो कि होटलों में बैठकर समय नष्ट करना मुझे पसन्द नहीं ।"

"मुझे कुछ भी जानने की आवश्यकता नहीं—" हमीद उसी भाव में बोला ।

"कुछ भी हो, लेकिन मैं तुम्हें ग्रेटा से दूर रहने ही का परामर्श दूँगा ।"

akfunworld

"क्या वह सचमुच बहुत बदबूदार है !"

"मैं इस समय बिल्कुल गम्भीर हूँ हमीद साहेब।"

"आखिर आप उस बेचारी के पीछे क्यों पड़ गये हैं ?"

"सम्भव है कि कल तक इस समस्या पर प्रकाश डालने योग्य मैं हो सकूँ—" विनोद कुछ सोचता हुआ बोला।

"कैसी समस्या ?"

"कल ही बताऊँगा। आज की रात कुछ और मालूम होने की सम्भावना है।"

थोड़ी देर के बाद फिर आर्केस्ट्रा बजने लगा। पर्दा हटा और इस बार ग्रेटा जब स्टेज पर आई तो उसके शरीर पर पहले से भी कम कपड़े थे। नृत्य आरम्भ हो गया। इस बार न तो ग्रेटा ने कोई गीत ही छेड़ा और न स्टेज से नीचे उतरी। नृत्य भी अपने ढंग का निराला था। कदाचित ग्रेटा ने कोई नवीनता उत्पन्न की थी।

लोग अपलक ग्रेटा के थिरकते हुये शरीर को देख रहे थे कि सहसा एक आदमी बौखला कर अपनी कुर्सी से उठा और मेज उलट गई। लोग चौंककर उसकी ओर देखने लगे। वह व्यक्ति पागलों के समान द्वार की ओर भाग रहा था। लोगों ने बड़े आश्चर्य के साथ उसे भागते हुये देखा, मगर अपने स्थान से हिले नहीं और पुनः नृत्य देखने में लीन हो गये। उस आदमी को भागते हुये देखकर होटल के कर्मचारी घबड़ा उठे।

विनोद बड़ी तेजी से अपनी कुर्सी से उठा और हमीद को अपने पीछे आने का संकेत करता हुआ दरवाजे की ओर बढ़ा।

हाल से उठकर भागने वाला गैरेज की ओर भागा जा रहा था। गैरेज के समीप पहुँचकर उसने अपने ड्राइवर को आवाज दी।

विनोद ने भी गैरेज से अपनी केडीलाक निकाली और उस भागने वाले की कार का पीछा करने लगा।

सड़क सुनसान पड़ी थी। नियाग्रा होटल वास्तव में शहर के

बाहर एक सुहावने स्थान पर स्थित था, इसलिये सड़क पर ट्रैफिक की पंक्तियाँ नहीं लगने पाती थीं, मगर हमीद को इस पीछा करने का मतलब समझ में नहीं आ रहा था, क्योंकि दोनों कारों के मध्य में केवल दस गज से अधिक फासिला नहीं था।

अचानक विनोद ने एक भयानक चीख सुनी और साथ ही अगली कार रुक गई। अगर विनोद ने पूरे ब्रेक न लगाये होते तो केडीलाक अवश्य अगली कार से टकरा जाती है।

विनोद नीचे उतर कर अगली कार की ओर झपटा। अगली कार का ड्राइवर भी बौखला कर कार से कूद पड़ा—और फिर वह चिल्ला उठा।

"अरे!... यह साहिब को क्या हो गया!"

मौत की बीमारी

हमीद भी केडीलाक से नीचे उतर आया।

विनोद ने टार्च जलाकर अगली कार के अन्दर देखा। उसकी पिछली सीट पर उसी आदमी की लाश पड़ी हुई थी जो होटल से निकल कर भागा था। यह अधेड़ अवस्था का एक सुन्दर तथा स्वस्थ पुरुष था। उसके चौड़े ललाट को देखकर अनुमान होता था कि उसने अपने जीवन में बड़े बड़े काम किये होंगे।

ड्राइवर पास ही खड़ा थर थर कांप रहा था। वह जब भी बोलने की चेष्टा करता। उसकी जबान लड़खड़ा जाती।

विनोद टार्च के प्रकाश में विशेष रूप से मरने वाले के नखों का परीक्षण कर रहा था, जो उँगलियों का मांस छोड़कर लगभग चौथाई इंच ऊपर उठ गये थे। हाथों और पैरों के सारे नखों की वही दशा थी।

aKrunworld

"ओह ! यह नखों वाली बीमारी !" हमीद ने कहा और इस प्रकार घबड़ाकर पीछे हटा जैसे उसे भी इस बीमारी के लग जाने की सम्भावना हो।

"अरे बाप रे बाप ! यह नखों वाली बीमारी !" ड्राइवर भयभीत होकर बोला।

"डरो नहीं...यह छूत की बीमारी नहीं है—" विनोद बोला "यह लाश सीधे अस्पताल जायेगी।"

"घर...वाले...।" ड्राइवर हकलाया !

"चिन्ता मत करो। इसका आरोप तुम पर नहीं लगेगा। हमारा सम्बन्ध पुलिस से है।"

"मगर साहब ! हमारे बाल बच्चे।" ड्राइवर फिर डर कर बोला।

"डरो मत...कह दिया ना कि यह छूत की बीमारी नहीं है—" विनोद बोला "हम भी तुम्हारे साथ ही चलेंगे।"

विवश होकर ड्राइवर अपनी सीट पर बैठा। विनोद और हमीद भी केडीलाक में बैठ गये और दोनों कारें चल पड़ीं।

शहर में यह आज पांचवां केस था। इससे पहले इसी प्रकार की चार मौतें और भी हो चुकी थीं। जिस आदमी को यह बीमारी होती थी वह सबसे पहले अपने नखों की जड़ों में एक मन्द सी जलन महसूस करते थे। फिर यह जलन एक अत्यन्त ही कष्ट दायक पीड़ा में परिवर्तित हो जाती थी और उसके बाद नख उँगलियों का माँस छोड़ कर ऊपर उठना आरम्भ करते थे—और फिर देखते ही देखते आदमी मर जाता था।

इस नई और विचित्र बीमारी के प्रति यहाँ की मेडिकल सुसाइटी ने निरीक्षण का काम आरम्भ कर दिया था, किन्तु अभी तक किसी परिणाम पर नहीं पहुँची थी।

यद्यपि इस नई बीमारी का प्रभाव अभी तक इसी शहर में था, और यहीं के लोग इस बीमारी से मरे भी थे, किन्तु सारे देश में इस बीमारी का नाम सुनकर आतंक छा गया था।

हमीद इस समय इस प्रकार मौन था मानो उसने यमराज की सूरत देख ली हो।

"क्या आप इसीलिये—" वह थोड़ी देर के बाद बोला, किन्तु वाक्य पूरा होने से पहले ही उसके जबान भय के कारण रुक गई।

"हाँ—मेरा आज रात का अनुभव सफल रहा।"

"आपका अनुभव!" हमीद चकित होकर बोला।

"तुम गलत समझ रहे हो। मेरे अनुभव का यह अर्थ नहीं कि यह आदमी मेरे अनुभव का शिकार हुआ है।"

"फिर?"

"इसी बीमारी के कारण जो चार आदमी मर चुके हैं, उसे तुम जानते ही होगे?"

"हां—लेकिन।"

"सुनते जाओ—" विनोद बोला "इस बीमारी के कारण जो आदमी सबसे पहले मरा था वह एक टी पार्टी में मरा था—और ग्रेटा वहां उपस्थित थी।"

"तो क्या आप?"

"बीच में मत बोलो—हाँ—मैं इसे कोई ईश्वरी कोप नहीं समझता हूँ और न कोई ऐसी बीमारी समझता हूँ जो प्राकृतिक दशा के अन्तर्गत आई हो—दूसरा आदमी एक मीटिंग में इस बीमारी का शिकार हुआ। ग्रेटा वहाँ भी थी। तीसरा आदमी सागर के किनारे इसी बीमारी से मरा जो अपने साथियों के साथ पिकनिक पर गया हुआ था। उस पार्टी में भी ग्रेटा थी। चौथा आदमी होटल की फाँस में मरा था, और ग्रेटा ने ही उसे अपनी कार में अस्पताल

www.freehindinovel.blogspot.com

तक पहुँचाया था। और यह पांचवां आदमी—तुमने अपनी आंखों से देखा है।"

"तो क्या ग्रेटा ही इसकी उत्तरदायी है।"

"मैं यह तो नहीं कहा। मेरे कहने का तो यह अर्थ था कि ग्रेटा मरने वालों के समीप किसी न किसी रूप में अवश्य रही है। सम्भव है यह संयोग ही हो।

"अभी तक तो इस विचित्र बीमारी का कारण न मालूम हो सका।"

"हां—लेकिन आशा है कि अब शीघ्र ही मालूम हो जायेगा—इससे पहले वाली लाशें देर में अनुभव शाला तक पहुँची थीं, और इसे मैं सीधे यहीं ले जा रहा हूँ। कुछ विष इस प्रकार के भी होते है जो पोस्ट मार्टम में देर हो जाने के कारण अपना निशान नहीं मिलने देते।"

"विष!" हमीद चकित होकर बोला?

"हां, सम्भव है कि यह किसी प्रकार के विष का ही प्रभाव हो।

"आपने यहाँ नाक पर रुमाल क्यों रख लिया था?"

"केवल यह देखने के लिये कि ग्रेटा पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है।

"तो फिर आपने क्या देखा!"

"कुछ भी नहीं—वह मुझे नाक पर रुमाल रखते देखकर बड़ी तेजी से दूसरी ओर मुड़ गई थी।"

"क्या आप इस मरने वाले को जानते हैं! सूरत शक्ल से भी कोई सभ्य ही मालूम होता है।"

'सभ्य और प्रतिष्ठित दोनों—एक महान पुरुष आज हम लोगों से अलग हो गया। यह देश का एक बड़ा वैज्ञानिक डाक्टर शारदा था—ऐटमी परीक्षण कमेटी का प्रधान।

"ओह !" हमीद अफसोस से हाथ मलने लगा।

"और इससे पहले मरने वाले उन चारों की याद करो। उनमें एक सफल इन्जीनियर था जिसने हाल ही में एक ऐसा पावर हाउस स्थापित करने की स्कीम बनाने का कार्य आरम्भ किया था, जिससे एक पूरे प्रान्त के लिये बिजली पैदा की जाती। दूसरा एक फौजी आफिसर था जो युद्ध कला में निपुण था। तीसरा मिलेट्री सिक्रेट सर्विस का सबसे बुद्धिमान आदमी था और चौथा...कीटाणु का विशेषज्ञ।"

"मैंने आज तक इन बातों पर ध्यान ही नहीं दिया था—" हमीद धीरे से बोला।

"केवल इसी वस्तु ने मेरे हृदय में यह सन्देह उत्पन्न किया कि सम्भव है कोई षढ़यन्त्र रचा जा रहा हो। अगर मरने वालो में एक भी साधारण पुरुष होता तो मुझे भी इसकी चिन्ता न होती और मैं भी इस बीमारी को दैविक प्रकोप ही समझ लेता।"

"तो आप कई दिनों से इस चक्कर में है ?"

"हाँ—लेकिन मैंने अब तक ग्रेटा ही के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की है।"

हमीद कुछ कहने ही वाला था कि अगली कार सिविल अस्पताल के कम्पाउन्ड में दाखिल हो गई।

सिविल अस्पताल का इन्चार्ज स्वयं भी इस बीमारी से सम्बन्धित परीक्षण कमेटी का एक सदस्य था, अतः उसने तत्काल ही लाश को अनुभव शाला में पहुँच कर कमेटी के दूसरे सदस्यों को फोन करना आरम्भ कर दिया।

विनोद वहाँ नहीं ठहरा। वह हमीद को लेकर फिर नियाग्रा होटल चला आया। वहाँ के वातावरण में परिवर्तन हो गया था। नृत्य समाप्त हो चुका था।

विनोद और हमीद होटल के मैनेजर के कमरे की ओर चले। मैनेजर ने बड़ी व्याकुलता से उनका स्वागत किया।

"मुझे कुछ पूछना नहीं चाहिये—" मैनेजर ने हमीद की ओर देखते हुये कहा "क्या आप लोग डाक्टर शारदा की निगरानी कर रहे थे ? लेकिन उनका इस प्रकार उठकर भागना मेरी समझ में नहीं आया।"

विनोद कुछ क्षण तक मैनेजर के चेहरे को ध्यान से देखता रहा फिर बोला।

"डाक्टर शारदा मर गये।"

"क्या !" मैनेजर उछल कर खड़ा हो गया।

विनोद ने उसे बैठने का संकेत करते हुये कहा "पहले उनके नखों में जलन हुई, फिर वह असह्य वेदना में परिवर्तित हो गई।"

"नखों की बीमारी !" मैनेजर काँपता हुआ बोला "यहाँ—मेरे होटल में !"

"मैं यह मालूम करना चाहता हूँ कि उनकी मेज पर क्या क्या था ?" विनोद बोला।

"ओह...मुझे दुख है। सफाई के बाद सब कुछ फेंकवा दिया गया !"

"लेकिन उस मेज का वेटर वस्तुओं के सम्बन्ध में तो बता ही सकेगा।"

अवश्य...अवश्य—" मैनेजर ने मेज पर रक्खी हुई घन्टी दबाते हुये कहा "मैं उसे बुलवा रहा हूँ।"

विनोद ने फिर ग्रेटा की बात छेड़ दी।

"ग्रेटा बड़ी अच्छी नर्तकी है—" विनोद बोला "मेरा विचार है कि उसके प्रोगाम काफी दिनों तक यहाँ होते रहेंगे ?"

"जी नहीं—केवल तीन प्रोग्रामों का कन्ट्रैक्ट है। आज पहला प्रोग्राम था।"

"मगर मेरा विचार है कि अब वह इतनी अच्छी नर्तकी भी नहीं है कि नियाग्रा जैसे शानदार होटल के लिये उचित हो—क्या किसी ने उसकी सिफारिश की थी ?"

"जी हाँ—बस यही समझ लीजिये—" मैनेजर बोला।

"डाक्टर शारदा महान व्यक्ति था—" विनोद ने बात बदल दी।

"जी हाँ! मुझे अत्यन्त दुख है। कदाचित यह होटल भी अब बदनाम हो जाये। होटल डी फ्रान्स की मिसाल मेरे सामने है।"

"कदाचित डाक्टर शारदा आपके पुराने ग्राहक थे !"

"जी हाँ...आज के प्रोग्राम में हमने उन्हें विशेष रूप से आमंत्रित किया था।"

"क्यों ! क्या ग्रेटा से उन्हें काफी दिलचस्पी थी !"

"पता नहीं।"

"फिर ?"

"बात यह है कि ऐसे अवसरों पर हम अपने पुराने तथा स्थायी ग्राहकों को विलेष रूप से आमन्त्रित करते हैं। यह हमारा पुरातन नियम है।"

"लेकिन यह मानना पड़ेगा कि ग्रेटा अत्यन्त सुन्दर है—" विनोद बोला।

"जी हाँ—इटैलियन स्त्रियाँ प्रायः बड़ी सुन्दर होती हैं।"

"जिसने यहाँ के प्रोग्रामों के लिये ग्रेटा की सिफारिस की होगी वह वास्तव में बड़ा ही भाग्यशाली होगा !"

"क्यों ? मैं नहीं समझा—" मैनेजर बोला।

"यह भी कोई पूछने की बात है !" विनोद मुस्करा कर बोला "यह प्रत्यक्ष है कि वह ग्रेटा के बहुत ही समीप होगा। मुझे तो उसके भाग्य पर...।"

"अगर आप सिफारिश करने वाले को जानते होते तो कभी ऐसा

न कहते—" मैनेजर ने विनोद की बात काटते हुये कहा।

"ओह! तो क्या वह कोई स्त्री है?"

"जी नहीं—एक अत्यन्त शुष्क प्रकृति का आदमी है। क्या आप प्रोफेसर राक को जानते हैं?

"कौन वही जर्मन?"

हाँ!"

"उसे तो मैं अच्छी तरह जानता हूँ।"

"ग्रेटा की सिफारिश उसी ने की थी।"

"मुझे अत्यन्त आश्चर्य है—" विनोद ने कहा, फिर थोड़ी देर रुक कर बोला "क्या आपका उससे निजी सम्बन्ध है?"

"जी हां! मैं विद्वानों का आदर करता हूँ और वैज्ञानिकों से तो मुझे हार्दिक प्रेम है।"

"होना भी यही चाहिये!" विनोद मुस्करा कर बोला "आप स्वयं भी तो काफी पढ़े लिखे हैं।"

"अरे कहां साहेब! अभी तो विद्या के सागर की एक बूंद भी मेरे अधरों तक नहीं पहुँची।"

"यह आपकी महानता है जो अगाध पंडित होते हुये भी आप अपने को तुच्छ समझ रहे हैं—" विनोद मुस्कराकर बोला "मगर आपको प्रोफेसर राक की सिफारिश पर आश्चर्य तो अवश्य हुआ होगा!"

"क्यों नहीं...लेकिन मैंने इस सम्बन्ध में उससे कुछ पूछना उचित नहीं समझा। ग्रेटा वैसे भी जानता में पसन्द की जा रही थी, सम्भव था कि कुछ दिनों बाद मैं स्वयं उससे कन्ट्रैक्ट कर लेता.... ओह...यह सब तो ठीक है मगर डाक्टर शारदा की मृत्यु! कर्नल साहेब! मैं अब क्या करूँ! मुझे कुछ उचित परामर्श दीजिये। हमारा होटल अवश्य बदनाम हो जायेगा और सम्भव है कि होटल डी फ्रान्स के समान यहां भी उल्लू बोलने लगें।

"मुझे भी दुख है कि यह दुर्घटना नियाग्रा होटल में हुई—" विनोद बोला।

"क्या यह सम्भव नहीं नियाग्रा का नाम ही न लिया जाये। मैनेजर ने पूछा।

"यह कैसे हो सकता है।"

"अगर आप चाहें तो सब कुछ हो सकता है। आप ही सोचिये कि अगर नियाग्रा की बदनामी हुई तो परिणाम क्या होगा।"

"मैं जानता हूँ कि बहुत बड़ी हानि होगा, लेकिन विवशता है अगर मामिला केवल उसके ड्राइवर तक ही होता तो किसी प्रकार बात छिपाई जा सकती थी। लेकिन यहां तो डाक्टर शारदा को उठ कर भागते हुये पूरे होटल के लोगों ने देखा था। अब आप ही सोचिये कि भला किस किसकी जबान बन्द की जा सकती है।"

"तो...तो फिर मैं क्या करूँ—" मैनेजर दोनों हाथों से अपना मुख छिपा कर लम्बी लम्बी सांसे लेने लगा।

इतने में वह वेटर आ गया जिसके बुलाने के लिये मैनेजर ने घन्टी बजाई थी।

विनोद ने उसे एक नजर देखा और उनके बाद उससे पूछा।

"डाक्टर शारदा की मेज पर तुम थे!"

"जी हां।"

"उनकी मेज पर क्या क्या था!"

"केवल व्हिस्की और सोडा।"

"कुछ और?

"जी नहीं—केवल यही।"

"खुली हुई बोतल से लाये थे!"

"जी नहीं। वह कभी खुली हुई बोतल से नहीं लेते थे...सदैव नई बोतल से लेते हैं और बोतल अपने हाथ से खोलते हैं।"

सोडा तुमने खोला था।"

"जी नहीं—उस मेज़ पर साइफन था।"

"केवल एक मिनट—" मैनेजर बीच में बोल उठा "यहाँ मैं आपको यह बता देना आवश्यक समझता हूँ कि साइफन केवल उन्हीं लोगों की मेजों पर रखा जाता है जो पूरी बोतल खरीदते हैं।"

"ओह" " विनोद ने कहा और फिर उस वेटर से पूछा।

"क्या तुम वह साइफन तलाश कर सकोगे ?" (साइफन काग खोलने वाले औजार को कहते हैं)।"

"हजूर ! वष तो टूट गया था। मेज उलट गई थी ना—" वेटर बोला "मगर हुजूर ! मैंने इससे पहले डाक्टर साहेब को इतने नशे में नहीं देखा था।"

"साइफन टूट गया ?" विनोद ने मैनेजर की ओर देखकर फिर पूछा।

"जी हाँ" "बात यह है कि हमारे साइफन अधिक दबीज शीशों के नहीं हैं—" मैनेजर ने उत्तर दिया।

"तब तोबोतल और गिलास भी टूट गये होंगे ?"

"जी हाँ—" वेटर बोला।

"अच्छा—अब तुम जा सकते हो।"

वेटर चला गया।

अचानक मैनेजर का मुख पीला पड़ गया। वह कुछ सोच रहा था। उसकी निगाहें किसी दूसरी ओर थीं और विनोद उसके चेहरे के उतार चढ़ाव को बड़े ध्यान से देख रहा था।

अचानक मैनेजर विनोद की ओर मुड़ा और उससे आंख मिलते ही झिझक पड़ा विनोद की निगाहें उसे अपने शरीर के अन्दर चुभती हुई मालूम पड़ रही थीं।

"आप साइफन के बारे में क्यो पूछ रहे हैं ?" मैनेजर ने पूछा।

"सम्भव है कि उस सोडे में ही कीटाणु रहे हों।"

"सोडे में कीटाणु ?" मैनेजर ने चकित होकर पूछा।

"जी हां--आपको आश्चर्य क्यों हो रहा है ?"

"इसलिये कि सोडा तो बड़ी तेज वस्तु है। भला उसमें कीटाणु कैसे जीवित रह सकते हैं।"

"चूँकि आप कीटाणुओं के बारे में विशेष जानकारी नहीं रखते इसीलिये ऐसा कह रहे हैं। बहुत से कीटाणु ऐसे हैं जो आग के अतिरिक्त और किसी वस्तु से नहीं मरते...।" विनोद ने कहा और फिर हमीद के कन्धे पर हाथ रखता हुआ बोला।

"आओ चलें।"

सहसा उसी समय एक आदमी दरवाजा खोलकर अन्दर दाखिल हुआ, और हमीद को ऐसा लगा मानो विनोद ने उठने का विचार छोड़ दिया हो।

—प्रोफेसर राक

हमीद ने आने वाले को घूर कर देखा। यह एक नाटे कद का विदेशी था। गाल पिचके हुये। नासिका पतली और तोते के चोंच के समान अधरों पर झुकी हुई थी। गालों की हड्डियां इतनी उभरी हुई थीं कि उसका चेहरा भद्दा हो गया था। छोटी छोटी चमकीली आंखों के नीचे गढ़े पड़े हुये थे। यद्यपि उसने सूट पहिन रक्खा था, किन्तु वह बहुत पुराना और गन्दा था। मालूम होता था मानो महीनों से उस पर प्रेसिंग नहीं हुई हो। गले में टाई नहीं थी। मैनेजर उसे देखकर खड़ा हो गया, मगर विनोद और हमीद बैठे ही रहे।

"मेरी पुस्तकें ?" आने वाले ने अंग्रेजी में कहा। उसका स्वर बड़ा शुष्क स्वर था।

akfunworld

"क्षमा कीजियेगा राक ! मैं भिजवाना—।"

"भूल गये थे—" उसने वाक्य पूरा करते हुये कहा "बेकार शब्दों का प्रयोग करके समय नष्ट न किया करो—पुस्तकें !"

"ओह...ही ही ही—" मैनेजर ने हँसते हुके अपनी कुर्सी खिसकाई और पीछे रक्खी हुई आलमारी खोल कर तीन पुस्तकें निकालीं और उन्हें राक की ओर बढ़ा दिया।

राक ने पुस्तकें ले लीं और बड़ी तेजी से दरवाजे की ओर घूम गया।

मैनेज़र कुर्सी पर बैठ कर हँसता हुआ बोला "देखा कर्नल साहेब आपने ! वैज्ञानिक लोग बातचीत भी संक्षेप ही में करना चाहते हैं।"

"यही प्रोफेसर राक था ना ?" विनोद ने मैनेजर से पूछा।

"जी हां !"

विनोद मुस्कराता हुआ उठ गया और मैनेजर से हाथ मिलाकर कमरे से निकल गया।

"मैं तो ठण्ड के मारे रास्ते ही में मर जाऊँगा—" बाहर निकलने के बाद हमीद ने कहा।

"मेरा अलस्टर केडीलाक में है—पहिन लो—" विनोद बोला, फिर कुछ देर रुक कर कहने लगा।

"तुमने राक को देखा ?"

"जी हाँ—बड़ी अच्छी तरह।"

"क्या इस प्रकार के आदमी स्त्रियों में दिलचस्पी ले सकते हैं ?"

"आपके अतिरिक्त और हर प्रकार का आदमी औरतों में दिल-चस्पी ले सकता है—लेकिन अब यहाँ से भागिये, नहीं तो अगर हमारे नाखून भी खड़े हो गये तो विपत्ति ही आ जायेगी।"

वह केडीलाक में बैठने ही वाले थे कि किसी ने पीछे से विनोद के कन्धे पर हाथ रख दिया। बिनोद चौंक कर मुड़ा। प्रोफेसर

राक उसके सामने खड़ा बड़े बिचित्र ढङ्ग से मुस्कुरा रहा था।

"कदाचित आप मेरे सम्बन्ध में बातें कर रहे थे—" उसने कहा।

"हाँ, प्रोफेसर! मैं तुम्हारे भाग्य की सराहना कर रहा था—" विनोद भी मुस्कराने लगा।

"क्यों?"

"इसलिये कि ग्रेटा ऐसी सुन्दर स्त्री तुम्हारी मित्र है!"

"कौन ग्रेटा?...मैं किसी ग्रेटा को नहीं जानता।"

"अरे वही ग्रेटा...जिसका यहां आज प्रोग्राम था।"

"ओह—लेकिन वह मेरी मित्र तो नहीं है।"

"तो फिर हमें भ्रम हुआ होगा। सम्भव है मैनेजर ने किसी दूसरे का नाम लिया हो।"

"सुनो!" राक झुँझला कर बोला" मुझे तुम सब से घृणा है। तुम लोग जो अपनी खोपड़ियों में चुहियों का सा मस्तिष्क रखते हो—मुझे नहीं समझ सकते।"

"तुम्हारी बात मेरी समझ में नहीं आई—" विनोद बोला।

"तुम लोग मुझ पर बोली बोलते हो, लेकिन मैं तुम लोगों को अपने पैर के नीचे लगी हुई मिट्टी के बराबर भी नहीं समझता... समझे।"

"बकवास बन्द करो कछुये के बच्चे!" हमीद ने उसकी गर्दन की ओर हाथ बढ़ाया ही था कि विनोद ने उसे धक्का देकर पीछे हटा दिया, फिर प्रोफेसर राक से नम्रतापूर्वक कहा।

"तुम ठीक कहते हो प्रोफेसर—अच्छा विदा।"

उसने कैडी का दरवाजा खोलकर हमीद को पिछली सीट पर बैठने के लिये कहा और स्वयं आगे बैठ गया।

"क्या शहर की ओर जाओगे?" सहसा राक ने स्वर बदल कर पूछा।

"हाँ।"

"तो मुझे राजर्स स्ट्रीट तक ले चलो।"

"अवश्य...अवश्य...इधर मेरे पास आ जाओ—" विनोद ने दरवाजा खोलते हुये कहा।

राक बैठ गया। केडीलाक स्टार्ट हो गई। थोड़ी देर के बाद राक ने पूछा।

"जानते हो कि मैं तुम्हारे साथ क्यों जा रहा हूँ?"

"कदाचित तुम हम लोगों को पसन्द करने लगे हो—" विनोद मुस्कुराकर बोला।

"तुम्हें और मैं पसन्द करूँगा!" राक ने घृणा के साथ मुँह बनाकर कहा "मुझे वास्तव में तुम्हारे साथी की बात का उत्तर देना है, जिसने मुझे कछुये का बच्चा कहा था।"

"अवश्य अवश्य...वह है भी बड़ा असभ्य..." विनोद ने कहा।

"क्या कहा बे?" हमीद पीछे से जोर से बोला।

"हमीद जबान बन्द रक्खो..." विनोद ने उसे डाँटा।

राक फिर विनोद से अंग्रेजी में बात करने लगा।

"यद्यपि तुम्हारे असभ्य साथी ने मेरे अपमान के विचार से मुझे कछुये का बच्चा कहा था, किन्तु वह बिल्कुल मूर्ख है। तुम कछुये के बच्चे की पीठ पर अपनी पूरी शक्ति से खड़े हो जाओ। लेकिन उसका कुछ नहीं बिगड़ेगा...और विपरीत इसके केचुये का बच्चा चुटकियों में मसला जा सकता है। बस अब गाड़ी रोक दो।"

"क्यों?"

"मैं उतरूँगा...मुझे इतना ही कहना था।"

"यहां इस उजाड़ स्थान में उतर कर क्या करोगे?"

"तो क्या तुम यह समझते हो कि मैं तुम जैसे गधों का एहसान लूंगा..." राक बिगड़ गया। विनोद ने हँसकर केडी रोक दी। राक

aksunworld

केडी से उतर कर सड़क के किनारे किनारे चलने लगा। वह भी शहर ही की ओर जा रहा था।

"उस्ताद! आप पीछे आजाइये! गाड़ी मैं चलाऊँगा।"

"क्यों...नहीं, समय नष्ट मत करो—" विनोद झुंझला गया।

"कभी तो मेरी बात मान लिया कीजिये।"

न जाने विनोद क्या सोचकर इस पर राजी हो गया। वह पिछली सीट पर आ गया और हमीद कार चलाने लगा।

अब केडीलाक पैदल चलते हुये प्रो० राक के साथ धीरे-धीरे चलने लगी।

"यह क्या असभ्यता है—" राक झल्ला कर चीखा "आगे बढ़ाओ।"

"तुम खुद आगे बढ़ जाओ—" हमीद ने खिड़की से सर बाहर निकाल कर कहा।

राक बड़बड़ाता हुआ आगे बढ़ रहा था और उसी के साथ-साथ केडी भी आगे बढ़ती रही। विनोद मौन था। उसको चुप देखकर हमीद को भी आश्चर्य हो रहा था।

अचानक प्रो० राक ने दौड़ना आरम्भ कर दिया हमीद ने भी गति इतनी बढ़ा दी कि केडी उसके साथ ही साथ रहे। राक उन्हें गंदी गंदी गलियाँ देता हुआ आगे भाग रहा था।

"क्यों समय नष्ट कर रहे हो हमीद!" विनोद बड़बड़ाया।

"मैं इस उल्लू के पट्ठे को आकाश पाताल का अन्तर समझा रहा हूँ।"

एक स्थान पर प्रो० राक खड़ा हो गया। केडी आगे निकल आई। हमीद ने उसे रोककर बैक करना आरम्भ किया और केडी फिर उसी स्थान पर आ गई जहाँ प्रो० राक खड़ा गालियाँ बक रहा था।

सहसा वह पीछे की ओर भागा। हमीद भी केडी बैक करने ही जा रहा था कि कार पर पत्थर पड़ने लगे।

"क्या कर रहे हो हमीद !" विनोद ने उसे डांटा "गाड़ी नष्ट करावोगे क्या !"

हमीद ने गाड़ी आगे बढ़ाई और फिर शहर की ओर चल पड़ा।

"अगर गाड़ी खराब हुई होगी तो मैं तुम से समझ लूँगा..." विनोद ने हमीद से कहा।

"आखिर यह आदमी है किस किस्म का ?" हमीद ने पूछा।

"क्या अब भी उसकी किस्म तुम्हारी समझ में नहीं आई ?"

"नहीं—मैं नहीं समझ सका।"

"बुद्धि जब अधिक बढ़ जाती है तो वह आदमी को बालक बना देती है।"

"तो क्या वह वास्तव में वैज्ञानिक है।"

"बहुत बड़ा विद्वान है हमीद साहेब ! उससे टक्कर लेने वाले

"राक—बड़ा विचित्र नाम है उसका।"

विनोद कुछ नहीं बोला। थोड़ी देर के बाद कहने लगा।

"उस पागल ने ग्रेटा की सिफारिश की थी ! यह बात किसी प्रकार से मेरी समझ में नहीं आ रही है।"

"मैं आप से सच्ची बात कहता हूँ कि जो जरा सा भी मर्द होगा वह औरतों से अवश्य दिलचस्पी लेगा।"

"ठीक कहते हो—" विनोद बड़बड़ा कर चुप हो गया।

"आप साइफन क्यों खोज रहे थे।"

"मेरा सन्देह है कि जो कुछ भी था वह सोडे ही में था। बोतल तो उसने स्वयं खोली थी।"

"मैं आप से निवेदन करता हूँ कि समय नष्ट न कीजिये। मुझे वह किसी प्रकार की बीमारी ही मालूम पड़ती है। आप की सन्देह

करने वाली प्राकृति तो अब आपके लिये भी एक विपत्ति बन गई है !"

"हूँ...इस परामर्श के लिये धन्यवाद !"

विनोद फिर चुप हो गया।

हमीद शीघ्र अति शीघ्र घर पहुँचना चाहता था। मगर विनोद ने उसे होटल डी फ्रान्स चलने की आज्ञा दी।

"कमाल है—हमीद भन्ना कर बोला "ठण्ड के कारण जान निकली जा रही है।"

"मैंने तो तुमसे कहा था कि मेरा अलस्टर पहिन लो।"

"क्या अलस्टर से भूख भी मिट जायेगी !"

"अरे बाबा...वहीं भोजन कर लेना—बस !"

"क्या होटल डी फ्रान्स में ?" हमीद ने चकित होकर कहा।

"हाँ—क्यों !"

"यद्यपि मैं लाल पालिश नहीं लगाता ! मगर फिर भी मुझे अपने नाखूनों से बहुत अधिक प्रेम है।"

"तो क्या तुम यह समझते हो कि वहाँ भोजन करने से तुम्हें वह बीमारी हो जायेगी !"

"मैं इस सम्बन्ध में आपका कोई तर्क मानने के लिए तैयार नहीं आपके तर्क से मेरी मौत मुझे नहीं छोड़ सकती।"

"बड़े डरपोक हो रहे हो आज कल !"

"जो भी चाहे कहिए, मगर मैं प्लेग के चूहों के समान मरना नहीं पसन्द करूँगा।"

"अच्छा...चलो घर ही चलें।"

"लेकिन होटल डी फ्रान्स चलने की क्यों सूझी !"

"मैं एक अनुभव और करना चाहता हूँ—" विनोद बोला "मगर होटल डी फ्रान्स अब बेकार ही है, क्योंकि वहां पहले ही इस प्रकार की एक दुर्घटना हो चुकी है।"

www.akfunworld.wordpress.com

"आपके एक अनुभव का अर्थ है, एक आदमी की जान...।"

"नहीं—अब ऐसा नहीं होने पायेगा—" विनोद बोला।

हमीद ने अपनी कोठी के गैरेज के सामने केडी लाकर खड़ी कर दी।

जैसे ही वह नीचे उतरे उन्हें अपने सामने प्रोफेसर राक खड़ा हुआ दिखाई दिया और हमीद "अरे" कह कर एक कदम पीछे हट गया।

विनोद ने कार के पिछले भाग पर दृष्टि डाली। स्टेपनी खुली हुई थी। कदाचित प्रोफेसर राक उसी में बैठकर यहाँ तक आया था।

प्रोफेसर राक ने उन्हें आश्चर्य में डूबा हुआ देखकर अट्टहास किया, और फिर गम्भीर होकर उन्हें बारी बारी घूरने लगा।

"तुमने मुझे बहुत परेशान किया था। अब तुम्हें मैं परेशान करूँगा...समझे! चलो, अब कहाँ चलते हो—" प्रोफेसर राक बोला।

"आओ प्रोफेसर!" विनोद आगे बढ़ता हुआ बोला "मुझे हर्ष होगा।"

"जाते हो या तुम्हें उठाकर कम्पाउन्ड के बाहर फेंक दूँ—" हमीद ने आंखें निकाल कर कहा।

"चुप रहो—" विनोद सचमुच बिगड़ गया।

प्रोफेसर राक का हाथ पकड़े हुये विनोद उसे ड्राइंग रुम में लाया। हमीद को विनोद का इस प्रकार डांटना बहुत बुरा लगा था इसलिये वह सीधा रसोई घर में चला गया। वहाँ रुका नहीं जहां प्रोफेसर राक से विनोद कह रहा था "प्रोफेसर! मेरा साथी मूर्ख है। उसकी बातों का ख्याल मत करना।"

"तुम मूर्ख लोगों ने मेरा जीवन नष्ट कर रक्खा है—" राक बोला "तुम्हारे सड़े सड़े बच्चे मेरे पीछे तालियां बजाते हैं।"

"मुझे दुख है!"

"और अब तुम भी मुझे बदनाम करोगे...तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि मैंने ग्रेटा के लिये सिफारिश की थी।"

"नियाग्रा होटल के मैनेजर ने मुझे बताया था—" विनोद बोला। "मगर तुम्हें यह कैसे मालूम हुआ कि मैं तुम्हें बदनाम करूँगा?"

"आजकल मेरे विरुद्ध षड्यंत्र रचे जा रहे हैं। कुछ आवारा लोगों ने मुझे मेरी नौकरानी के साथ बदनाम करने का प्रयास किया है। यद्यपि यह बिल्कुल असत्य है। मैं जीवन के उस स्टेज से गुजर चुका हूँ...जवानी में भी मैं इस प्रकार के मनोरंजनों से बचता रहा हूँ।"

"मगर ग्रेटा तो अत्यन्त सुन्दर है प्रोफेसर!"

"होगी...मैंने तो आज तक उससे बात भी नहीं की।"

"तो फिर तुमने उसके कन्ट्रैक्ट के लिये सिफारिश क्यों की।"

"मुझे याद नहीं कि किसने मुझसे प्रार्थना की थी...इतना जानता हूँ कि वह ग्रेटा नहीं थी। किसी दूसरे ने मुझसे कहा था कि मैं उसके लिये नियाग्रा होटल के मैनेजर से सिफारिश कर दूँ?"

"आश्चर्य है कि तुम्हें ग्रेटा की सिफारिश तो याद है, मगर सिफारिश के लिये प्रार्थना करने वाले की याद नहीं—" विनोद बोला।

"अभी बच्चे हो क्या जानो—" प्रोफेसर राकू बोला "मनुष्य को सहस्त्रों बातों में केवल वही बातें याद रह जाती हैं जिनका सम्बन्ध किसी न किसी प्रकार से उसके व्यक्तित्व से होता है। आदमी को एक बात याद आती है, लेकिन यह नहीं याद आता कि वह बात किसने कही थी। बात केवल इसलिये याद आ जाती है कि उसका सम्बन्ध किसी न किसी रुप में उस आदमी से होता है। इसका अर्थ यह हुआ कि बात कहने वाले से वह बात अधिक महत्व पूर्ण होती है। और इतना तो कदाचित तुम भी जानते होगे कि खास

खास बातें ही स्मरण में रह जाती है। बेकार बातें भूल जाया करती हैं।"

"अच्छा...तो फिर तुम्हारे तर्क का फल यह निकला कि ग्रेटा तुम्हारे लिये भी महत्वपूर्ण है!" विनोद बोला।

"अवश्य...वह अत्यन्त सुन्दर है।"

"मगर अभी तो तुमने कहा था कि तुम जीवन के उस स्टेज से गुजर चुके हो!"

"तुम अधिक पढ़े लिखे नहीं मालूम पड़ते—" प्रोफेसर राक बोला।

"नहीं—मैं तो बस एक मूर्ख हूँ—" विनोद मुस्कुरा कर बोला।

"अच्छा इसे इस प्रकार समझो...अगर तुम्हारे हाथ किसी प्रकार बेकार हो जायँ तो क्या उन हाथों को प्रयोग करने की इच्छा भी मिट जायेगी!"

"नहीं।"

"तो फिर इसी प्रकार समझ लो।"

"मैं बिल्कुल समझ गया प्रोफेसर! लेकिन अगर तुम आदमी को याद करने का यत्न करो तो मैं तुम्हारा आभारी हूँगा।"

"क्यों!"

"मैं उस आदमी द्वारा ग्रेटा तक पहुँचना चाहता हूँ। वह अवश्य उसका कोई अपना आदमी होगा। आह! क्या बताऊँ प्रोफेसर! जब से मैंने उसे देखा है तारे गिन गिन कर रात व्यतीत करता हूँ।"

"तो दिन में सो लिया करो—" राक खिल खिला पड़ा।

"मेरा मजाक मत उड़ाओ प्रोफेसर! कदाचित मैं पागल हो जाऊँगा।"

"तुम तो काफी अमीर आदमी मालूम होते हो। डोरे डालो ना उस पर।"

"वह किसी से नहीं मिलती!"

राक कुछ देर तक सोचता रहा, फिर उठता हुआ बोला "अच्छा प्रयत्न करूंगा।"

फिर वह तेजी से बाहर निकल गया।

—डाक्टर जैट्टू

डाक्टर शारदा की मृत्यु को तीन दिन व्यतीत हो चुके थे। उसकी लाश के पोस्ट मार्टम का भी वही फल निकला जो उससे पहले वाली लाशों का निकला था कोई नई बात नहीं मालुम हो सकी। डाक्टरों ने इतना तो पता लगा या कि मरने से पहले उसके शरीर में बड़ी तेज ऐठन हुई थी, किन्तु ऐठन का कारण न जान सके। डाक्टर शारदा ने मरने से पहले शराब पी थी और मरने के बाद उसके पेट में पर्याप्त परिमाण में मदिरा पाई गई, किन्तु उसका परीक्षण करने के बाद भी उसमें कोई ऐसी वस्तु नहीं मिली जो उस नखों वाली बीमारी पर किसी प्रकार का प्रकाश डालती।

विनोद बराबर दौड़ धूप करता रहा और ग्रेटा भी नियाग्रा में अपनी कला का प्रदर्शन करती रही, किन्तु उसके बाद से फिर कोई दुर्घटना नहीं हुई। इतना अवश्य हुआ कि पहली दुर्घटना के आधार पर अब नियाग्रा की बहुत सी मेजें खाली नजर आने लगी थीं। विनोद ने हमीद के अतिरिक्त किसी दूसरे आदमी को अभी तक यह नहीं बताया कि वह उस बीमारी को किसी दूसरे रूप में देखने की चेष्टा कर रहा है। नियाग्रा होटल के मैनेजर को उसके प्रश्नों के

आधार पर कुछ सन्देह अवश्य हो गया था—मगर बाद में विनोद ने उसे भी समझा बुझाकर सन्तुष्ट कर दिया था।

यद्यपि डाक्टर शारदा की मृत्यु के बाद शहर में इस प्रकार की कोई दूसरी मृत्यु नहीं हुई ... फिर भी लोगों में आतङ्क छाया हुआ था।

और इधर हमीद का विचार यह था कि अब सचमुच विनोद का भेज़ा खराब हो गया है। वह बेकार तमाम बातों को जासूसी चश्मा से देखने का प्रयत्न करता है। हमीद ने इन तीन दिनों में ग्रेटा से परिचय प्राप्त करने के लिये पूरा जोर लगाया, मगर सफल न हो सका। इसका मुख्य कारण यह था कि ग्रेटा किसी से मिलना पसन्द नहीं करती थी। शहर के अत्यधिक पूँजीपति जो सौन्दर्य के उपासक थे, उस तक पहुँचने के लिये हाथ पांव मार रहे थे, मगर किसी को अब तक सफलता नहीं मिली थी। केवल समाचार पत्रों के संवाददाता ही ऐसे भाग्यशाली थे, जिनसे वह थोड़ी देर तक बातें कर लिया करती थी।

हमीद जब थक कर हार गया तो उसने सोचा कि अब यही उचित है कि वह थोड़ी देर के लिये किसी समाचार पत्र का रिपोर्टर बन जाये। मगर हमीद का ध्येय वह नहीं था जो विनोद का था। हमीद मनोरंजन चाहता था और विनोद नखों वाली बीमारी का कारण जानने के लिये परेशान था।

वह क्राइम रिपोर्टर रमेश का परिचय कार्ड लेकर स्प्रिंग काटेज पहुँच गया, जहाँ ग्रेटा ठहरी हुई थी।

ग्रेटा उससे मिली तो लेकिन सब से पहले उसने हमीद से यही कहा कि वह दस मिनट से अधिक समय नहीं दे सकती।

"इटली के प्रति आपके क्या विचार हैं?" हमीद ने उससे पूछा।

"ओह ! क्या आपको यह नहीं मालूम कि मैं इटली ही की रहने वाली हूँ।"

"अच्छा !" हमीद ने आश्चर्य प्रगट करते हुये कहा "आपका रंग तो अंग्रेजों से भी अधिक साफ है।"

ग्रेटा कुछ नहीं बोली।

"इटली तो आपको अच्छा लगता होगा !"

"मेरा विचार है कि पहले आप इन्टरव्यु लेने की शिक्षा प्राप्त कीजिये उसके बाद आइयेगा—" ग्रेटा ने चिढ़कर कहा।

"ओह ! क्या मेरा प्रश्न अनुचित है!" हमीद ने दुख प्रगट करते हुये कहा "बात यह है कि यह काम मेरे लिये बिल्कुल नया है। मैं सोचता हूँ कि मुझे अपने पिछले ही पेशे की ओर लौट जाना चाहिये।"

अचानक ग्रेटा सी करके एक ओर सिमिट गई। उसे हमीद की कोट की जेब से एक उज्जवल सी वस्तु फुदक कर छोटी मेज की ओर आती दिखाई पड़ी।

और फिर हमीद की पालतू चुहिया के घुंघरु मेज पर बज उठे।

"अरे ! मैं तो डर गई थी—" ग्रेटा हँस कर बोली "आप चूहे भी पालते हैं ?"

"यह मेरी चुहिया है—" हमीद ने ठण्डी सांस खींच कर कहा "मेरे पहले धन्धे की यादगार।"

"यह धन्धा पेशा क्या है ? मैं नहीं समझ रही हूँ।"

"देखिये मैं बताता हूँ— !" हमीद ने कहा और मेज पर दोनों हाथ टेक कर आगे की ओर झुकते हुये सीटी में अपनी मुख्य धुन आरम्भ कर दी। चुहिया पिछले पैरों पर खड़ी होकर नाचने लगी।

ग्रेटा बच्चों के समान तालियाँ बजाकर हँस पड़ी।

"आप तो जादूगर मालूम होते हैं। मैंने आज तक चूहों की शिक्षा के बारे में नहीं सुना था।"

"मेरे पास ऐसे बहुत से जानवर हैं। यह तो चुहिया है ! मैंने साँप भी पाल रक्खे हैं और उन्हें शिक्षा भी दे रक्खी है।"

"साँप !" ग्रेटा चकित होकर बोली।

"हाँ हाँ...मेरे पास लगभग तीन सौ साँप हैं।"

"झूठ !"

"अच्छा तो कल मैं आपको दिखाऊँगा।"

"अवश्य !" ग्रेटा अब हमीद की बातों में दिलचस्पी लेने लगी थी "मगर क्या वह सांप...आपने तो न पकड़े होंगे !"

"फिर कौन पकड़ेगा—" हमीद बोला "सांप पकड़ना भी एक उच्चकोटि की कला है। इस शहर में मेरे अतिरिक्त और किसी को यह कला नहीं आती।"

"तो आप सँपेरे हैं ! मैंने यहाँ के संपेरों के बारे में पुस्तकों में पढ़ा है।"

"मुझे दुख है कि आपने डाक्टर 'जैटू' का नाम कभी नहीं सुना मुझे नवारका विश्वविद्यालय से सांपों के अनुसन्धान के लिये डाक्टरिएट मिली थी।"

"अच्छा। आप किस प्रकार सांप पकड़ते हैं ?" ग्रेटा ने पूछा।

"इस प्रकार तो बताना कठिन है। अगर कोई सांप होता तो पकड़ कर दिखा देता—हमीद ने चिन्ताजनक स्वर में कहा, फिर मुस्कुरा कर बोला "ठहरिये। मैं प्रयत्न करता हूँ। मान लीजिये कि आप सांप हैं—जरा सीधी होकर बैठ जाइये...हां।"

हमीद ने बीच से छोटी वाली मेज हटा दी और ग्रेटा के सोफे के समीप एक घुटना टेक कर बैठ गया।

"हुश। हुश।" उसने कहा "मैंने इस प्रकार आपको बिल से निकाला। अब आप फन काढ़े बैठी है। मैंने फिर आपको हुश हुश किया।"

हमीद ने हुश हुश करके ग्रेटा की ठुड्डी में हाथ लगाते हुये

बकवास जारी रक्खी "अब आप मेरे हाथ पर मुंह मारने का यत्न कीज़िये—नहीं—ऐसे नहीं...इस प्रकार।"

उसने ग्रेटा का हाथ लेकर अपने होठों से लगा लिया।

"हां तो इस प्रकार सांप ने मेरे हाथ पर मुंह मारा और मैंने उसका वार खाली देकर उसके फन के बगल वाले भाग पर जोर से हाथ मारा।"

इस बार उसने ग्रेटा के दाहिने गाल पर हलकी सी थपकी दी।

"और फिर जैसे ही सांप एक ओर झुका, मैंने उसका सर दबोच लिया।"

इस बार ग्रेटा बड़ी फुर्ती से एक ओर खिसक गई और हमीद के हाथ फैले ही रहा गये। लेकिन वह उसी समय सीधा खड़ा होकर हाथ मलता हुआ बोला "इस प्रकार सांप पकड़ा जाता है।"

"तुम बड़े शरारती मालूम पड़ते हो—" ग्रेटा मुस्करा कर बोली।

"जी नहीं—छोटा शरारती—बड़े शरारती महाशय तो इस मामिले में बिल्कुल बुद्धू हैं।"

"मैं नहीं समझी।"

"ओह! यह हम सांप पकड़ने वालों की अपनी भाषा है यदि आप इस समय मुझे शरारती के बजाय क्रीम रोल कहती तब भी मैं यही वाक्य कहता।"

"ओह! ग्रेटा ने कलाई की घड़ी देखते हुये कहा "बीस मिनट हो गये।"

"अरे।" हमीद बौखला कर बोला "इन्टरव्यु तो रह ही गया।"

"नहीं बस—अब कल इस समय मुझे काम है।"

"कल किस समय?"

"इसी समय—तुम एक अच्छे मित्र बन सकते हो।"

"ओह—धन्यवाद ! कितने सांप लाऊं ?"

"सांप ।" वह हंसकर बोली "अब अधिक मूर्ख मत बनाओ ।"

"अरे, तो क्या आप मजाक समझ रही हैं। अच्छी बात है कल देख लीजियेगा फिर मेज पर से चुहिया को उठाता हुआ बोला "डाक्टर जैट्टू एक प्रतीष्ठित नागरिक हैं ।"

"अच्छा डाक्टर जैट्टू ! अब जाओ—" ग्रेटा ने उस से हाथ मिलाते हुये कहा "हम कल फिर मिलेंगे !"

वापसी पर हमीद अपने ही हाथ से अपनी पीठ ठोंक रहा था ।

जब वह घर पहुँचा तो विनोद का सामना हो गया वह कदाचित बड़ी देर से बैठा उसी पर ताव खा रहा था ।

"आजकल तुम केडीलाक न ले जाया करो, समझे ! मेरी बड़ी हानि होती है—" विनोद ने कहा ।

"लेकिन यही बात आप हँसकर गाकर भी कह सकते थे—" हमीद बोला ।

"थप्पड़ मार दूंगा ।"

"मगर उसी प्रकार जैसे मैंने ग्रेटा के गाल पर थपकी दी थी—" हमीद सीना तान कर बोला और विनोद उसे घूरने लगा ।

"जी हाँ—" उसने फिर कहा "मैं सच कह रहा हूँ । स्त्रियों को अपनी ओर आकर्षित कर लेना एक बहुत बड़ी कला है—समझे माई लार्ड !"

"क्या बक रहे हो ?"

"ग्रेटा ने मुझे कल फिर बुलाया है । जरा दस पन्द्रह सांप ऐसे अलग कर दीजियेगा जिनके मुँह में एक भी दाँत न हो ।"

"परेशान मत करो, चले जाओ यहाँ से ।"

"आप तो ग्रेटा से भी कठोर मालूम होते हैं । उसने कम से कम मेरे साथ ऐसा व्यवहार नहीं किया था ।"

"क्या कोई बड़ा तीर मार कर आये हो ?" विनोद ने व्यङ्ग

करते हुए पूछा ।

"जी हां—बल्कि तीर खा कर आया हूँ...देखिये क्या होता है ।"

"तुम बकवास बन्द नहीं करोगे ।"

"अच्छा सुनिये ! मगर कदाचित आप विश्वास नहीं करेंगे—" हमीद ने कहा और उस परिहासजनक इन्टरव्यु का हाल बताने लगा। उसे आशा थी कि विनोद सुनकर बड़ी देर तक हँसता रहेगा, लेकिन कहानी समाप्त होते ही विनोद ने बड़े शुष्क स्वर में कहा ।

"तुमने यह अच्छा नहीं किया हमीद ।"

"धन्यवाद !" हमीद मुँह बनाकर बोला 'लेकिन यह बात अच्छी तरह समझ लीजिये कि उसके बारे में मेरे वह विचार नहीं जो आपके हैं । मेरे लिये वह एक सुन्दर औरत है बस !"

"तुम जानते हो कि मैं हर कदम सोच समझ कर उठाता हूँ ।"

"ठीक है—आप अपना काम कीजिये और मैं अपना ।"

"तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है क्या ?"

"कोई नई बात कहिये ! यह तो मैं हजारों बार सुन चुका हूँ ।"

"अच्छा !" विनोद उसे घूर कर बोला "अगर तुम भी लपेट में आ जाओ तो फिर मुझ से शिकायत मत करना ।"

"मैं अपनी रक्षा खुद कर सकता हूँ—" हमीद लापरवाही से बोला !

इतने में फोन की घन्टी बजी। विनोद ने हाथ बढ़ाकर रिसीवर उठा लिया।

"हाँ हां...मैं विनोद बोल रहा हूँ...हाई सर्किल क्लब में !...ठीक है...नहीं नहीं कम से कम ग्यारह बजे रात तक उसे वहां रुकना चाहिये...क्या कह रहे हो...बारह बजे तक ! तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?...ठींक है...तो फिर मैं विश्वास रक्खूं ?" बहुत अच्छा ।"

विनोद ने रिसीवर रखकर सिगार सुलगाया और किसी गहरी

www.akfunworld.wordpress.com

चिन्ता में डूब गया। हमीद वहां से उठकर चल दिया।

नौ बज रहे थे। जाड़े की रात थी। अभी से लग रहा मानो आधी रात बीत गई हो। विनोद उठकर एक कमरे में आ यहां उसने काले कपड़े का सूट पहिन कर पिस्तौल जेब में डाला वहाँ से गैरेज में आया तो केडीलाक फिर गायब थी। शायद हमी फिर कहीं निकल भागा था। विनोद ने काले रंग की छोटी आस्टे निकाली, जिसे वह बहुत ही आवश्यक अवसरों पर प्रयोग करता था थोड़ी देर के बाद विभिन्न सड़कों से होती हुई कार एक ऐसे भा में पहुँची जहां किराये पर दिये जाने वाले अनगिनित गैरेज थे विनोद ने कार से उतर कर एक गैरेज खोला और कार उस अन्दर ले जाकर खड़ी कर दी। उसने यह गैरेज किराये पर रक्खा था।

थोड़ी देर के बाद वह एक मोटर साइकिल ढकेलता हुआ गैरे से बाहर निकला। अब उसके सर पर फेल्ट हैट के स्थान पर ए विचित्र प्रकार की टोपी थी। उसका रङ्ग काला था और वह उस सर पर त्वचा के समान चिपकी हुई थी। शरीर पर कोर्ट के स्थान प अब एक चमड़े की जैकेट थी।

मोटर साईकिल स्टार्ट करके वह एक सुनसान मार्ग पर लिया। मोटर साइकिल तीव्र गति से जा रही थी। उसने मेन रो पर आने का प्रयत्न नहीं किया। मोटर साइकिल वास्तव में ग्रे के निवास स्थान स्प्रिंग काटेज जा रही थी।

इस इलाके में बहुत थोड़े से बंगले थे और वह भी एक दू से काफी फासिले पर स्थित थे। विनोद ने स्प्रिंग काटेज से दो ट फर्लाङ्ग इधर ही मोटर साइकल रोक दी और उतर गया। कदाि उसने पहले से ही मोटर साइकिल छिपाने के लिये स्थान नियत लिया था।

मोटर साइकिल छिपाने बाद वह पैदल ही स्प्रिंग काटेज

ओर चल पड़ा। उसे एक ऐसी ही रात याद आ रही थी जब वह और हमीद इसी स्प्रिंग काटेज में चोरों के समान दाखिल हुये थे। वह भी एक नर्तकी ही का मामिला था उसने भी अपने रहने के लिये इसी स्प्रिंग काटेज ही को चुना था। वह भी जाड़े ही की एक रात थी और इसी प्रकार अन्धकार छाया हुआ था। मगर उस मामिले में न तो विनोद ने इतनी तैयारियां की थीं और न इतनी सावधानी रक्खी थी। यद्यपि उस रात वह दोनों चोरों ही के समान स्प्रिंग काटेज में घुसे थे, लेकिन उन्हें पूरा सन्तोष और अपने ऊपर भरोसा था। एक आने वाले के लिये उन्होंने इत्मीनान से दरवाजा खोला था (इस कहानी के लिये जासूसी दुनिया का उपन्यास गीतों के धमाके पढ़िये।)

लेकिन आज हमीद नहीं था। न जाने क्यों विनोद उसके लिए अचानक व्याकुल हो उठा। हमीद ग्रेटा पर रीझ गया था और विनोद के विचारानुसार यह बड़ी भयानक बात थी।

विनोद तेजी से स्प्रिंग काटेज की ओर बढ़ा।

स्प्रिंग काटेज का बँगला ऊँची चार दीवारी के अन्दर अन्धकार में डूबा हुआ खड़ा था। बँगले के सामने एक छोटी सी वाटिका थी, जिसके बीच में एक सड़क थी जो बँगले से उस फाटक तक जाती थी जो चारदीवारी में था—अर्थात बाहरी फाटक तक।

विनोद ने जैसे ही उस बाहरी फाटक के सामने से गुजरना चाहा वैसे ही कुत्ते गुर्राते हुये फाटक की ओर दौड़े। यह फाटक छड़दार था और अन्दर से बन्द था। विनोद जल्दी से दीवार की ओट में हो गया, मगर वह कुत्ते छड़ों के बीच से अपनी थोथनियाँ निकाले भूंके जा रहे थे। बिनोद ने पतलून की जेब से एक पैकेट निकाला। उसमें कच्चे मांस के टुकड़े थे। उसे रखवाली करने वाले कुत्तों के बारे में पहले ही से मालूम था, इसलिये वह उनके लिये पूरी तरह तैयार होकर आया था। उसने मांस के टुकड़े अन्दर फेंक दिये, फिर

उसे कुत्तों की गुर्राहट सुनाई पड़ी। उन्होंने भौंकना बन्द कर दिया था, किन्तु मन्द-म गुर्राहट अब भी सुनाई दे रही थी—थोड़ी देर के बाद गुर्राहट भी बन्द हो गई और विनोद मुस्कुरा पड़ा।

विनोद को मालूम था कि बङ्गला बिल्कुल खाली नहीं है। मे‍टा के दोनों नौकर वहीं रहते हैं, किन्तु फिर भी उसने गैर कानूनी तौर पर तलाशी लेने का खतरा मोल लिया था।

वह चक्कर काट कर बङ्गले के पीछे पहुँचा। उसे याद था कि पीछे की ओर भी एक दरवाजा है, लेकिन यह बात बहुत पुरानी हो चुकी थी। उसने फिर यह जानने का कष्ट नहीं उठाया कि वह दरवाजा अब भी है या नहीं।

जब वह बङ्गले के पीछे पहुँचा तो उसे निराशा हुई क्योंकि वह दरवाजा ईंटों से बन्द कर दिया गया था।

विनोद ने जेब से टार्च निकाली, मगर न जाने क्या सोचकर उसे प्रयोग नहीं किया। वह अब फिर उसी बाहरी फाटक की ओर जा रहा था फिर वह उस स्थान पर रुक गया जहाँ चारदीवारी का कुछ भाग इधर-उधर की दीवारों से ऊँचा था। यहां नौकरों के लिये दो छोटे-छोटे कमरे बने हुए थे। जब उसे भली भांति इस बात का विश्वास हो गया कि नौकर उन्हीं दोनों कमरों में उपस्थित है तो वह आगे बढ़ा।

—वह कौन था ?

विनोद अब चारदीवारी के उस भाग के समीप पहुँच गया था जहाँ से बङ्गले की इमारत आरम्भ होती थी। उसने अपने सर पर चिपकी हुई टोपी का अगला सिरा खींच लिया। इस प्रकार पूरा चेहरा छिप गया केवल दोनों नेत्र दो छेदों से झांक रहे थे।

इसके बाद उसने आँकड़ा लगी हुई डोर दीवार पर फेंकी जो

दीवार में जाकर अटक गई। वह उस डोर के सहारे दीवार पर चढ़ गया और फिर डोर को दूसरी ओर लटका कर उसी के सहारे दूसरी ओर बड़ी सरलता से उतर गया फिर डोर को झटका देकर दीवार से फँसा हुआ आँकड़ा छुड़ा लिया और डोर को लपेट कर कमर से बाँध कर बँगले की ओर बढ़ा।

बरामदे में पहुँच कर विनोद रुक गया। नौकरों के कमरों में प्रकाश हो रहा था, किन्तु वह इतना तीव्र नहीं था कि बरामदे तक पहुँचता! घास में छिपे हुये झींगुर झाँय-झाँय कर रहे थे। विनोद बरामदे में खड़ा कुछ सोचने लगा। कोई खास बात रही होगी वर्ना कार्य करते समय विनोद सोचा नहीं करता ाथ। जो कुछ सोचना होता वह कार्य करने से पहले ही सोच लिया करता था।

अचानक वह बँगले के दरवाजे की ओर लपका। उसे आशा थी कि दरवाजे मे अन्दर या बाहर से ताला लगा होगा, मगर दरवाज़ा बन्द नहीं था। वह हैन्डिल घुमाते ही खुल गया। उसने बड़ी सावधानी से भीतर प्रवेश करके दरवाजा बन्द कर लिया।

अब उसने अपनी छोटी सी टार्च फिर निकाल ली, क्योंकि यहां चारों ओर अन्धकार छाया हुआ था। उसने टार्च के प्रकाश में कमरों की तमाम वस्तुयें उलटनी पलटनी आरम्भ कर दी!

सहसा उसे एक मन्द सी आहट सुनाई पड़ी। उसने टार्च बुझा दी और चुपचाप एक ओर खड़ा हो गया। दो तीन मिनट व्यतीत हो गये। किसी का पता नहीं चला। उसने यह समझ कर कि कदा-चित उसका भ्रम हो रहा हो, फिर अपना काम आरम्भ कर दिया। वह सोच रहा था कि अगर इस समय हमीद भी होतातो कितना अच्छा होता।

सब कमरों की तलाशी लेने के बाद वह ग्रेटा के सोने वाले कमरे में आया। सबसे पहले उसकी दृष्टि ग्रेटा के सिंगार मेज पर

पड़ी···और उसने उसी से तलाशी आरम्भ की। मेज की दराजें खोल कर देखीं।

और फिर उसकी नजर एक मुँह वाली शीशी पर पड़ी जिसमें कई रंगों के छोटे मोटे कैपसूल (शीशे की बनी हुई एक प्रकार की नलकियाँ) भरे हुये थे।

"यह कई रङ्ग के कैपसूल क्यों! विनोद ने अपने आपसे प्रश्न किया "लाल पीले, गहरे गुलाबी, श्वेत···क्या एक ही रङ्ग के काफी नहीं थे।"

विनोद ने शीशी का ढक्कन खोल कर थोड़े से कैपसूल अपनी हथेली पर उलट लिये। उनमें से एक आध खोल कर भी देखें, लेकिन वह खाली थे। उसने उनमें से हर रंग के दो दो चार निकाल कर अपनी जेब में रख लिये।

उसके मस्तिष्क में एक बहुत ही महत्वपूर्ण सन्देह उत्पन्न हो गया। उसने फिर तलाशी आरम्भ की, मगर उसे वहां कोई ऐसी दवा नहीं मिली, जिसके प्रयोग के लिये कैपसूलों की आवश्यकता पड़ती है। एक स्थान पर उसे ग्रेटा के बहुत से सर्टीफिकेट मिले जो उसे दूसरे देशों में विशेष विशेष अवसरों पर अपनी कला के प्रदर्शन करने पर मिले थे। विनोद ने उन्हें भी अपनी जेब में डाल लिया। उसने सोचा कि कुछ न कुछ तो होना ही चाहिये—और बहुत सम्भव है कि सन्ध्या के प्रकाशित होने वाले समाचार पत्र इस आश्चर्यजनक चोरी का समाचार छापें, जिसमें केवल सर्टिफिकेट चुराये गये हों।

वह मन ही मन अपनी इस कार्य प्रणाली पर हँस पड़ा।

वह वापसी के लिए मुड़ा ही था कि उसे बराबर वाले कमरे में फिर एक हलकी सी आवाज़ सुनाई पड़ी। बिल्कुल ऐसा लगा जैसे किसी ने नींद में कराह कर करवट ली हो। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि इससे पहले वह सब कमरे देख चुका था, और वह सब खाली थे। वह पाँव दबा कर उस कमरे से निकला और बगल वाले

मरे के दरवाजे के सामने आकर खड़ा हो गया। उसने उसे खोलना
हा, किन्तु वह अन्दर से बन्द था।

विनोद को और अधिक आश्चर्य हुआ। कुछ देर पहले वह रवाजा खुला हुआ था। अगर कोई इसमें घुसा है तो उसने कमरे की बिगड़ी हुई दशा पर क्यों नहीं ध्यान दिया? अगर वह घर ही का कोई व्यक्ति है तो उसे ऐसी दशा में इस प्रकार द्वार बन्द करके रहने के बजाय पूरे मकान का चक्कर लगाना चाहिये था। न्दर घुसने वाले ने प्रकाश भी नहीं किया था।

उसने दरवाजे के शीशों से अन्दर झांकने का प्रयत्न किया। मरे में अन्धेरा था। अचानक उसे प्रकाश की एक पतली सी रेखा चक्कर लगाती हुई दिखाई पड़ी, यह उसी प्रकार की टार्च का प्रकाश था जैसी कुछ देर पहले स्वयं विनोद प्रयोग कर चुका था। टार्च का काश बिखरे हुये सामान पर पड़ रहा था।

फिर टार्च बुझा दी गई और किसी ने दरवाजे के हैन्डिलों को न्दर से पकड़ कर घुमाया। विनोद दरवाजे के सामने से हट कर वार से चिपक गया।

उस कमरे से निकलने वाला व्यक्ति विनोद के समीप से होता आ ग्रेटा के सोने वाले कमरे में घुस गया।

सहसा बाहरी बरामदे में कई कदमों की आवाजें सुनाई पड़ीं और सा मालूम हुआ जैसे किसी ने दरवाजे का हैन्डिल घुमाया हो। टा के सोने वाले कमरे में घुसा हुआ आदमी बाहर निकल आया र विनोद ने उसको आँगन से होकर रसोई घर की छत पर चढ़ते खा। अब विनोद का भी वहां ठहरना खतरे से खाली नहीं था। खते ही देखते दूसरा आदमी गायब हो गया। विनोद भी बड़ी तेजी से रसोई घर की ओर चला? रसोई घर की दीवार काफी नीची थी। उसने छत पर चढ़ कर नीचे की ओर झाँका। दूसरा आदमी नीचे द चुका था अन्दर प्रवेश करने के लिये यह मार्ग बड़ा सरल था,

किन्तु जल्दी में विनोद को यह दिखाई नहीं पड़ा था। पहले कूद
वाला व्यक्ति बड़ी तेजी से एक ओर जा रहा था। विनोद भी नी
कूदा। यद्यपि उसने क्रेपसोल के जूते पहिन रक्खे थे, मगर कूद
से जो आवाज हुई वह आगे जाते हुये आदमी को चौंका देने
लिये काफी थी। वह एक क्षण के लिये रुका और फिर दौड़ने लगा।
विनोद उसके पीछे भाग रहा था।

सहसा स्प्रिंग काटेज की ओर से किसी ने फायर किया। गोल
सनसनाती हुई विनोद के पास से निकल गई। दूसरा फायर हुआ
और साथ ही लोगों की चिल्लाने की आवाजें सुनाई देने लगीं।

दूसरा आदमी न जाने किधर निकाल गया। विनोद ने अ
यही उचित समझा कि वह उस आदमी का पीछा करने का विचा
छोड़ कर चुपचाप वहाँ से निकल जाये।

सबेरे जलपान की मेज पर विनोद हमीद की प्रतीक्षा कर रहा
था और उसके मस्तिष्क में पिछली रात की घटनायें घूम रही थीं।
वह सोच रहा था कि आखिर वह दूसरा आदमी कौन था। उसे
किस वस्तु की तालाश थी?

कई मिनट बीत गये, मगर हमीद नहीं आया। फिर नौकर ने
आकर सूचना दी कि वह मौजूद ही नहीं है।

विनोद दिन भर अपने अनुभव शाला में पड़ा रहा... और
सन्ध्या को जब नीचे आया तो सबसे उसने सन्ध्या को प्रका
शित होने वाले समाचार मंगाये—और फिर वह समाचार उसे
प्रकाशित हूआ मिल गया जिसकी उसे तलाश थी। लगभग सारे
समाचार पत्रों ने यही लिया था:—

"इटैलियन नर्तकी ग्रेटा के यहाँ विचित्र चोरी। घर का सारा
सामान उलट पलट दिया गया, किन्तु चोर केवल उसके सर्टीफिके
ले गया। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर ली है। कोतवाली इन्चा
इन्स्पेटर जगदीश जांच कर रहे हैं।"

विनोद मुस्कुरा उठा। उसने ड्राइवर को आवाज देकर केडी निकालने को कहा।

"केडी तो हमीद साहेब ले गये हैं—" ड्राइवर बोला।

विनोद ताव खाकर रह गया—और हमीद अपनी स्वप्नवत मोछों पर ताव देता हुआ स्प्रिंग काटेज की ओर केडी भगाये लिये जा रहा था। एक चमड़े के थैले में दर्जनों बे दांत के सांप कुल बुला रहे थे।

स्प्रिंग काटेज पहुँच कर हमीद केडी से उतर पड़ा लेकिन थैला उसी में पड़ा रहने दिया। बरामदे में खड़े हुये नौकर ने कार्ड माँगा!

"ओह!" हमीद पैर पटक कर बोला "जाकर कह दो कि डाक्टर जेटू आये हैं।"

"साहेब वह हिन्दुस्तानी नहीं समझतीं। लिखकर दीजिये।" नौकर बोला।

हमीद ने एक कागज पर पेन्सिल से लिखकर नौकर को दे दिया नौकर को वापसी में देर नहीं लगी। ऐसा लगा मानों हमीद की प्रतीक्षा ही की जा रही थी।

ड्राइंग रूम में घुसते ही हमीद की नजर सबसे पहले इन्सपेक्टर जगदीश पर पड़ी। हमीद ने जगदीश को चौंकते हुये देखा। हमीद स्वयं भी बौखला गया था, किन्तु उसने ग्रेटा की नजर बचा कर जगदीश की ओर देखते हुये अपनी बाईं आँख दबा दी।

"आफिसर यही हैं वह आदमी।" अचानक ग्रेटा चिल्ला पड़ी।

"अगर यह वही आदमी है तो मैं विवश हूँ—" जगदीश बोला।

"क्यों?" ग्रेटा उसे घूरने लगी!

"मैं यह सोच भी नहीं सकता कि इस आदमी ने आपके सर्टी-

फिकेट चुराये होंगे—जगदीश बोला "हाँ—अगर आपका पाउडर पफ या हेयरपिन गायब हुआ होता तो दूसरी बात थी ।"

हमीद उन दोनों को पागलों के सामान घूर रहा था। उसने ग्रेटा के यहां की चोरी का समाचार पढ़ा तो था, लेकिन यह सोच भी नहीं सकता था कि ग्रेटा ने उसी पर सन्देह किया होगा।

"क्या आप इसे जानते हैं ?" ग्रेटा ने पूछा।

"बहुत अच्छी तरह....यह एक प्रतिष्ठित नागरिक है।"

"क्या बात है ?" हमीद ने उन दोनों को बारी बारी घूर कर कहा।"

"अच्छा मिस ग्रेटा !" जगदीश उठता हुआ बोला "मैं पूरा पूरा यत्न करूँगा।"

जगदीश सर झुकाये हुये चला गया। हमीद खड़ा खड़ा ग्रेटा को घूरता रहा। उसने उसे बैठने को भी नहीं कहा।

"आखिर क्या बात है ?" हमीद ने पूछा।

"यहाँ चोरी हो गई है।"

"मैं जानता हूँ। मैंने समाचार पत्र में पढ़ा था, लेकिन क्या मुझ पर सन्देह है।"

"मैंने वैसे ही अपना विचार प्रकट किया था—" ग्रेटा बोली, फिर थोड़ी देर ठहर कर पूछा।

"आखिर तुम कौन हो ?"

"डाक्टर जैटू ! सांपों का विशेषज्ञ।"

"पुलिस वाले तुम्हें कैसे जानते हैं।"

"हर बड़े आदमी को पुलिस वाले जानते हैं।"

"और तुम सांप पकड़ते हो ?"

"हाँ—यह मेरा मनोरंजन—मेरा धन्धा और मेरा काम है।"

"मैं इस समय बहुत अधिक परेशान हूँ !"

"केवल सर्टीफिकेट के लिये इतनी परेशानी—" हमीद बोला "मैं यहाँ से दर्जनों सर्टीफिकेट तुम्हें दिला दूँगा ।"

"जाओ—फिर कभी आना—" ग्रेटा बोली ।

"मैं सांप लाया हूँ ।"

"मुझे अवकाश नहीं है ।"

"तो तुमने मेरा इतना समय क्यों नष्ट किया—" हमीद बिगड़ गया ।

ग्रेटा कुछ नहीं बोली ! वह बहुत घबड़ाई हुई थी ।

"अच्छी बात है, मैं जा रहा हूँ—" हमीद ने पैर पटक कर कहा और कमरे से बाहर निकल आया ।

केडी के पास आकर उसने साँपों वाला थैला निकाला, और ग्रेटा के ड्राइङ्ग रूम में जा घुसा । ग्रेटा भी कदाचित बाहर हो जाने के लिये उठी थी । हमीद ने थैला मेज पर उलट दिया । दर्जनों सांप मेज पर रेंगने लगे । ग्रेटा चीख मार कर सोफे पर चढ़ गई ।

"क्या मैं झूठ कहता हूँ !" हमीद ने कहा और एक सांप उठाता हुआ बोला "यह मेरे केंचुये है ।"

ग्रेटा सोफे पर खड़ी कांप रही थी ! अचानक एक काला सांप फन उठाये सोफे की ओर लपका, और ग्रेटा चीख कर हमीद की बाँहो में झूल गई । फिर वह दोनों सोफे पर ढेर हो गये । नौकर बहामदे में खड़े चीख रहे थे ।

"ईश्वर के लिये डाक्टर ।" ग्रेटा हांफती हुई बोली ।

"तुम तो मुझे झूठा समझती थीं ना ।"

"नहीं नहीं—इन्हें ले जाओ ।"

"घबड़ाओ नहीं ! जब तक तुम मेरे पास हो, यह तुम्हारा कुछ नहीं कर सकते ।"

हमीद ने सोचा कि अगर नौकर शोर मचाते हुये सड़क पर चले गये तो बड़ी कठिनाई होगी । उसने ग्रेटा से कहा ।

"इन गधों को चुप कराओ नहीं तो शोर सुनकर सारे सांप क्रोधित हो जायेंगे ! फिर मैं कुछ नहीं कर सकूंगा !"

ग्रेटा भयप्रद मुस्कुराहट के साथ हाथ हिला कर नौकरों को चले जाने का संकेत करने लगी ।

नौकरों ने एक बार आश्चर्य से ग्रेटा की ओर देखा और फिर चले गये ।

"ओ...ई..." ग्रेटा फिर चीख मार कर हमीद पर लद गई । एक सांप सोफे पर चढ़ने का यत्न कर रहा था । हमीद ने उसे दूसरी ओर झटक दिया ।

"हटाओ...इन्हें हटाओ...नहीं तो मैं नौकरों को बुलाती हूँ !"

"नौकर इस कमरे में घुसने का साहस नहीं कर सकते—" हमीद लापरवाही से बोला ।

"आखिर तुम चाहते क्या हो ?"

"दो बातें—एक तो यह कि तुम स्वीकार कर लो कि मैं झूठ नही बोलता ।"

"मैं स्वीकार करती हूँ ?"

"दूसरी यह बात कि तुम नित्य प्रति मुझसे मिला करोगी ।"

"मिलूँगी ?"

"बस ठीक—अच्छा अब मुझे उठने दो ताकि मैं इन्हें थैले में रख सकूँ !"

ग्रेटा उसे छोड़ कर एक ओर हट गई और हमीद सांपों को पकड़ कर थैले में डालने लगा ।

"तुम्हें भय नहीं मालूम होता ?"

"नहीं—यह मेरे अच्छे साथी हैं !"

अन्तिम सांप हमीद के हाथों में ही था कि एक लम्बा तड़ंगा ऐंग्लो इन्डियन कमरे में दाखिल हुआ, और कुछ क्षण तक मुँह खोले दरवाजे के पास खड़ा रहा ।

www.freehindinovel.blogspot.com

हमीद ने सांप को झोले में डालते हुये ग्रेटा से कहा "खेल समाप्त हो गया।

"ओह मिस्टर कैलब!" ग्रेटा ने आने वाले को सम्बोधित करते हुये कहा "यह सांपों के विशेषज्ञ डाक्टर जैट्रू हैं।

हमीद सोच रहा था कि उसने इससे पहले कैलब को कहाँ और कब देखा था। कैलब हमीद को घूरता हुआ आगे बढ़ा और हमीद ने उससे हाथ मिलाते हुये कहा।

"बड़ा हर्ष हुआ मिस्टर कैलब!"

"मुझे भी कम हर्ष नहीं हुआ कैप्टेन हमीद!" उसने व्यंग करते हुये कहा "लेकिन तुम्हारे हाथ गन्दे हैं इसलिये थोड़ी सी घृणा भी हुई है।"

"कोई बात नहीं—फिर कभी मिलोगे तो हाथ साफ रहेगा!" हमीद मुस्कुराकर बोला।

"लेकिन दूसरों से परिचय प्राप्त करने का यह ढंग बहुत ही खराब है—" उसने सांपों वाले थैले की ओर संकेत करके कहा।

"तुम इन्हें जानते हो?" ग्रेटा ने जल्दी से पूछा।

"हाँ—कैलब मुँह टेढ़ाकर के बोला "यह गुप्त विभाग के एक बदनाम आफिसर हैं। वह औरतें जो इन्हें मुँह लगाना पसन्द नहीं करतीं उनसे यह इस प्रकार परिचय प्राप्त करते हैं।"

"यह वाक्य तुम्हें अत्यन्त मँहगा पड़ेगा मिस्टर कैलब।" हमीद ने फर्श से थैला उठाते हुये कहा।

कैलब खिल खिला कर हँस पड़ा और हमीद ने ग्रेटा की ओर देखकर कहा।

"तुम मुझे बहुत याद आओगी सुन्दरी।"

वह कमरे से निकल आया, मगर उसका मस्तिष्क इसी प्रश्न में उलझा हुआ था कि कैलब कौन था?"

——

—मृत्यु कहां हुई ?

विनोद अपने अनुभव शाला में टहल रहा था। उसके मुख मण्डल पर उत्तेजना झलक रही थी। कदचित उसने अभी अभी कोई परीक्षण करके कोई नया अनुभव प्राप्त किया था। उसने नौकर के लिये घन्टी बजाई—और सिगार सुलगाकर एक मेज के कोने पर बैठ गया।

"हमीद को भेज दो—" नौकर को दरवाजे में खड़ा देखकर उसने कहा।

कुछ देर के बाद हमीद जब उसके सामने आया तो उसे देखते ही विनोद का मुख क्रोध के कारण लाल हो गया। बाल बिखरे हुये थे। शरीर पर रेशम का फूलदार लम्बा लेबादा था और होठों पर लपस्टिक लगी हुई थी।

"तुम दूसरों को हँसाने की चेष्टा में भाँड़ हुये जा रहे हो।"

"आप गलत समझे—" हमीद ने गम्भीरता से कहा "मैं वास्तव में शीशे के सामने एक गूँगी लड़की का अभिनय कर रहा था।"

"बैठ जाओ! तुम्हें लाज नहीं लगती। भला नौकर क्या कहते होंगे!"

"मुझे नौकरों..."

"चुप रहो—"विनोद वास्तव में झुंझला गया "जो कुछ कह रहा हूँ उसे कान खोल कर सुनो।"

"मेरे कान बन्द नहीं हैं !"

"तुम कल सन्ध्या को फिर स्प्रिंग काटेज गये थे और वहाँ तुमने जो हुल्लड़ बाजी की है उसकी रिपोर्ट आफिस में आ गई है।"

"रिपोर्ट किसने की है ?"

"स्वयं ग्रेटा ने !"

"अरे !" हमीद अपने सर पर हाथ फेरने लगा।

"तुम्हारे कारण मेरी बड़ी बदनामी हो रही है।"

"तो फिर मुझे गोली मार दीजये—" हमीद उखड़ गया।

"नहीं—अच्छा यही होगा कि तुम मेरी कोठी खाली कर दो और जितनी जल्द हो सके यहाँ से चले जाओ—" विनोद ने अत्यन्त गम्भीरता से कहा।

हमीद बौखलाकर उसे घूरने लगा।

इतने में टेलीफोन की घन्टी बज उठी। विनोद ने रिसीवर उठा लिया।

"हेलो...हाँ, विनोद ही बोल रहा है...ओह...आप हैं...जयहिन्द ...क्या ?" बिल्कुल ऐसा लगा मानो विनोद के शरीर में बिजली का तार लग गया हो। वह आँखें फाड़े मुँह खोले सुनता रहा, फिर बोला "देखिये ! इस घटना से अवश्य किसी ने अनुचित लाभ उठाया है...विश्वास कीजिये...यह असम्भव है।"

वह फिर दूसरी ओर से बोलने वाले की बातें सुनने लगा। हमीद को विनोद की यह बात बड़ी बुरी लगी थी। वह जाने के लिये मुड़ा, किन्तु विनोद ने बड़ी व्याकुलता से हाथ उठा कर उसे रुकने का संकेत किया। जब हमीद इस पर भी न माना तो विनोद ने माउथपीस पर हाथ रखकर बड़े कर्कश स्वर में कहा।

"ठहर जाओ।"

हमीद रुक गया।

विनोद ने माउथ पीस में कहा "मैं अभी उपस्थित होता हूँ। उसे भी लाऊँगा।"

उसने रिसीवर रखकर हमीद की गर्दन पकड़ ली "जाते कहाँ हो! अब तुम कहीं नहीं जा सकते।"

"क्षमा कीजियेगा—मैं गम्भीर हूँ—" हमीद बड़े रुखे स्वर में बोला।

"मैं भी गम्भीर हूँ, और हो सकता है कि मेरी गम्भीरता तुम्हें फांसी तक पहुँचा दे।"

हमीद कुछ नहीं बोला। क्रोध के कारण उसका मुख लाल हो रहा था। ऐसा मालूम हो रहा था जैसे वह अपनी जबान रोकने के लिये पूरी शक्ति से काम ले रहा हो।

"अभी अभी डी० आई० जी० ने फोन पर सूचना दी है कि ग्रेटा मर गई।"

"क्या।" हमीद घबड़ाकर एक कदम पीछे हट गया।

"हां—उसकी लाश स्प्रिंग काटेज में पड़ी हुई है। पुलिस वहाँ पहुँच चुकी है और डी० आई० जी० साहेब भी उपस्थित हैं।"

"डी० आई० जी० का वहाँ क्या काम?" हमीद ने चकित होकर पूछा।

"तुम्हारे कल वाली सन्ध्या की उधम बाजी की रिपोर्ट उन्हें भी मिल चुकी थी। अतः जब उन्हें यह मालूम हुआ कि ग्रेटा की मृत्यु सांप के काटने के कारण हुई है तो वह···।"

"सांप!" समीद भयभीत होकर बोला।

"हां—उसके दाहिने पैर में सांप के काटने का निशान मौजूद है।"

"अवश्य मुझे किसी ने फंसा दिया—" हमीद बोला।

"विनोद तो पागल है!" विनोद ने व्यंग करते हुये कहा "उसे

तो बेकार संदेह करने की आदत पड़ गई है। वह गलत सोचता है! मगर हमीद साहेब! यह क्या हुआ!"

हमीद कुछ नहीं बोला। उसका मुख मण्डल पीला पड़ गया।

"ग्रेटा के नौकरोंने भी तुम्हारे विरुद्ध गवाही दी है। और एक आदमी और है कैलब...कल उसने भी तुम्हारे हाथ में सांपों का थैला देखा था।"

"यह तो बहुत ही बुरा हुआ—" हमीद कांपता हुआ बोला।

"बुरे से भी अधिक बुरा—" विनोद चिन्तित होकर बोला "खैर तुम जल्दी से तैयार हो जाओ हमें वहाँ इसी समय पहुँचना है।"

"मैं भी चलूँ!"

"हाँ—तुम चिन्ता मत करो—तुम कभी कभी विनोद को बुद्धू समझने लगते हो ना। अब मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि विनोद क्या है।"

"मैं तो बड़े खतरे में घिर गया।"

"तुम्हरी इस मूर्खता से अपराधी सावधान हो गये और उन्होंने न केवल ग्रेटा को ठिकाने लगा दिया बल्कि तुम्हें भी विपत्ति में फँसा गये। अब हमारे पास उनका कोई सुराग नहीं है। ग्रेटा एक अच्छा साधन थी। खैर मैं देखूँगा। जल्दी तैयार हो जाओ।

हमीद सचमुच बौखला गया। वह साहस हीन नहीं था कायर भी नहीं था, मगर जब वह यह देखता कि वह कानुन के बन्धन में आने वाला है तो बड़ी जल्दी घबड़ा जाता था। परिस्थिति का विचार करते हुये तो हमीद ही को ग्रेटा की मृत्यु का उत्तरदायी समझा जा सकता था क्योंकि कोई अदालत इसे स्वीकार नहीं करती कि सारे साँप विष रहित रहे होंगे—और न इसी बात का कोई ठोस प्रमाण इकात्रित किया जा सकता था कि हमीद सारे सांप समेट लाया होगा सम्भव था कि एक आध कहीं छिपा हुआ रह गया हो।

थोड़ी देर के बाद विनोद की केडी लाक सड़क पर फराटे भर रही थी।

"तुमने सांप किस कैज से निकाले थे !" विनोद ने पूछा।

"कैज नम्बर ४ से—" हमीद बोला "मुझे विश्वास है कि उस कोई विषैला नहीं।"

"ठीक है—मैं उन्हें देखता हूँ—" विनोद बोला।

फिर दोनों मौन हो गये। वह दोनों ही चिन्तित थे।

स्प्रिंग काटेज के सामने कई पुलिस कारें खड़ी थीं और फाट पर दो सिपाही तैनात थे। विनोद और हमीद को कार से उतर देखकर दोनों सीधे खड़े हो गये।

क्या डी० एस० पी० साहब भी हैं ?" विनोद ने पूछा।

"जी हां।" एक सिपाही बोला।

वह दोनों अन्दर आये। यहाँ सात आठ पुलिस वालों के अति रिक्त गुप्त विभाग के डी० आई० जी भी उपस्थित थे। डी० एस० पी ने हमीद को देखकर मुँह फेर लिया।

"लाश अन्दर है—" डी० एस० पी० ने विनोद से इस भाव कहा मानों वह मुर्दा उठाने का कार्य करता हो। आजकल फिर दोनों में खटपट हो गई थी।

"मेरे साथ आओ—" डी० आई० जी० ने विनोद और हमी की ओर देखते हुए कहा।

वह उन्हें उस कमरे में लाया जहा ग्रेटा की लाश पड़ी हुई थी। हमीद ने उसे भयपूर्ण नेत्रों से देखा। वह चित्त पड़ी हुई थी। उस शरीर पर रात को पहिन कर सोने वाला कपड़ा था। मगर यह सोने वाला कमरा नहीं था, बल्कि वही कमरा था जहां हमीद ने गत संध्या को अपने करतब दिखाये थे।

"सबसे पहले लाश किसने देखी ?" विनोद ने पूछा।

डी० आई० जी० उसे आश्चर्य से देखने लगा, फिर उसने विनोद से पूछा "क्या तुम्हें विश्वास है कि लाश ही देखी गई होगी ?"

"जी हाँ—मुझे विश्वास है किसी ने उसे चीखते भी न
ना होगा—और नौकरों ने इसकी लाश प्रातःकाल यहीं पाई
गी।"

"तो तुम्हें विवरण मालूम हो चुका है!" डी० आई० जी० ने
हा।

"जी नहीं, मुझे केवल उतना ही मालूम है, जितना आपने मुझे
फोन पर बताया था—उसके बाद ही मैं यहाँ चला आया। यह बात
मैंने लाश देखकर कही है। यह कदाचित ड्राइंग रूम है।"

विनोद मौन होकर चारों ओर देखने लगा।

"इसे जाने दो—" डी० आई० जी० बोला 'मैं कल सन्ध्या
वाली घटना और उधम बाजी के सम्बन्ध में बातें करना चाहता
हूँ।"

"कल वाली उधम बाजी!" विनोद सांस खींचकर बोला "हमीद
ने वह सब कुछ मेरी एक स्कीम के अन्तर्गत किया था।"

"तुम्हारी स्कीम!

"जी हां—ग्रेटा एक खतरनाक स्त्री थी।"

"मैं ठीक कह रहा हूँ। नखों वाली बीमारी में उसी का हाथ
था।"

डी० आई० जी० कुछ क्षण तक उसे आश्चर्य से देखता रहा,
फिर बोला "बहुत अधिक सोचने वाले पागलपन की बातें करने
लगते हैं।"

"आपने सदैव मेरे प्रति यही विचार प्रदर्शित किया है—"
विनोद मुस्कुराकर बोला।

इतने में डी० एस० पी० ने अन्दर आने की आज्ञा मांगी।

"थोड़ी देर रुकिये—" डी० आई० जी० ने हाथ उठाकर कहा
और वह वापस चला गया।

"हां—वह नखों वाली बीमारी का क्या बात थी?" डी० आई० जी० ने पूछा।

इस प्रश्न पर विनोद ने अब तक जितनी छान-बीन की थी उ संक्षेप में बताते हुये कहा "अब आप ही बताइये कि मैं इसे संयो कैसे मान लूँ जब कि ग्रेटा एक दो नहीं बल्कि हर स्थान पर र और वह पांचों मरने वाले राष्ट्र निर्माण योंजना में पूरा-पूर सहयोग दे रहे थे। अभी तक कोई साधारण आदमी उस बीमारी का शिकार नहीं हुआ।"

विनोद मौन हो गया और डी० आई० जी० कुछ सोचता रहा फिर विनोद बोला।

"ग्रेटा एक साधन थी उस शक्ति का, जिसने हमारे देश के पांच रत्नों को मौत की नींद सुला दिया। जब उसने देखा कि हम लोग ग्रेटा में दिलचस्पी ले रहे हैं तो उसने ग्रेटा को भी टिकाने लगा दिया, क्योंकि उस शक्ति तक पहुँचने के लिये हमारे पास ग्रेटा ही एक मात्र साधन थी। अब हमारे पास इस शक्ति के विरुद्ध कोई प्रमाण नहीं है।

"वह तो ठीक हो सकता है, मगर क्या यह सम्भव नहीं कि एक सांप यहां रह गया हो? नौकरों का बयान है कि उन्होंने इसी कमरे में सांप देखे थे।"

"लाश भी उन्होंने यहीं पड़ी पाई थी?" विनोद ने पूछा।

"हाँ।"

"डाक्टर को विश्वास है कि यह सांपों ही के दांतों का निशान है?"

"हां।"

"मरे हूये कितना समय बीता?"

"इसकी मृत्यु रात को दस और एक बजे के मध्य किसी समय हुई।"

"तो इसका अर्थ यह हुआ कि ग्रेटा रात को दस बजे के बाद किसी भी समय अपने सोने वाले कमरे से उठकर यहां आई और साँप ने इसे डस लिया—लेकिन वह चीखी भी नहीं, और चुपचाप मर गई !"

"सम्भव है नौकरों ने चीख न सुनी हो—" डी० आई० जी० बोला "वह फाटक के पास बने हुए कमरों में सोते हैं। ग्रेटा इस बङ्गले में अकेली थी।"

"देखिये ! अब यहां कई प्रश्न पैदा होते हैं। पहला तो यह कि परसों रात को इस बँगले में चोरी हो चुकी है, उसके बाद भी ग्रेटा का इस बङ्गले में अकेली सोना क्या आश्चर्य जनक नहीं ? उचित तो यह था कि चोरी वाली रात के बाद ग्रेटा नौकरों को भी इसी बँगले ही में सुलाती। खैर इसे छोड़िये। जरा ग्रेटा की लाश को देखिये। इसके शरीर पर रात को पहिन कर सोने वाला वस्त्र है और पैर नंगा है। इसका अर्थ यह हुआ कि यह अपने शयनागृह से उठकर इस कमरे में रात को किसी समय आई थी। अब प्रश्न यह है कि यह नंगे पैर क्यों आई थी ?"

"यह प्रश्न बेकार है। बहुत से लोगों को घर में नंगे पैर चलने की आदत होती है।"

"मैं मानता हूँ—लेकिन यहां एक बात ध्यान देने योग्य है। वह यह कि यदि संयोग से किसी घर में साँप दिखाई दे जाता है तो उस घर के लोग हफ्तों रात को नंगे पैर या अन्धकार में चलने का साहस नहीं करते—न कि ग्रेटा ने इसी कमरे में दर्जनों साँप देखे थे और फिर नंगे पैर चली आई। दूसरी बात यह है कि जिस प्रकार हम लोग एक आध साँप यहीं छूट जाने की सम्भावना कर रहे हैं, उसी प्रकार क्या ग्रेटा के सामने यह बात नहीं रही होगी ? साँप अधिक थे, उनमें से एक आध छूट सकता था, हालां कि ऐसा नहीं हुआ। मेरे कहने का सारांश यह है कि अपने शयनागृह से यहां तक रात

में ग्रेटा के नंगे पैर आने का कारण समझ में नहीं आ रहा है।"

विनोद मौन होकर चारों ओर देखने लगा, फिर बोला।

"मैं नौकरों से कुछ पूछना चाहता हूँ।"

दोनों नौकर बुलवाये गये। वह दोनों भयभीत थे।

"तुममें से पहले लाश किसने देखी थी?" विनोद ने पूछा।

"मैंने—" एक ने कहा!

"क्या समय था।"

"सुबह के छः बज रहे थे।"

"क्या यह बल्ब जल रहा था?" विनोद ने छत से लटकते हुए बल्ब की ओर संकेत करके पूछा।

"पता नहीं—मैंने नहीं देखा।"

"तुमने?" विनोद ने दूसरे नौकर से पूछा।

"मैंने भी नहीं देखा—दूसरा बोला।"

इसके बाद विनोद ने बाहर आकर पुलिस वालों से पूछा, किन्तु उनमें से भी किसी ने बल्ब को जलता हुआ नहीं देखा था। डाक्टर जा चुका था। विनोद ने उसे भी फोन करके यही प्रश्न किया। डा० ने भी उत्तर दिया कि उसने बल्ब को जलता हुआ नहीं देखा था। अन्त में डी० आई० जी० ने तंग आकर पूछा।

"आखिर इस प्रश्न से तुम क्या मालूम कर सकोगे।"

"कुछ नहीं। मैंने यह बात मालूम कर लिया कि यह बल्ब जल नहीं रहा था।

"फिर?"

"फिर यह कि काम करने वाला यहाँ जरा सा चूक गया! उसे चाहिये था कि लाश यहां डालने के बाद बल्ब जला देता। इससे थोड़ा बहुत धोखा तो हम खा ही सकते हैं। ग्रेटा नंगे पैर अन्धेरे में इस कमरे में आई—यह बात एक मूर्ख आदमी भी मानने के लिये तैयार नहीं हो सकता, जब कि वह सांपों को इसी कमरे में देख चुकी

—खैर...यह तो बताइये कि किसी ने उसका सोने वाला कमरा भी देखा ?"

"नहीं...क्यों ?"

"मेरा विचार है कि सांप ने वहीं काटा होगा—" विनोद बोला।

फिर वह डी० आई० जी० को लेकर ग्रेटा के सोने के कमरे में आया और पलङ्ग पर एक नजर डालने के बाद डी० आई० जी० बोला।

"काम करने वाले ने यहां भी ठोकर खाई है, कदाचित वह बहुत जल्दी में था। देखिये बिस्तार पर शिकन मौजूद है। ऐसा मालूम होता है जैसे इस पर सोने वाली ग्रेटा बड़ी व्याकुलता से मचलती रही हो। मेरा विचार है कि एक आदमी ने उसका मुख दबाये रक्खा और दूसरे ने उसके पैर के अँगूठे से सांप का मुंह लगा दिया —लेकिन इसकी भी क्या आवश्यकता थी। निशान बनावटी दांतों से डालकर जहर का इन्जेक्शन भी तो दिया जा सकता है। भला इतने खतरनाक सांप कौन साथ लिये फिरेगा।"

कोई कुछ नहीं बोला। विनोद ने आगे बढ़कर मेज की दराजें खोलीं और उसमें रक्खी हुई वस्तुओं को बड़ी तेजी से उलटता पलटता गया, किन्तु उसे वह शीशी नहीं मिली, जिसमें उसने गत रात्रि को कई रङ्गों के कैपसूल देखे थे।

"अब क्या कर रहे हो तुम ?" डी० आई० जी० ने पूछा।

"मुझे एक वस्तु की तलाश है, जिसके बारे में मैं फिर कभी आप से बताऊंगा। मुझ पर विश्वास रखिये और लाश को पोस्टमार्टम के लिये भिजवा दीजिये। मै एक बहुत भयङ्कर षड़यन्त्र की गन्ध पा चुका हूँ।"

—तीन मूर्तियां

पता नहीं डी० आई० जी० विनोद के तर्क से सन्तुष्ट हुआ था नहीं, मगर उसने इस बारे में फिर और कुछ नहीं पूछा। डी० एस० पी० ने हमीद से कुछ पूछना चाहा, किन्तु डी० आई० जी० ने उसे रोक दिया। विनोद पर उसे पूरा विश्वास था, और वह जानता था कि चाहे कुछ भी हो, विनोद उसके विश्वास को आहत नहीं कर सकता। जिस दिन ग्रेटा की लाश मिली थी उसी रात को एक विचित्र घटना घटी, जिसकी सूचना पुलिस को दूसरे दिन सबेरे मिली। कोतवाली में उपस्थित होने वाले शहर के एक कब्रिस्तान (वह स्थान जहां मुसलमानों के मुर्दे गाड़े जाते हैं) के रक्षक थे। उन्होंने बताया कि पिछली रात कुछ लोग कब्रिस्तान में आये, और उन्होंने एक कब्र खोदनी आरम्भ की। यह बात रक्षकों के लिये आश्चर्यजनक थी अतः वह पता लगाने के लिये वहां पहुँचे तो कई रायफलों की नालें उनकी ओर उठ गईं। उनसे कहा गया कि वह चुप रहें, नहीं तो उनमें से कोई भी जीवित नहीं बचेगा।

कब्र खोदकर उन आदमियों ने एक लाश निकाली, जिससे दुर्गन्ध आ रही थी। उन्होंने उस सड़ती हुई लाश से बहुत सा मांस काटकर एक विचित्र प्रकार के वर्तन में रक्खा, और लाश को वहीं छोड़कर चले गये। रक्षक जहां थे वहीं खड़े रहे, उनमें उनमें से किसी ने भी आगे बढ़ने का साहस नहीं किया।

www.freehindinovel.blogspot.com

पुलिस वालों के लिये यह आश्चर्यजनक सूचना थी। इधर पुलिस वाले तहकीकात करने के बाद कब्रिस्तान से निकले और उधर सारे शहर में आतंक छा गया। आतंक छाने का मुख्य कारण यह था कि वह लाश पहचान ली गई थी। वह नखों वाली बीमारी के चौथे शिकार डाक्टर रशीद की लाश की जो कीटाणुओं का विशेषज्ञ था।

पुलिस वालों के लिये यह घटना विचित्र थी, किन्तु विनोद के लिये उससे भी कुछ अधिक। जैसे ही उसे सूचना मिली वह हमीद को लेकर कब्रिस्तान पहुँच गया। लाश अब भी कब्र के बाहर पड़ी हुई थी, और इतनी अधिक दुर्गन्ध फैल रही थी कि नाक देना दुष्कर था। हमीद तो लाश के समीप भी नहीं गया, किन्तु विनोद नाक पर रूमाल रक्खे कई मिनट तक उस पर झुका रहा, फिर उसने लाश के पास ही से कोई वस्तु उठाई और अलग हट आया।

"कूल्हों का मांस काटा गया है—" उसने हमीद से कहा।

"अब चलिये भी —यहाँ कितनी दुर्गन्ध है।"

"हाँ—चलो—" वह दोनों कब्रिस्तान से निकल आये।

"मगर इसका क्या अर्थ हो सकता है?" हमीद ने पूछा।

"मैं खुद नहीं समझ सका। मगर एक बात है कि अपराधी काफी चतुर जान पड़ते हैं। हो सकता है कि उन्होंने हमें उलझाने के लिये यह सब किया हो...जो भी हो, लेकिन अपराधियों को मालुम हो चुका था कि मैं ग्रेटा पर किसी प्रकार का सन्देह कर रहा था।"

"और ग्रेटा के मर जाने के बाद हमारे लिये सारे मार्ग बन्द हो चुके हैं—" हमीद बोला।

"हाँ।"

"अरे! आप प्रोफेसर राक को क्यों छोड़ रहे हैं?"

"मैं सबको बारी बारी देखूँगा। अभी वह ऐंग्लो इन्डियन भी तो है।"

"कौन ! कैलब !"

"हाँ—मगर हमीद ! एक बात समझ में नहीं आती कि आखिर उस रात स्प्रिङ्ग काटेज में दूसरा आदमी कौन था।"

"किस रात !"

"जिस रात को मैंने ग्रेटा के सर्टीफिकेट चुराये थे। वह भी चोरों ही के समान घुसा था, और कदाचित उसे भी किसी वस्तु की तलाश की।"

"यह बात भी ध्यान देने योग्य है—" हमीद बोला "अगर वह अपराधियों में से ही कोई था तो फिर उसका वह कार्य आश्चर्य जनक था।"

विनोद कुछ नहीं बोला। वह दोनों केडीलाक में बैठकरवहाँ से चल दिये। मार्ग में विनोद ने कहा।

"ग्रेटा की मृत्यु के बाद मैंने उन रंगीन कैपसूलों के लिये पूरा मकान छान डाला मगर वह नहीं मिले।"

"आखिर आपको कैपसूलों का इतना ध्यान क्यों है।"

"मिस्टर हमीद ! इस केस में सबसे महत्वपूर्ण वही कैपसूल ही हैं। आज सन्ध्या को डी० आई० जी० के सामने मैं तुम्हें उन कैपसूलों का तमाशा दिखाऊँगा।"

"तो क्या आपका विचार यह है कि उन्हीं कैपसूलों द्वारा ही शराब तक विष पहुँचाये जाते रहे हैं।"

"हां—इसके अतिरिक्त और भी बहुत कुछ। बस सन्ध्या ही को देखना। तुम्हारी सांपों वाली मूर्खता के आधार पर मुझे डी० आई० जी० का भी तो सन्देह दूर करना है।"

एक स्थान पर विनोद ने केडी रोक दी, और हमीद से उतरने को कहा। फिर थोड़ी देर के बाद वह एक इमारत के सामने खड़े

थे, ज़िसके दरवाजे पर प्रोफेसर राक के नाम का बोर्ड लगा हुआ था।

विनोद ने घन्टी बजाई। काफी देर के बाद प्रो० राक स्वयं बाहर निकला। हमीद ने देखा कि उसका हुलिया ही बदला हुआ है। प्रोफेसर के नेत्र फूले हुये थे, ठीक उसी प्रकार जैसे अधिक रोने के कारण हो जाते हैं। नेत्रों के अन्दर गहरी लाली थी।

"क्या है !" उसने क्रोधित होकर पूछा।

"क्या तुमने हमें पहचाना नहीं !"

"नहीं।" प्रो० राक बोला।

उसकी नहीं पर विनोद ने नियाग्रा होटल से वापसी वाली कहानी उसे याद दिलाई।

"ओह—तो तुम वह हो—सारी विपत्तियों का कारण। अब मैं तुम्हें जीवित नहीं छोड़ूंगा। तुमने मेरा जीवन नष्ट कर दिया।"

राक का क्रोध और तीव्र हो गया था। उसके नेत्र आग के अँगारों के समान लाल हो उठे। वह कुछ क्षण तक विनोद को घूरता रहा, फिर उसने बालकों के समान फूट फूटकर रोना आरम्भ कर दिया।

"क्या बात है प्रोफेसर !" विनोद ने उसके कन्धे पर हाथ रख दिया, लेकिन उसने विनोद का हाथ झटक दिया।

"जाओ—बस चले जाओ—" प्रो० राक चीखकर बोला—"क्या नहीं सुनते ! बहरे हो गये हो—जाओ यहां से चले जाओ।"

हमीद चकित होकर उसे घूरता रहा।

"क्या बात है प्रोफेसर ! तुम कुछ परेशान दिखाई दे रहे हो।" विनोद ने नम्रता से पूछा।

"चले जाओ— तुमने मेरा सुख छीन लिया, मेरी शान्ति छीन ली।"

"मैंने ! क्या कह रहे हो प्रोफेसर ! मैंने क्या किया !"

"क्या तुमने ही मुझे ग्रेटा के पीछे नहीं लगाया था।" राक रोने लगा।

"तो इसमें रोने की क्या बात है प्रो० !"

"मैं रोता नहीं हूँ—" राक चिल्लाकर बोला और आँसू पोंछता हुआ अन्दर भाग गया।

हमीद ने चकित होकर विनोद की ओर देखा

"आओ!" विनोद आगे बढ़ता हुआ बोला।

वह दोनों अन्दर चले गये। दिन के प्रकाश में भी गलियारा अन्धकारमय था। वह दोनों शीघ्र ही राक के पास पहुँच गये जो सोफे पर औंधा पड़ा फूट फूटकर रो रहा था। वह दोनों चुप चाप खड़े रहे।

अचानक राक सीधा हो गया और आंसू पोंछता हुआ बोला।

"जाओ! क्यों मेरे पीछे पड़े हो—वह मर गई—" राक ने चीख कर कहा।

"तो उसे मरने दो, तुम इतने परेशान क्यों हो?"

"मैं पागल हो गया हूँ। मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं भी मरना चाहता हूँ। सूखी हुई घासों के ढेर में तुमने एक चिंगारी फेंक कर उसे जला डाला। तुमने मेरा ध्यान ग्रेटा की ओर क्यों आकर्षित कराया था?"

"ओह!" विनोद गम्भीरता से बोला "तो तुम यह कहना चाहते हो कि तुमको ग्रेटा से प्रेम हो गया था... और तुम...!"

"चुप रहो...चले जाओ यहां से...ईश्वर के लिये चले जाओ। मैं पागल हो गया हूँ। मेरी किसी बात पर विश्वास मत करना। मेरा मस्तिष्क मेरे अधिकार में नहीं हैं, किन्तु मैं पूरे विश्वास के साथ कहता हूँ कि ग्रेटा की मृत्यु किसी संयोग पर निर्धारित नहीं की जा सकती।"

"यह तुम कैसे कह सकते हो प्रोफेसर?"

"देखो ! मैं बताता हूँ—लेकिन क्या करोगे सुनकर ! जाओ अब कोई दूसरी सुन्दर स्त्री तलाश करो—तुम्हें मांस ही तो चाहिये—जाओ।"

"प्रोफेसर कदाचित तुम मुझे पहचानते नहीं—" विनोद ने कहा और जेब से अपना परिचय कार्ड निकाल कर उसकी ओर बढ़ा दिया।

"ओह !" प्रोफेसर अचानक गम्भीर हो उठा "तो तुम पुलिस आफिसर हो...तुम मुझसे क्या चाहते हो।"

"तुमने अभी एक बात अपने पूरे विश्वास के आधार पर कही थी।"

"मय—मैं—" राक हकलाया। उसके चेहरे का रंग फीका पड़ गया।

"हां प्रोफेसर ! तुम बहुत बुद्धिमान हो, और एक बुद्धिमान आदमी कोई बात बिना प्रमाण के नहीं कहता—तुमने किस प्रमाण के आधार पर यह कहा था कि ग्रेटा की मृत्यु संयोग पर निर्धारित नहीं की जा सकती !"

"मैं पहले ही कह चुका हूँ कि मेरा मस्तिष्क मेरे अधिकार में नहीं है।"

"तो अब तुम कानून को धोखा देने का प्रयत्न कर रहे हो—" विनोद बोला।

राक ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह सर झुकाये चुपचाप बैठा रहा।

"नहीं नहीं—प्रोफेसर अवश्य बतायेंगे—" हमीद बोला।

"सर्टीफिकेट की चोरी का क्या अर्थ है !" अचानक राक ने प्रश्न किया।

"यह अभी तक किसी की समझ में नहीं आया।"

akfunworld

"एक दिन पहले उसके सर्टीफिकेट चुराये गये और दूसरी रात उसे सांप ने डस लिया।"

"विवरण रहने दो—" विनोद बोला "केवल यह बताओ कि तुम उसकी मृत्यु को संयोग पर क्यों निर्धारित नहीं कर रहे हो ?"

"बस वैसे ही ! आखिर चोर को उसके सर्टीफिकेट से क्या मिलेगा ?"

"प्रोफेसर ! इस से काम नहीं चलेगा। मैं ग्रेटा की मृत्यु के बारे में जांच कर रहा हूँ, मुझे भी इस बात का विश्वास है कि ग्रेटा की मृत्यु संयोग पर निर्धारित नहीं की जा सकती, लेकिन इसके लिये मेरे पास ठोस प्रमाण है।"

"ओह ! तो फिर मुझे क्यों परेशान कर रहे हो ?"

"इसलिये कि सम्भव है तुम्हारा प्रमाण अधिक जानदार हो और मैं उसी के आधार पर अपराधियों तक पहुँच सकूं।"

"ठहरो !" राक अपना सर पकड़ कर बोला "तुमने मुझे बड़ी उलझन में डाल दिया है मुझे सोचने दो।"

वह थोड़ी देर तक सर झुकाये बैठा रहा फिर सर उठाकर बोला।

"क्या तुम मेरी बातों पर विश्वास करोगे ?"

"क्यों नहीं !"

"मान लो कि मैं यह कहूँ कि चोरी वाली रात को मैं भी स्प्रिंग काटेज में मौजूद था !"

"तुम—अर्थात ग्रेटा की उपस्थिति में !"

"नहीं—उस समय जब चोर कदाचित उसके सर्टीफिकेट तलाश कर रहा था।"

"क्या ग्रेटा को तुम्हारी उपस्थित के बारे में मालूम था ?"

"नहीं—मैं आज तक उससे मिला ही नहीं !"

"फिर तुम वहाँ क्या करने गये थे !"

"मैं भी चोरी ही करने गया था !"

"चोरी करने !" विनोद ने चकित होकर उसकी बात दोहराई।

"हां, मेरा दिमाग उलट गया है—ठहरो! मैं वह वस्तु तुम्हें दिखाता हूँ जो मैंने वहां से चुराई थी।"

प्रोफेसर राक उन दोनों को वहीं छोड़कर दूसरे कमरे में चला गया। विनोद और हमीद चुपचाप एक दूसरे को देखते रहे।

कुछ देर बाद प्रोफेसर आ गया। उसके हाथ में एक लिफाफा था जिसे विनोद की ओर बढ़ाते हुये उसने कहा।

"मैंने यह चुराया था केवल यही—क्या यह पागलपन नहीं है। लेकिन इसी लिफाफे में मुझे एक पत्र भी मिला था इसे पढ़ो इसी आधार पर मैंने यह बात कही थी।"

विनोद ने लिफाफा खोला। उसमें उसको दो वस्तुयें मिलीं। एक तो ग्रेटा का चित्र था और दूसरा टाइप किया हुआ एक पत्र था विनोद ने उसे पढ़कर हमीद की ओर बढ़ा दिया लिखा था।

"ग्रेटा !"

अगर तुमने मेरी बात नहीं मानी तो इस प्रकार मारी जाओगी कि सुनने और देखने वालों के रोयें खड़े हो जायेंगे। यह मेरी अंतिम चेतावनी है।

पी० सी०"

हमीद ने प्रश्नात्मक दृष्टि से विनोद की ओर देखा।

"तो तुम इस चित्र के लिये वहां गये थे ?" विनोद ने राक से पूछा।

"अब समाप्त करो—" राक झल्लाकर बोला "क्यों मुझे बार बार लज्जित कर रहे हो। प्रत्येक आदमी में कुछ न कुछ कमजोरी होती ही है !"

"मगर प्रोफेसर ! तुम स्प्रिंग काटेज में घुसे कैसे थे !"

"ओह !" राक अपने बाल नोचता हुआ बोला "क्या तुम भी पागल हो गये हो।"

"अच्छा यह बताओ कि वह आदमी कौन था जिसने ग्रेटा की सिफारिश करने के लिये तुमसे कहा था ?"

"मुझे उसका नाम याद आ गया है मगर तुम उस आदमी को जानकर क्यों लाभ उठा सकोगे !"

"प्रोफेसर ! मैं अपने प्रश्नो का सीधा और साफ उत्तर चाहता हूँ।"

"वह आदमी कैलब था।"

"कैलब !" हमीद चौंक पड़ा।

"बस एक बात और—" विनोद ने जेब से नोटबुक निकालते हुये कहा "कैलब का पता मुझे नोट करा दो।"

"नम्बर १३—प्रिन्स स्ट्रीट।" राक ने कहा।

"अच्छा—धन्यवाद—" विनोद मेज से लिफाफा उठाता हुआ बोला "मैं इसे लिये जा रहा हूँ !"

"नहीं—" राक उछल कर खड़ा हो गया "तुम तस्वीर नहीं ले जा सकते।"

"यह मत भूलो कि तुम इसे चुराकर लाये थे—" विनोद मुस्कुरा कर बोला।

"तो लगाओ न मेरे हाथों में हथकड़ियाँ ! सड़क पर ले जाकर अपमानित करो। मैं तुम्हें रोकता नहीं हूँ।"

विनोद ने लिफाफे से तस्वीर निकाल कर राक को दे दी—फिर वह और हमीद हँसने लगे। राक गालियां बकने लगा।

वह दोनों हँसते हुए बाहर निकल आये।

कैडी में बैठते ही एक बार फिर हमीद पर हँसी का दौरा

www.akfunworld.wordpress.com

पड़ा।

"क्यों ! क्या बात है ?" विनोद ने पूछा।

"साले पर बुढ़ापे में इश्क सवार हुआ है।"

"बुढ़ापे में शरीर के समस्त अङ्ग कमजोर हो जाते हैं और इश्क भी एक कमजोरी का नाम है।"

कैडी लाक प्रिंस स्ट्रीट की ओर जा रही थी और हमीद बार-बार प्रोफेसर राक की बोखलाहट याद कर करके हंस रहा था।

"चलो यह भी समस्या हल हो गई—"

"कौन सी ! हमीद ने पूछा।

"यही कि उस रात को स्प्रिङ्ग काटेज में मेरे अतिरिक्त और कौन था।"

प्रिंस स्ट्रीट में कोठी नम्बर १३ के सामने केडीलाक खड़ी हो गई। विनोद ने अपना कार्ड अन्दर भिजवाया। उन्हें अधिक देर तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। नौकर उन दोनों को एक कमरे में लाया जहाँ तीन आदमी पहले से ही उपस्थित थे। कैलब सामने ही बैठा था। हमीद ने उसे पहचान लिया। शेष दो आदमी दीवार की ओर मुख किये खड़े थे, किन्तु जैसे ही वह दोनों इन दोनों के सामने मुड़े, हमीद चकित हो उठा। वह दोनों भी कैलब ही थे। अर्थात एक ही सूरत की तीन मूर्तियाँ—तीन आदमी थे।

—चौथा आदमी

विनोद ने ध्यान पूर्वक उन तीनों को देखा और मुस्कराने लगा। सोफे पर बैठा हुआ आदमी उठा और बोला।

"कहिये ! मैं आप लोगों की क्या सेवा कर सकता हूँ।"

"हमें मिस्टर कैलब से मिलना है—" विनोद बोला।

"किस कैलब से ?" उसने हंसकर पूछा। शेष दोनों कैलब भी मुस्करा रहे थे।

"विनोद ने हमीद की ओर देखा और हमीद ने सर झुका लिया।

"मुझे पहला नाम तो मालूम नहीं—" विनोद बोला।

"यह तो बड़ा कठिन है—" पहले ने कहा "हम चार भाई हैं और चारों की सूरत एक ही समान है। हम स्वयं कभी-कभी आपस में भी धोखा खा जाते हैं। मेरा नाम हार्डी कैलब है, यह मोरेन्डन कैलब है और यह हैंगर कैलब है। चौथा जो यहाँ नहीं है उसका नाम आस्कर कैलब है।"

विनोद और हमीद ने फिर एक दूसरे की ओर देखा।

"मुझे उस कैलब से मिलना है, जिसका सम्बन्ध ग्रेटा से था—" विनोद बोला।

"कौन ! वह नर्तकी, जिसे सांप ने डस लिया था ?"

"हाँ !"

"वह कैलेब मैं तो नहीं हो सकता—" पहले वाले ने कहा "क्या तुम दोनों में से कोई था ?" उसने दूसरे दोनों से पूछा।

"नहीं—" दोनों ने एक साथ उत्तर दिया।

"तब तो वह आस्कर कैलब ही हो सकता है—" पहले वाले ने विनोद से कहा "मगर बात क्या है आफिसर ?"

"हमें ग्रेटा के सम्बन्ध में कुछ बातें मालूम करनी थी।"

"ओह...लेकिन आस्कर कैलब तो इस समय उपस्थित नहीं है।"

"अच्छी बात है...जब वह आयें तो उसे मेरे आफिस में भेज देना। मैं अपना कार्ड छोड़े जा रहा हूँ।"

"आप अपना सन्देश कार्ड के पीछे लिख दीजिये नहीं तो वह कभी विश्वास नहीं करेगा। यही समझेगा कि हम उसे घिस रहे हैं !"

विनोद ने कार्ड लेकर उसकी दूसरी ओर लिख दिया।

फिर वह वहाँ से चल दिये। मार्ग में दोनों मौन थे। वास्तव में उन दोनों ही को एक दूसरे के रिमार्क की प्रतीक्षा थी। अन्त में हमीद ही बोला।

"यह एक ऐसी आश्चर्य जनक घटना थी कि बुद्धि नहीं काम कर रही है।"

"लेकिन मुझे आश्चर्य नहीं है—" विनोद बोला "कभी कभी एक सूरत शकल के दो आदमी दिखाई दे जाते हैं—और फिर वह तो सगे भाई हैं। अगर उनकी सूरतें मिलती जुलती हैं या एक जैसी हैं तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है।"

"मगर उस्ताद! मेकअप तो नहीं था।"

"मैं इस सम्बन्ध में विश्वस्त रूप से कुछ नहीं कह सकता। कमरे में इस प्रकार का प्रकाश था कि मैं कुछ समझ ही नहीं सका। यह नीले रंग की मरकरी लाइट बड़ी बेकार वस्तु है—लेकिन इतना तो अवश्य कहूँगा कि उस कमरे का वातावरण बड़ा विचित्र था। जब हम लोग वहाँ पहुँचे तो वह दोनों दीवार की ओर मुख किये खड़े थे, और तीसरे का मुख दरवाजे की ओर था। हमारे प्रवेश करते ही वह दोनों इस प्रकार मुड़े थे जैसे हमें चकित करना चाहते रहे हों।

"तो फिर हमें वहाँ से इस प्रकार नहीं चले आना चाहिये था।"

"चिन्ता न करो। यह बेकार नहीं जायेगा—" विनोद बोला।

उसी दिन संध्या को विनोद के विभाग का डी० आई० जी० उसकी प्रार्थना पर उसकी कोठी में आया। विनोद ने सारी व्यवस्था पहले से ही ठीक कर रक्खी थी। उसे वास्तव में डी० आई० जी० का इस बात का विश्वास दिलाना था कि नखों वाली बीमारी के प्रति उसका जो सन्देह है वह निर्मूल नहीं है। अगर हमीद ने सांपों वाली उधम बाजी करके अपनी पोजीशन खतरे में न डाल ली होती तो विनोद अभी कुछ नहीं बताता। अब उसे हमीद की पोजीशन साफ

करनी थी और इसके लिये विनोद को अपना भेद खोलना आवश्यक हो गया था। यद्यपि विनोद की प्रार्थना पर उसके विभाग ने इस बात की व्यवस्था कर ली थी कि ग्रेट की मृत्यु के सिलसिले में हमीद का नाम समाचार पत्रों में न आये किन्तु फिर भी विनोद के आफिसरों का सन्देह दूर नहीं हुआ था।

डी० आई० जी ने विनोद के अनुभव शाला में पहुँच कर वहाँ की सारी वस्तुयें देखीं और विनोद से कहा।

"यह तो सचमुच एक पूरी लेबोरेट्री है। भला तुम्हारे सामने कौन टिक सकता है।"

"बस शौक ही तो है—" विनोद मुस्करा कर बोला।

फिर उसने हमीद को संकेत किया। हमीद ने आगे बढ़कर आल्मारी खोली और उसमें से शराब की कुछ बोतलें निकालीं, कुछ गिलास निकाले और एक सोडे का साइफन! डी० आई० जी० बड़े आश्चर्य से यह सब देखता रहा फिर बोला।

"तुम जानते हो कि मैं शराब नहीं पीता।"

"मैं भी नहीं पीता, किन्तु इस परीक्षण के लिये शराब का होना आवश्यक है।"

हमीद के बोतलें खोल-खोल कर कई गिलास भरे। विभिन्न रङ्ग की थीं।

"अब यह देखिये! यह कुछ कैपसूल हैं—" विनोद ने कहा और कई रङ्गों के कुछ कैपसूल डी. आई. जी. के सामने रखता हुआ बोला "यह ग्रेटा के पास थे। यह सब एक ही शीशी में रक्खे हुये थे, लेकिन ग्रेटा के मरने के बाद वह शीशी नहीं मिली, जिसमें यह थे। अब आप यह सोच रहे होंगे कि यह कैपसूल मेरे पास कैसे पहुँचे।"

विनोद एक क्षण के लिये रुका, फिर उसने स्प्रिंग काटेज में उस

रात की तलाशी की कहानी दुहरा दी, किन्तु यह नहीं बताया कि सर्टीफिकेट उसी ने चुराये थे।

"लेकिन तुम्हारा यह काम बिल्कुल गैर कानूनी था—" डी० आई० जी० बोला।

"कभी-कभी कानून की रक्षा के लिये कानून को तोड़ना भी पड़ता है।"

डी० आई० जी० कुछ नहीं बोला विनोद ने एक कैपसूल उठा कर कहा, "यह कैपसूल सोडा बाईकार्ब मिले हुये पानी में नहीं घुलते, किन्तु शराब में चाहे जितना सोडा क्यों न मिला दो यह फौरन घुल जाते हैं—ठीक इसी प्रकार—" उसने एक गिलास में लाल रङ्ग का कैपसूल डाल दिया। शराब पानी के रङ्ग की थी इसलिये कैपसूल घुलता हुआ साफ़ दिखाई दिया! वह एक क्षण तक शराब के ऊपर तैरता रहा, फिर घुल गया!

"अब इधर देखिये—" विनोद ने दूसरा कैपसूल खालिस सोडे के गिलास में डालते हुये कहा।

कैपसूल सोडे के ऊपर तैरता रहा विनोद ने कहा।

"यह कभी नहीं घुलेगा। मैंने इसे सोडे में रात भर डाले रक्खा है, लेकिन घुलने को कौन कहे—इसमें जरा सी नर्मी भी नहीं आई।

"खालिस पानी में क्या दशा होती [डी० आई० जी० ने पूछा।

उसमें भी घुल जाता है, किन्तु इतनी तेजी से नहीं, जितनी तेजी से शराब में घुलता है"'

"बड़ी विचित्र बात है—" डी० आई० जी० ने कहा "कैपसूल को तो हर प्रकार के तरल पदार्थ में घुल जाना चाहिये, लेकिन यह खालिस सोडे में क्यों नहीं घुलता। यह अभी तक उसी प्रकार तैर रहा है। मेरा विचार है कि कैपसूल चावलों के स्टार्च से बनाये

जाते हैं ?"

"जी हां—लेकिन यह कैपसूल चावलों से नहीं बनाये गये।"

"फिर ?"

"ईश्वर जाने। मैं अभी तक यह नहीं समझ पाया कि यह किस चीज के बनाये जाते हैं, वैसे कुछ कैपसूल शीशे के भी होते हैं। मगर पता नहीं यह किस चीज से बनाया गया है।"

"मगर नखों वाली बीमारी से इस परीक्षण के अनुभव का क्या सम्बन्ध है ?" डी० आई० जी० ने पूछा।

"वही बताने जा रहा हूँ—" विनोद बोला "अगर नखों वाली बीमारी दैवी प्रकोप है तब तो मुझे कुछ नहीं कहना है, लेकिन अगर वह मनुष्य की लाई हुई बीमारी है तो उसके दो ही रूप हो सकते हैं। प्रथम तो यह कि उसके लिये कोई विष प्रयोग किया जाता होगा या फिर किसी विशेष प्रकार के किटाणु। कुछ ऐसे भी विष होते हैं, जिनका निशान नहीं मिलता और इसीलिये पोस्ट मार्टम की रिपोर्ट बेकार हो जाती है। अब रह गये किटाणु, तो मुर्दा शरीर में उनका खोज निकालना बड़ा दुष्कर होता है। कभी-कभी इसका परिणाम भी शून्य ही होता है। मेरे कहने का अर्थ यह है कि चाहे वह विष हो या किटाणु—इस कैपसूलों में रखकर उन्हें बड़ी सरलता से शराब में डाला जा सकता है। और इन्हीं रंग बिरंगे कैपसूलों तथा शहर के बड़े-बड़े विद्वानों की मृत्यु ने मुझे इस बात का विश्वास दिला दिया है कि यह नखों वाली बीमारी आदमी की लाई हुई है। दैवी प्रकोप नहीं है।"

विनोद चुप होकर कुछ सोचने लगा, फिर बोला।

"ग्रेटा का वह नृत्य मैंने भी देखा था। डाक्टर शारदा की मेज पर पीले रङ्ग की मदिरा थी, और ग्रेटा के हाथ में पीले रङ्ग का रेशमी रुमाल भी था, जिसे नृत्य करते समय अपनी चँचलता प्रदर्शित करने के लिये वह तमाशा देखने वालों के सरों पर हिलाती जा रही

थी। अब अगर पीले रङ्ग का एक कैपसूल पीले रङ्ग के रूमाल से निकलकर पीले ही रङ्ग के शराब में गिर पड़े तो किसी को क्या पता चल सकता है। केवल थोड़ी सी हाथ की सफाई चाहिये, और यह तो आप देख ही चुके हैं कि वह शराब में गिरते ही इस प्रकार घुल जाता है जैसे पानी में बरफ का एक छोटा सा टुकड़ा।"

विनोद ने अपनी जेब से पीले रङ्ग का एक रूमाल निकाला और पीले रङ्ग की शराब का गिलास डी० आई० जी० के सामने, रखता हुआ बोला "देखिये! मैं पीले रंग का कैपसूल इस गिलास में डालने जा रहा हूँ। जैसे ही यह गिरे मुझे बता दीजिये।"

विनोद ने ठीक उसी भाव से रूमाल को डी० आई० जी० के चेहरे पर लहराया जैसे ग्रेटा नाचते समय लहराया करती थी। डी० आई० जी० बड़े ध्यान से गिलास की ओर देख रहा था।

"कहिये! कैपसूल गिरा या नहीं?" विनोद ने पूछा।

"नहीं—अभी नहीं।"

विनोद ने हाथ रोक लिया और मुस्कुराकर बोला "श्रीमान जी! वह गिलास में गिर चुका है।"

"मगर मैंने तो नहीं देखा।"

"मैंने कहा था ना कि बस थोड़ी सी हाथ की सफाई चाहिये।"

थोड़ी देर के लिये सन्नाटा छा गया। फिर डी० आई० जी० बोला।

"यद्यपि अभी तक मैं मामिले को ठीक तरह से समझ नहीं सका हूँ, किन्तु फिर भी दो आधारों के कारण तुम्हारी बातों पर विश्वास करने को दिल चाहता है। प्रथम तो यह कि अगर दैविक प्रकोप होता तो फिर इसी शहर तक क्यों सीमित रहता, दूसरे यह कि बड़े ही बड़े लोग क्यों इस बीमारी का शिकार होते।"

"लेकिन आप इस बात पर भी विश्वास कर लीजिये कि आप-

www.akfunworld.wordpress.com

राधी अपनी इस मूर्खता पर पर्दा डालने के लिये शीघ्र ही चेष्टा करेंगे।"

"मैं नहीं समझा—" डी० आई० जी० बोला।

"अब आप उस बीमारी का शिकार होते हुये दो चार साधारण लोगों को भी देखेंगे—" विनोद ने कुछ सोचते हुये कहा "वह लोग सावधान हो गये हैं। अगर ग्रेटा के मामिले में मैं जल्दी न करता तो बहुत अच्छा होता। उनके सावधान हो जाने का सबसे मुख्य प्रमाण यही है कि उन्होंने ग्रेटा को मार डाला।"

"क्या अपराधियों तक पहुँचने का तुम्हारे पास कोई साधन है?"

"जी नहीं...हाँ अगर वह आदमी मिल जाये जिसने साँपों वाले मामिले में हमीद के विरुद्ध गवाही दी है तो शायद कोई सूत्र हाथ लग जाये।"

"वह तो कोई ऐंग्लो इन्डियन था—" डी० आई० जी० ने कहा।

"जी हां...उसका नाम कैलब है—" विनोद बोला।

हमीद सोच रहा था कि विनोद उन तीनों कैलबों की बात भी छेड़ेगा—मगर विनोद उस मामिले में कुछ नहीं बोला। यह उसकी पुरानी आदत थी कि किसी केस के मध्य में वह अपने आफिसरों को पूरी रिपोर्ट नहीं देता था।

"और हां...वह डाक्टर रशीद की लाश का मामिला?" डी० आई० जी० ने पूछा।

"इसके अतिरिक्त और क्या कहा जा सकता है कि अपराधी मामिले को उलझाने का प्रयत्न कर रहे हैं। वैसे सड़ी हुई लाश से मांस काटने का और कोई दूसरा अर्थ तो समझ में नहीं आ रहा है। अब वह यह चाहते हैं कि हम बेकार चकराते फिरें।"

"मैं तुम्हारी बातों का समर्थन करता हूँ—" डी० आई० जी० बोला।

इसके बाद थोड़ी देर तक इधर उधर की बातें होती रहीं। थोड़ी देर के बाद डी० आई० जी० उठकर चला गया।

हमीद बहुत अधिक घबड़ा गया था। उसने कहा।

"आज रात मैं बाहर रहूँगा।"

"नहीं—तुम अकेले कहीं नहीं जा सकते।"

"बड़ी विपत्ति है।"

"बकवास मत करो। मुझे तुम्हारी ऐसी लाश को देखकर बड़ी घिन आयेगी, जिसके सारे नख उठे हुये हों—समझे!"

"मुझे इस केस से उलझन होने लगी है—" हमीद बोला।

"क्यों?"

"इसलिये कि अभी तक हम लोगों की परिस्थिति भी तमाशा देखने वालों ही के समान है। ऐसे केसों में मेरा दिल नहीं लगता। ऐसी जासूसी में मुझे कोई आनन्द नहीं आता।"

"मार पीट और चैलेंज बाजी चाहते हो—है ना?" विनोद मुस्कुराकर बोला "मालूम होता है कि आजकल जासूसी उपन्यास अधिक पढ़ते हो। पुलिस से उलझने वाले आदमी इस जीती जागती दुनिया में कम मिलते हैं। चालाक और बुद्धिमान अपराधी सदैव ऐसे अवसर बचा जाते हैं।"

"होगा—लेकिन इस जीती जागती दुनिया में औरतें तो मिलती हैं। यहां एक थी वह भी साफ हो गई।"

बिनोद झल्लाकर कुछ कहने ही वाला था कि नौकर ने कार्ड लाकर दिया।

"ओह—" विनोद उठता हुआ बोला। फिर उसने वह कार्ड हमीद की ओर बढ़ा दिया जिस पर "आस्कर कैलव, ट्रैवेलिंग एजेंट स्टार इन्शोरेन्श कम्पनी" लिखा हुआ था।

वह दोनों ड्राइंग रूम में आये और यहाँ उन्हें एक वैसा ही चेहरा दिखाई पड़ा जैसे तीन चेहरे वह पिंस स्ट्रीट के एक फ्लैट में देख

चुके थे। लेकिन यह आदमी निर्धन मालूम हो रहा था। इसके पतलून में क्रेज नहीं थी। कोट मैला तथा पुराना था और बालों में धूल भरी हुई थी। ऐसा लगता था मानो यह किसी बड़ी यात्रा से चला आ रहा हो।

"मुझे आपका कार्ड मिला। पहले मैं आपके आफिस गया और वहाँ से आपका पता प्राप्त करके सीधे यहाँ चला आ रहा हूँ—" कैलब ने भयपूर्ण नेत्रों से विनोद की ओर देखते हुये कहा "मैं आप को विश्वास दिलाता हूँ कि मैंने आज तक कोई गैर कानूनी कार्य नहीं किया है।"

"हूँ—" विनोद उसे घूर कर देखने लगा।

"आप विश्वास कीजिये। मेरी कम्पनी वाले मेरी नेक चलनी की जमानत देंगे।"

"मगर तुम्हें यह ध्यान कैसे आया कि मैं···खैर छोड़ो इसे··· क्या तुम्हें यह नही मालूम हुआ कि मैं तुमसे क्यों मिलना चाहता हूँ!"

"जी नहीं—भला यह कैसे मालूम होता! आपने लिखा भी तो नहीं था···मगर मेरी समझ में नहीं आता कि आपने अपना कार्ड मेरे फ्लैट में कैसे पहुँचाया। वह मुझे लिखने वाली मेज पर रक्खा हुआ मिला था।"

विनोद ने अर्थ पूर्ण दृष्टि हमीद पर डाली और फिर कैलब से कहा।

"क्या तुम्हारे भाइयों ने तुम्हें नहीं बताया?"

"भाइयों!" कैलब आँखें फार कर बोला "मैं नहीं समझा!"

"तुम्हारे फ्लैट में तुम्हारे भाइयों से भेंट हुई थी।"

"यह आप क्या कह रहे हैं! मेरा फ्लैट तो एक महीने से बन्द पड़ा रहा है। मैं दौरे पर था और आज ही वापस आया हूँ। मेरे एक भी भाई नहीं है और आप तीन तीन भाई की बात कह

रहे है !"

"और वह तीनों तुम्हारी ही शकल सूरत के थे ।"

"आप मेरा परिहास कर रहे हैं—" केवल बुरा मान कर बोला ।

"अच्छा तो फिर तुम्हीं बताओ कि मेरा कार्ड तुम्हारी मेज पर कैसे पहुँचा ?"

"कैलब कुछ नहीं बोला । वह विनोद और हमीद को बारी बारी देखता रहा । कुछ देर बाद उसने गला साफ करते हुये कहा "देखिये ! मैं उस फ्लैट में दस वर्ष से अकेला रह रहा हूँ । इस बात की गवाही मेरे पड़ोसी दे सकते हैं ।"

"तब तो तुम्हारा नौकर ही इस मामिले को सुलझा सकता है—विनोद बोला ।

"अरे महाशय ! आप न जाने क्या कह रहे हैं । मेरे पास कभी कोई नौकर नहीं रहा । मैं अधिकतर दौरे ही पर रहता हूँ इसलिये आज तक नौकर रखने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी । इस बात को भी आप मेरे पड़ोसियों से पूछ सकते हैं, और वह यह भी बतायेंगे कि मेरा फ्लैट पिछले एक मास से बन्द रहा है ।"

"हूँ—" विनोद का मुख लाल हो उठा "तुम ग्रेटा को जानते हो—!"

"कौन ग्रेटा ! मैं किसी ग्रेटा को नहीं जानता !" कैलब बोला ।

—दूसरी ग्रेटा

कैलब के बयान ने एक और उलझन उत्पन्न कर दी जिसका परिणाम यह हुआ कि विनोद और हमीद को एक बार फिर प्रिंस स्ट्रीट जाना पड़ा । कैलब भी उनके साथ था ।

विनोद ने वहां जाकर पूछ ताछ आरम्भ की । कैलब के पड़ोसियों ने इस बात का समर्थन किया कि उसका फ्लैट एक महीने से बन्द

रहा है किन्तु एक बूढ़ी स्त्री ने बताया कि उसने आज ही सबेरे यहां कुछ आदमी दिखाई पड़े थे नहीं तो इससे पहले उसने भी कैलब के फ्लैट को बन्द ही देखा था।

"क्या उनमें से कोई आदमी कैलब की शकल का भी था।" विनोद ने पूछा।

"नहीं कोई नहीं—" बुढ़िया बोली "लेकिन वह भी एंग्लो इन्डियन ही थे और उनके साथ एक देशी नौकर भी था। मैं समझी शायद मिस्टर कैलब ने अपना फ्लैट पगड़ी लेकर उठा दिया है। इस बात का मुझे अत्यन्त दुख हुआ था क्योंकि मैंने कैलब से इस फ्लैट के लिये पहले ही से कह रक्खा था।"

उसके बाद विनोद ने दूसरे पड़ोसियों से और बहुत सी बातें पूछीं मगर सब बेकार। कोई परिणाम नहीं निकला। अन्त में निराश होकर वह चुप हो गया।

"मैं आपकी उपस्थिति में अपनी एक वस्तु देखना चाहता हूँ—" कैलब बोला "पता नहीं वह लोग कौन थे और क्या करने आये थे।"

"अवश्य देखो!"

वह दोनों कैलब के साथ उसके फ्लैट में आये और कैलब अपना सामान देखने लगा। लगभग आधे घन्टे देखने के बाद उसने बताया कि उसकी तमाम वस्तुयें मौजूद हैं।

"मेरा विचार है कि मुझे इसकी रिपोर्ट पुलिस में करनी चाहिये—" कैलब बोला।

"अवश्य—" विनोद कुछ सोचता हुआ बोला।

हमीद ने देखा कि विनोद इस मामिले में कोई दिलचस्पी नहीं ले रहा है।

"लेकिन आपने यह तो बताया ही नहीं कि आप मुझसे क्या मिलना चाहते थे?" कैलब ने विनोद से पूछा।

"कुछ नहीं—कुछ लोगों ने तुम्हारे प्रति मेरे दिल में सन्देह उत्पन्न कर दिया था। अब तुम सन्तोष रक्खो। मुझे शिकायत नहीं!"

"आखिर बात क्या थी?"

"जब उसका तुमसे कोई सम्बन्ध ही नहीं है तो फिर क्यों समय नष्ट कर रहे हो—" विनोद झुँझला कर बोला।

फिर वह दोनों कैलब के फ्लैट से निकल आये।

"अब क्या विचार है?" हमीद ने केडी में बैठते हुये व्यङ्ग पूर्ण स्वर में पूछा।

"यह एक अपमान जनक पराजय है—" विनोद बोला "लेकिन इसके लिये उन्हें शीघ्र ही पाई पाई का हिसाब देना होगा।"

"आपने उससे प्रो० राक के सम्बन्ध में क्यों नहीं पूछा?"

"जब वह ग्रेटा ही को नहीं जानता तो राक को क्या जानता होगा—" विनोद बोला।

"लेकिन इस कार्य से अपराधी क्या मतलब निकलना चाहते चाहते हैं!"

"यह प्रश्न तुमने ढङ्ग का पूछा है—" विनोद ने केडी स्टार्ट करते हुये कहा "सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि अपराधियों ने कैलब ही को अपना साधन क्यों बनाया? क्या इसलिये कि वह अधिकतर शहर से बाहर रहते है! अगर इसे मान भी लिया जाये तो फिर यह प्रश्न सामने आता है कि इन्हें यह कैसे पता चला कि मैं आज ही कैलब से मिलूंगा। हमारी इस समय की तहकीकात से यह बात साफ हो गई है कि उन्होंने कैलब का फ्लैट आज ही प्रयोग किया मगर क्यों! इन तमाम बातों से तो यही प्रमाणित होता है कि अपराधी हम लोगों की एक एक बात को जानते रहते हैं। हमारा हर प्रोग्राम उन तक पहुँचता रहता है।"

"कदाचित आप यह कहना चाह रहे हैं कि प्र० राक भी

अपराधियों का सहायक है।"

"हमें हर बातों का ध्यान रखना चाहिये।"

"मगर मुझे बिश्वास नहीं कि राक जैसा मूर्ख आदमी इतने भयङ्कर षड़यन्त्र में भाग ले सकता है—" हमीद बोला "अगर वह अपराधियों का साथी होता तो उसे कैलब का नाम लेने की क्या आवश्यकता थी—और वह आपको यह क्यों बताता कि वह भी एक रात चोरों के समान स्प्रिङ्ग काटेज में घुसा था।"

विनोद कुछ नहीं बोला। हमीद थोड़ी देर तक कुछ सोचता रहा, फिर उसने कहा "उस पत्र का मामला भी बड़ा विचित्र है।"

"आयँ!" विनोद चौंक पड़ा "किस पत्र का!"

"वही, जो प्रोफ़ेसर राक ने दिया था।"

"मैं भी उसी के बारे में सोच रहा हूँ—" विनोद बोला "पत्र लिखने वाला आखिर कौन सी बात ग्रेटा से मनवाना चाहता था—और यह भी विचित्र बात है कि वह पत्र प्रो० राक के हाथ लगा।"

"तो क्या आप प्रो० राक पर सन्देह कर रहे हैं।" हमीद ने पूछा।

"तुमको प्रो० राक से इतनी सहानुभूति क्यों है!"

"केवल इसलिये कि वह ग्रेटा से अथाह प्रेम करता था।"

विनोद ने कोई उत्तर नहीं दिया और हमीद को ग्रेटा की याद सताने लगी, यद्यपि विनोद के तर्क से वह निरुत्तर हो चुका था, किन्तु फिर भी वह यही चाहता था कि ग्रेटा को विनोद उस षड़यन्त्र में सम्मिलित न करे।

"अब आप कहां चल रहे हैं।" हमीद ने पूछा।

"प्रो० राक के घर!"

"क्यों!"

लेकिन विनोद ने इस क्यों का उत्तर नहीं दिया।

प्रो० राक की कोठी से लगभग एक फर्लांङ्ग इधर ही विनोद ने केडी रोक दी।

"क्या वहां तक पैदल ही चलियेगा।" हमीद ने पूछा।

"बेकार प्रश्न मत पूछा करो—" विनोद झल्ला कर बोला।

प्रो० राक की कोठी के बराम्दे में अन्धेरा था। विनोद ने टार्च जलाई। अन्दर जाने वाला दरवाजा खुला हुआ था। विनोद ने बटन को दबाया। घन्टी की आवाज कोठी के अन्दर गूंजने लगी, मगर दो मिनट तक प्रतीक्षा करने के बाद भी अन्दर से कोई बाहर नहीं आया।

"क्या बात है ?" हमीद ने आश्चर्य से पूछा।

विनोद ने टार्च जलाकर हमीद को अपने पीछे आने का संकेत किया।

वह दोनों अन्दर गये। घर की तमाम वस्तुयें उलटी पड़ी थीं। दोनों ने तमाम कमरे छान डाले मगर प्रो० राक का कहीं पता नहीं चला।

"प्रो० कहां गया ?" हमीद ने पूछा।

विनोद ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह फर्श पर बिखरे हुए सामानों को ध्यान से देख रहा था। उसने फिर राक को तलाश करना आरम्भ कर दिया—और थोड़ी ही देर के बाद उसे पा लिया। वह मैले कपड़ों के ढेर के नीचे औंधा पड़ा हुआ था।

राक मुर्छित पड़ा हुआ था। उसके चेहरे पर खरौंचे थीं जिनसे रक्त बह रहा था सांस रुक-रुक कर आ रही थी। हमीद ने चकित होकर विनोद की ओर देखा।

"इसे खुली हवा में ले चलो—" विनोद बोला "मैं दो एक कम्बल तलाश करता हूँ।"

हमीद राक को उठाकर बरामदे मे लाया।

"इतने चतुर लोग''कमाल है—" विनोद बोला और प्रोफेसर

राक का शरीर कम्बल से ढांक दिया। केवल मुँह खुला रहने दिया।

"आखिर इस पागल का उस मामिले से क्या सम्बन्ध हो सकता है?" हमीद ने पूछा।

"कदाचित उन्हें किसी वस्तु की तलाश रही होगी।"

"वह पत्र तो नहीं—जो आज ही आप इससे ले गये थे?"

"नहीं—वह पत्र बेकार है। उससे अपराधियों का पता नहीं लग सकता।"

विनोद ने राक की मुर्छा दूर करने की चेष्टा आरम्भ कर दी और थोड़ी ही देर के बाद राक की मुर्छा दूर हो गई, पहले तो वह पड़ा पड़ा आँखें झपकाता रहा, फिर बौखला कर उठ बैठा।

"ओह''आखिर!" वह विनोद पर गिर कर कांपने लगा।

"क्या बात है?" विनोद ने उसे देखते हुये कहा।

"क्या तुमने उन्हें पकड़ लिया?" राक काँपता हुआ बोला।

"किसे?"

"वह पाँच थे। मैं नहीं जानता कि वह मुझसे क्या चाहते थे। उन्होंने मेरा गला घूँट दिया था!"

"क्या तुम उन्हें पहचानते हो?"

"मुझे उन सभों की आवाजें जानी पहचानी मालूम हो रही थीं, लेकिन मैंने उनके चेहरे नहीं देखे, क्योंकि वह कपड़ों से छिपाये हुये थे।"

"आवाज से भी नहीं पहचान सके?" विनोद ने पूछा।

"मैं घबड़ा गया था। मैं कभी ऐसे चक्करों में नहीं पड़ा था। ऐसी परिस्थिति में जो भी होता घबड़ा जाता।"

"उन्होंने तुमसे क्या प्राप्त करना चाहा था?"

"कुछ नहीं—बस आते ही मुझ पर टूट पड़े। जब तक मुझ

में शक्ति थी तब तक मैं उनका सामना करता रहा—फिर मुझे नहीं मालूम कि क्या हुआ...कदाचित वह वही पत्र लेने आये थे जो आज ही तुम मुझसे ले गये हो।"

"अच्छा अन्दर चलो—" विनोद हाथ पकड़ कर उसे उठाता हुआ बोला।

अन्दर आकर जब प्रोफेसर राक ने घर की दशा देखी तो चिल्लाने लगा। बड़ी कठिनाई से हमीद और विनोद ने उसे चुप कराया।

"मैं पागल हो जाऊँगा—" राक अपने सर का बाल नोचता हुआ बोला "आखिर यह सब क्यों हो रहा है? मैंने तो किसी का कुछ नहीं बिगाड़ा है।"

ग्रेटा से प्रेम करना सरल नहीं प्रोफेसर!" हमीद बोला।

"ग्रेटा!" राक उछल पड़ा। "उसका इस मामिले से क्या सम्बन्ध?"

"तुम नहीं समझ सकते!" हमीद बोला।

'आओ चलें—" विनोद ने हमीद से कहा।

"नहीं—तुम मुझे इस दशा में अकेले छोड़कर नहीं जा सकते—" राक बोला।

"पुलिस से सहायता प्राप्त करो—" विनोद ने लापरवाही से कहा।

"जितनी देर में पुलिस आयेगी, उतनी देर में तो वह मुझे...।"

"बच्चे मत बनो प्रोफेसर!" विनोद बोला "अगर वह तुम्हारी जान ही लेना चाहते तो फिर तुम्हें जीवित क्यों छोड़ जाते।"

"सम्भव है उन्होंने यही समझ लिया हो कि मैं मर चुका हूँ।"

"फिर भी मैं कुछ नहीं कर सकता।"

"क्या इतना भी नहीं कर सकते कि अपनी कार में बैठा कर मुझे कोतवाली पहुँचा दो?"

afrfuuworld

"अच्छा चलो बाबा !" विनोद तंग आकर बोला।

प्रोफेसर राक ने मकान में ताला लगा दिया और केडी में बैठकर कोतवाली की ओर चल पड़ा। विनोद झल्ला उठा था। संयोग से मार्ग में पुलिस पिट्रौलकार मिल गई। विनोद ने उसे रुकवा कर राक को कोतवाली तक पहुँचाने की व्यवस्था कर ली।

"लेकिन मैं वहाँ कहूँगा क्या ?" राक ने विनोद से पूछा।

"यही कि तुम्हारे घर में कुछ नकाब पोशों ने घुसकर तुम पर आक्रमण किया—" विनोद धीरे से बोला 'और उनमें से एक कैलब था।"

"कैलब !" राक उछल पड़ा "तुमने ठीक कहा आफिसर ! उनमें से अवश्य एक कैलब था। ठीक उसी की आवाज थी। अब मुझे याद आया।

"अच्छा, अब जाओ।"

'पिट्रौल कार चली गई।

वह दोनों फिर केडी में बैठ गये।

'बड़ी सर्दी लग रही है ?" हमीद बोला।

"क्या चाहते हो ?"

"गर्म-गर्म काफी।"

"चलो—आर्लेक्चून होटल चल रहे हैं।"

"खुदा आपका मूड हमेशा ऐसा ही रक्खे—" हमीद खुशी से बोला।

"मेरा मूड अच्छा नहीं है।"

"मैं भी जानता हूँ...आपको चोट पर चोट हो रही है।"

"हां—लेकिन इतना समझ लो कि अपराधी अब बिल्कुल बौखला गये हैं।"

"होंगे—" हमीद बोला "मेरे मस्तिष्क में केवल एक ही प्रश्न है।"

"क्या ?"

"डाक्टर रशीद की लाश कब्र से क्यों निकाली गई। और उस सड़ी हुई लाश से गोश्त क्यों काटा गया !"

"मिस्टर हमीद ? इसी प्रश्न का उत्तर मेरे पास भी नहीं है। पहले तो मैंने यह सोचा था कि अपराधियों ने हमें उलझाने के लिये ऐसा किया था, मगर अब इस बात पर विश्वास नहीं हो रहा है।"

"अच्छा यह तो बताइये कि आप कैलब के पीछे क्यों पड़ गये हैं ?" हमीद ने पूछा "प्रगट है कि प्रोफेसर राक की रिपोर्ट पर पुलिस उसकी अच्छी तरह मरम्मत करेगी। पुलिस उस कैलव तक तो पहुँच न सकेगी जो इन तमाम फसादों की जड़ है।"

"और तुम उस कैलब को क्या समझते हो, जिससे हम अभी मिलकर आ रहे हैं ?" विनोद ने मुस्कुराकर पूछा।

"एक सभ्य नवजवान जो किसी कारण अपराधियों का साधन बन गया है।"

विनोद हँस पड़ा, मगर कुछ बोला नहीं। हमीद ने भी सोचा कि जब तक गर्म गर्म काफी नहीं मिलती तब तक के लिये चुप रहना ही अधिक अच्छा है।

आर्लेक्चून पहुँचकर दोनों एक कैविन में बैठ गये। हमीद ने कैविन का पर्दा इसलिये नहीं खींचा कि, ऐसी दशा में वह सामने वाले कैविनों में नजारा बाजी नहीं कर सकेगा, जहां उसे कई सुन्दर लड़कियाँ दिखाई दे रही थीं।

'यह लड़कियां सर्दियों में भी सुन्दर ही रहती हैं—" उसने विनोद से कहा, फिर सहसा चौंककर बोला "वाह ! अब तो इस होटल में बुर्के भी दिखाई देने लगे।"

विनोद ने सामने की ओर देखा। एक विचित्र जोड़ा सामने वाले कैविन में बैठ रहा था। एक औरत जो मुँह पर बुर्का डाले हुये थी और दूसरा मर्द जो काले रंग का सूट पहने हुये था, किन्तु उसके

चेहरे पर ठीक एक धार्मिक मुसलमान के समान डाढ़ी और मोछें थीं। उस औरत ने बैठते ही अपने मुंह से नकाब उलट दिया और हमीद के मुख से एक मन्द सी चीख निकल पड़ी।

"हम लोग सो रहे हैं या जाग रहे हैं।" हमीद बोला। उसके स्वर में कम्पन था।

"हम दोनों गधे हो गये हैं—" विनोद बोला "यह औरत शत प्रतिशत ग्रेटा मालूम होती है।"

डाढ़ी वाले ने उठकर कैबिन का पर्दा खींच दिया। हमीद की साँस फूल रही थी।

—घेरा

थोड़ी देर के बाद जब हमीद जरा सँभला तो उसने विनोद से पूछा।

"यह सब क्या है?"

"लौंडापन।"

"क्या मतलब?"

"मैं ठीक कह रहा हूँ। अब अपराधी इतनी तेज दौड़ने लगे हैं कि एक साधारण सी भूल भी उन्हें मुंह के बल जमीन पर ले आयेगी।"

"मैं अब भी नहीं समझा—" हमीद बोला।

"क्या तुम यह समझते हो कि यह ग्रेटा है। हमीद। मैं सच कहता हूँ कि अपराधी बुरी प्रकार बौखला गये हैं। अपनी समझ से वह मुझे चोट पर चोट दे रहे हैं, और कदाचित वह यह भी समझ रहे होंगे कि वह मुझे पराजित कर चुके हैं—और मैं सोचता हूँ कि यह बहुत ही अच्छा है। मैं भी यही चाहता हूँ कि वह लोग इसी भ्रम में पड़े रहें।"

"देखिये! अब अधिक दूर दर्शिता से काम न लीजिये। कहीं

www.akfunworld.wordpress.com

ऐसा न हो कि हमें अफसोस करना पड़े ।"

"क्यों ?" विनोद उसे घूरने लगा ।

"अब यही देखिये क आपने केवल अपनी दूरदर्शिता के आधार पर उन तीनों कैलबों से हाथ धो लिया ।"

"ओह ! तो क्या तुम यह चाहते हो कि मैं इन दोनों को इसी समय यहीं पकड़ लूं ?"

"मैं तो यही राय दूंगा"'क्योंकि इनके द्वारा हमें दूसरों का भी पता लग सकता है ।"

"तो फिर तुम यह चाहते हो कि दूसरे लोग हम पर हँसे ।"

"आखिर आपके दिल में क्या है ।" हमीद ने पूछा ।

"मेरे दिल में कुछ भी नहीं है । जो कुछ भी है वह सामने वाले कैबिन में है"'हमीद ! अगर मैंने इन्हें पकड़ लिया तो हमारे आफिसर हमें हँसी में उड़ा देंगे ।"

"क्यों"'कारण भी तो बताइये ।"

"यह दोनों बहरूपिये हैं । उसे औरत मत समझो । वह एक लड़का है और डाढ़ी वाला उसका बाप है । कुछ दिनों पहले यह दोनों एक रियासत में दर्बारी मसखरे थे । रियासतों के टूटने के बाद इनका रोजगार मारा गया । अब यह शहरों के अमीर लोगों के यहां स्वाँग भर कर थोड़ा बहुत कमा लेते हैं ।"

"आपको विश्वास है ।"

"बिना विश्वास के मैं कुछ नहीं कहता ।"

"लेकिन इसका तात्पर्य ।"

विनोद ने तत्काल ही उत्तर नहीं दिया । वह किसी सोच में पड़ गया था । आखिर उसने कहा ।

"तात्पर्य भी समझा जा सकता है, लेकिन इसके लिये इनका पीछा करना होगा ।"

"तो हर्ज क्या है ।"

"मैं इसे आवश्यक नहीं समझता।"

"मैं तो पीछा करूँगा—" हमीद बोला।

"किन्तु प्रत्येक क्षण तुम्हें इस बात का ध्यान रखना होगा कि तुमने अपनी इच्छा से ऐसा किया है। मैं किसी भी दशा में उत्तरदायी न बनूंगा।'

"आप चिन्ता मत कीजिये—" हमीद लापरवाही से बोला "मुझे दूरदर्शिता से अधिक दिलचस्पी नहीं है।"

बात वास्तव में यह थी कि हमीद को विनोद की बातों पर विश्वास नहीं हुआ था। बाप और बेटा—स्त्री पुरुष के रूप में! इस बात को सुनकर उसका दिल चाहा था कि दिल खोलकर हँसे और विनोद का परिहास उड़ायें। एक बात उसके सामने यह भी थी, कि अगर वह दोनों बहुरूपिये हैं तो फिर औरत को बुर्का पहनाने की क्या आवस्यकता थी! और इसी आधार पर उसने उनका पीछा करने का निश्चय किया था।

थोड़ी देर के बाद उस कैबिन का पर्दा सरका और वह दोनों स्त्री पुरुष बाहर आये।

"अच्छा कर्नल साहिब!" हमीद उठता हुआ बोला—"मैं तो चला।"

विनोद भी मुस्कुराता हुआ उठ गया।

और जब यह दोनों बाहर आये तो वह स्त्री पुरुष कम्पाउन्ड में खड़ी हुई एक लम्बी सी कार में बैठ रहे थे।

"गाड़ी तुम चलाओगे—" विनोद बोला "मैं जरा पिछली सीट पर आराम से बैठूंगा।"

हमीद ने स्वीकार कर लिया और विनोद पिछली सीट पर इस प्रकार लेट गया मानो बहुत थक गया हो और अब जरा सोना चाहता हो।

लम्बी कार सड़क पर आ गई। उसे एक लड़की चला रही थी

जो पहले से ही उस कार पर मौजूद थी। कार बड़ी तेजी से जा रही थी। ऐसा लग रहा था मानों उन्हें बहुत जल्द कहीं पहुँचना है। थोड़ी देर के बाद कार शहर से निकलकर एक सुनसान सड़क पर आ गई। हमीद इस समय अपने आपको किसी फ़िल्म का हीरो समझ रहा था। उसने केडीलाक की अगली बत्ती बुझा दी थी, और उसकी नजर अगली कार की पिछली लाल बत्ती पर थी।

सहसा उसे ऐसा लगा जैसे वह प्रकाश में नहा गया हो। वह चौंककर मुड़ा, और फिर बौखला गया। केडी से थोड़े ही पीछे एक ही पंक्ति में उसे तीन कारों की हेड लाइट्स दिखाई पड़ रही थीं। तीन कारें बराबर से चली आ रही थीं, और इस प्रकार उन्होंने सड़क की पूरी चौड़ाई घेर रक्खी थी। हमीद के हाथों के तोते उड़ गये।

अब उसकी समझ में आया कि विनोद की बातों का क्या अर्थ था।

"बड़े बार !" वह काँपते हुये स्वर में चीखा "क्या सो गये !"

लेकिन जैसे ही उसने पिछली सीट पर नजर डाली, रहा सहा धैर्य भी जाता रहा, क्योंकि सीट खाली थी। अगली कार काफी दूर निकल गई थी, और पिछली कारें सर पर चढ़ी आ रही थीं। सड़क के दोनों ओर दूर तक खाइयों और गढ़ों का क्रम चलता गया था, नहीं तो हमीद केडी को इधर उधर मोड़कर भी इस विपत्ति से छुटकारा प्राप्त कर सकता था। उसने बौखलाहट में केडी की अगली दोनों बत्तियां जला दीं, और सामने नजर पड़ते ही उसके हाथ पांव फूल गये। दिमाग सन सनाने लगा, क्योंकि अगली कार सड़क पर आड़ी खड़ी हो गई थी—और इस प्रकार आगे जाने का मार्ग भी बन्द कर दिया गया था।

हमीद को विश्वास हो गया कि अब जान नहीं बचेगी। सबसे बड़ी विपत्ति तो यह थी कि उसके पास पिस्तौल भी नहीं था और बेरा गूद हो चुका था।

उसने बड़ी फुर्ती से इंजिन बन्द किया और केडी से एक खांई में कूद गया। कई फायर हुये—अगर हमीद को एक सिकेन्ड भी देर हुई होती तो उसका शरीर छलनी हो गया होता। वह ढलान में दौड़ता चला गया। उसके पीछे भी कई आदमी दौड़ रहे थे।

अगर हमीद के पास रिवाल्वर होता तो वह इस प्रकार नहीं भागता। पीछे से फायर भी होते जा रहे थे। अन्त में हमीद एक स्थान पर सरकन्डों में छिप गया। और फिर उसने अपने पास ही पद ध्वनि सुनी।

"डरो नहीं—" किसी ने अंग्रेजी में कहा- "उनके पास रिवाल्वर नहीं है वर्ना वह भी अवश्य फायर करते।"

"मेरा विचार है कि वह कहीं पास ही में छिपे हैं—" किसी ने कहा "वह देखो! यह टूटे हुये सरकन्डे"'चलो यहां खड़े होकर फायर करो।

हमीद ने घबड़ाकर आगे छलाँग लगाई, और फिर उसे ऐसा लगा मानो उसकी खाल फट जायेगी। वह बर्फ के समान ठन्डे जल में गोते खा रहा था। कदाचित वह कोई तालाब था।

छः सात फायर एक साथ हुये और हमीद के कानों में सीटियाँ बजने लगीं—फिर उसे कुछ याद नहीं कि उसके बाद क्या हुआ?

जब उसे होश आया तो उसने अपने आपको एक कमरे में पलंग पर लेटा हुआ पाया। उसने अपने सामने उसी लड़की को बैठा हुआ पाया जो अगली कार चला रही थी। उसने हमीद को होश में देखकर फौरन ही घन्टी बजाई, और उसी समय एक आदमी कमरे में दाखिल हुआ। हमीद उसे देखते ही चौंककर उठ बैठा। यह आदमी वही कैलब था, जिसने अपने आपको स्टार इन्शोरेन्श कम्पनी का एजेन्ट बताया था और यह बयान दिया था कि उसका फ्लैट पिछले एक मास से बन्द पड़ा रहा था।

"तुम्हें आश्चर्य होगा—" कैलब मुस्कुरा कर बोला।

हमीद शीघ्र ही सँभल गया। उसे विश्वास हो गया था कि जब वह गोलियों के घेरे से बच निकला तो अब नहीं मर सकता। दूसरे विनोद के अचानक गायब हो जाने के कारण उसे और भ्रम हो गया था।

"ग्रेटा के सर्टिफिकेट विनोद क्यों ले गया था?" कैलब ने पूछा।

"इसका उत्तर वही देंगे।"

"अगर तुम सच सच बताओ तो तुम्हें छोड़ दिया जायेगा।"

"सच!" हमीद ने आश्चर्य प्रगट करते हुये कहा।

"हाँ।"

"तो फिर तुम मुझे एक पिस्तौल देकर इस इमारत से निकाल दो। मैं दो सौ गज के फासिले से इस का उत्तर देकर अपनी राह लूंगा।"

"समय नष्ट मत करो।"

"सुनो कैलब! मैं इतना मूर्ख नहीं कि तुम्हारे इस प्रश्न का उत्तर देकर सदा के लिये मौन हो जाऊँ।"

"अच्छा यह बता दो कि विनोद कहाँ गया?"

"वह मेरे साथ नहीं थे।"

"गलत!"

"बिल्कुल ठीक''वह शहर ही में उतर गये थे। उन्होंने मुझे भी पीछा करने से रोका था।"

कैलब कुछ कहने ही जा रहा था कि दो एँग्लो इन्डियन कमरे में आये।

"क्या आ गये?" कैलब ने उनसे पूछा।

"हाँ—" उनमें से एक बोला।

"उठो—" कैलब ने हमीद से कहा। हमीद उठ गया। वह

ऐसी परिस्थिति में झगड़ा मोल लेना नहीं चाहता था।

वह एक बड़े कमरे में आये। हमीद ने आश्चर्य से कमरे के सामान को देखा। चारों ओर नाना प्रकार के औजार और आले दिखाई दे रहे थे। कदाचित यह किसी वैज्ञानिक का अनुभव शाला था।

अचानक सामने वाले दरवाजे का पर्दा हटा और हमीद चीख पड़ा। उसके सामने प्रोफेसर राक खड़ा मुस्कुरा रहा था।

"क्यों बे केचुये!" राक हँसकर बोला "मैंने कहा था ना कि अगर तुम केचुये के बच्चे की पीठ पर पूरी शक्ति से भी खड़े हो जाओ तो उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते...तुम या विनोद जैसे केचुये मुझसे टक्कर नहीं ले सकते—समझे! मैं हूँ प्रोफेसर राक! उस नखों वाली बीमारी का जन्म दाता।"

"नखों वाली बीमारी!" हमीद बड़बड़ाया।

"हाँ...मैं इस शताब्दी का सबसे बड़ा वैज्ञानिक हूँ। मैं बीमारियों को जन्म दे सकता हूँ, और चुटकी बजाते बजाते संसार के बड़े बड़े आदमियों को मौत के घाट उतार सकता हूँ...क्या तुमने अपने देश के विद्वानों को कुत्ते की मौत मरते नहीं देखा!"

"लेकिन तुमने उन्हें मारा क्यों?" हमीद ने पूछा।

"केवल इसलिये कि मैं एशिया के काले जानवरों को प्रगति की ओर बढ़ते हुये नहीं देख सकता। तुम जो सदियों से हमारे गुलाम रहे हो, हमसे आगे नहीं बढ़ सकते। मेरे जीवन का केवल एक ही ध्येय रहा है और वह यह कि तुम काले पशुओं को आदमी न बनने दूँ...समझे!"

"तो क्या तुम यह समझते हो कि मैं तुम्हारी कार्य प्रणाली से अनभिज्ञ हूँ। मैं भली भांति जानता हूँ कि तुम किस प्रकार लोगों की जान लेते रहे—" हमीद आवेश में बोला।

"कैसे? जरा मैं भी सुनूँ!" राक मुस्कुराकर बोला।

"रंगीन कैपसूलों द्वारा जो सोडा बाई कार्ब मिले हुये पानी में नहीं घुलते, किन्तु शराब में फौरन ही घुल जाते हैं, चाहे उसमें जितना भी सोडा मिला हुआ हो…समझे !"

राक की आंखें फैल गईं ।

"और बताऊँ !" हमीद बोला "तुम्हारी आज दिन भर की उछल कूद का तात्पर्य केवल यही था कि हम लोग बौखला जायें और तुम हमें ग्रेटा के पीछे लगाकर हमें फाँस लो…लेकिन विनोद धोखा नहीं खा सकता…वह तुम्हारे चूहेदान में नहीं फँस सका। इसका तो तुम्हें काफी दुख होगा—क्यों ?"

"उसके नख भी शीघ्र ही खड़े हो जायेंगे—" राक मुस्कुरा कर बोला "इस समय तो तुम मरने के लिये तैयार हो ही जाओ—" राक ने शीशे के बर्तन से सीरेन्ज निकाली।

—मौत की छाया

"डरो मत !" राक ने सीरेन्ज में इन्जेक्शन लगाने वाली सूई फिट करते हुये कहा "तुम्हारे बाद विनोद का ही नम्बर आयेगा। तुम अकेले नहीं रहोगे।"

हमीद काँप उठा। कमरे में राक के अतिरिक्त आठ एँग्लो इन्डिन और थे, जिनके हाथों में पिस्तौल थे—मगर हमीद चूहों की मौत मरना तो किसी भी दशा में स्वीकार नहीं कर सकता था, क्योंकि वह विनोद का शिष्य और साथी था। उसने पास ही खड़े हुये एक एँग्लो इन्डियन पर छलाँग लगाई, किन्तु प्रथम इसके कि वह उसके पिस्तौल पर अधिकार प्राप्त करता, शेष सातों उस पर टूट पड़े।

"ओह !" राक हँसता हुआ बोला "तुम्हें अब भी विश्वास है कि तुम बच कर निकल जाओगे ! इधर देखो ! यह रहा तुम्हारा काल—" राक ने शीशे का एक मर्तवान उठाया।

मर्तबान में एक गन्दे रंग का तरल पदार्थ था। राक बोला "इस मर्तबान में जो अर्क है उसमें वही कीटाणु हैं जिसका जन्मदाता मैं हूँ, और इन्हीं कीटाणुओं को कैप्सूलों द्वारा शराब में मिलाकर मैं लोगों की जानें लेता रहा हूँ...केचुये! तुम्हें डाक्टर रशीद की सड़ी हुई लाश का मांस काटने पर आश्चर्य अवश्य हुआ होगा। लेकिन कदाचित तुम्हें यह नहीं मालूम होगा कि यह कीटाणु सड़े हुये माँस ही में पैदा होते हैं और उसी में जीवित भी रहते हैं। यह अर्क जो देख रहे हो, उसी सड़े हुये मांस का अर्क है।"

राक ने सीरेन्ज को मर्तबान में डाल कर उसमें अर्क खींचा और फिर सीरेन्ज को अपने चेहरे के बराबर लाकर उसमें आये हुये अर्क को देखा; और फिर बोला।

"मुझे तुम दोनों का पहले ही इन्तजाम करना चाहिये था।"

"तुम मुझे नहीं मार सकते..." हमीद चीखा।

राक खिलखिला कर हँस पड़ा और साथ ही अपने आदमियों को संकेत भी किया "इसे जमीन पर गिरा दो।"

आठों आदमियों ने हमीद को जबरदस्ती जमीन पर गिरा दिया और उसको हर तरफ से दाब कर बैठ गये ताकि वह हिलने डोलने न पाये। राक सीरेन्ज संभाले हुये हमीद की ओर बढ़ा—और फिर वह झुक कर हमीद की दाहिनी भुजा में उस खतरनाक अर्क का इन्जेक्शन देने ही जा रहा था कि अचानक सीरेन्ज उसके हाथ से उड़ गई और पूरा कमरा एक फायर की आवाज से झनझना उठा। राक उछल कर पीछे हट गया।

विनोद हाथों में एक टामीगन लिये दरवाजे में खड़ा था।

"अलग हटो तुम लोग—" उसने उन लोगों से कहा जो हमीद को दबाये हुये थे। उनमें से एक ने पिस्तौल निकालना चाहा किन्तु टामीगन से तीन चार गोलियां निकल कर उसके शरीर में धंस गईं।

"सबका यही परिणाम होगा—" विनोद ने गरज कर कहा "वर्ना जो कुछ मैं कहूँ बस चुपचाप करते जाओ—नहीं प्रोफेसर। अगर तुम जरा भी हिले तो गोलियों से तुम्हारा शरीर छलनी हो जायेगा। अपने हाथ ऊपर ही उठाये रक्खो—।"

सातों ऐंग्लो इन्डियन अलग हट गये।

"अब तुम सब एक लाइन में खड़े हो जाओ—ठीक मेरे सामने जल्दी करो।"

"तुम यहाँ से बच कर नहीं निकल सकते—" प्रोफेसर चिल्लाया।

"हमीद! इन सब के रिवाल्वर छीन लो—" विनोद बोला।

हमीद ने सब के रिवाल्वर ले लिये।

"अब तुम रिवाल्वर तान कर मेरे सामने खड़े हो जाओ—" विनोद ने हमीद से कहा। क्यों!" हमीद चौंक पड़ा।

"इसलिये कि मैं दरवाजे में खड़ा हूँ और मेरी नजर केवल सामने है और सामने ही रहेगी, क्योंकि सामने से नजर हटा लेना खतरे से खाली नहीं है। इन हत्यारों से किसी प्रकार की आशा रखना मूर्खता है। मैं अपने पीछे नहीं देख सकता, इसलिये मेरे पीछे तुम्हें नजर रखनी है। सम्भव है इसका कोई साथी पीछे से मुझ पर वार कर बैठे—अतः इसका उत्तर दायित्व तुम्हारे ऊपर है। और मैं! मैं प्रोफेसर से कुछ बातें करने जा रहा हूँ।"

हमीद ने विनोद की आज्ञा का पालन किया।

"हाँ प्रोफेसर!" विनोद ने राक को सम्बोधित किया "मैं मानता हूँ कि तुम अत्यन्त बुद्धिमान और चतुर हो। तुमने हमें फांसने के लिये जो प्लान बनाया था वह प्रशंसनीय था, मगर चालाक अपराधी भी किसी न किसी अवसर पर धोखा खा ही जाता है। तुमने भी धोखा खाया! तुम्हारी अन्तिम चाल असफल हो गई। वह ऐसे कि तुमने उन बहुरूपियों से सहायता प्राप्त की जिनके सात पुश्तों को मैं जानता था। ग्रेटा को तो तुम्हें बीच में लाना ही नहीं चाहिये था।

इस प्रकार की मूर्खतायें तो केवल जासूसी उपन्यासों में पाई जाती हैं, जिनमें क्लेश मात्र भी सच्चाई नहीं होती, केवल लेखक की अपनी भावना होती है"""और हां ! तुम अभी हमीद पर अपने इसआविष्कार का रोब डाल रहे थे"""क्या सचमुच यह तुम्हारा अविष्कार है ?"

"हाँ—" प्रोफेसर राक गरज कर बोला।

"आविष्कार मत कहो प्रोफेसर"""हाँ अनुसन्धान कह सकते हो।"

"अनुसन्धान ! क्या मतलब ?" राक गुर्राया।

"हां""यह तुम्हारा अनुसन्धान ही है—" विनोद बोला "हां तुम्हारा यह कार्य अवश्य प्रशंसनीय है कि तुमने इन कीटाणुओं को सोडा बाई कार्ब मिले हुये पानी में जीवित रखने का ढंग मालूम कर लिया है वर्ना यह कीटाणु केवल मनुष्य के सड़े हुये माँस में जीवित रहते हैं, और उसी में उत्पन्न भी होते हैं।"

"तुम कैसे जानते हो !" प्रोफेसर राक भर्राई हुई आवाज में बोला। टामीगन से अधिक विनोद के शब्दों ने उस पर प्रभाव डाला उसका मुख पीला पड़ गया।

विनोद ने मुस्कुराते हुये कहा "और उसी के अनुसार तुमने ऐसे कैपसूल बनाये जो सोडा बाई कार्ब मिले हुये पानी में न घुल सकें। तुम इन कीटाणुओं को उन्हीं कैपसूलों में रखकर शराब के गिलास में डलवा देते थे"""और फिर वह कैपसूल शराब में घुल जाते थे। शराब में चूँकि सोडा भी मिलाया जाता है इसलिये कीटाणु उसमें जीवित रहते हैं। सोडा बाई कार्ब के कारण उन पर स्प्रिट की तेजी भी अपना प्रभाव नहीं डाल सकती और वह अपना काम कर जाते हैं ! मगर तुम गोरे रंग के सूवरों। तुम बहुत बड़े बेईमान हो। तुम इन कीटाणुओं का जन्म दाता अपने आपको बताते हो"अच्छा सुनो"""आज एक काली नस्ल का जानवर तुम्हें इन कीटाणुओं का इतिहास बताने जा रहा है"""तुम्हें एक काले हिन्दुस्तानी से इसकी आशा तो न होगी मगर इतना याद रक्खो कि

अब हमारा जमाना आ रहा है—" विनोद थोड़ी देर के लिए रुका फिर बोला।

"यह उन्नीसवीं शताब्दी की बात है। अफ्रीका के जोलो लैन्ड नरेश पिन्ड मैं के लड़कों ने आपस में युद्ध किया। कई दिनों तक घमासान लड़ाई होती रही और फल यह हुआ कि हजारों आदमी मारे गये जिनकी लाशें मैदानों और गढ़ों में सड़ती रहीं। पादरी मेकाईल की पार्टी मानवता के उस अपमान जनक दृश्य को देखने के लिये जब वहाँ पहुँची तो उसे उन्हीं सड़ी और दुर्गन्धित लाशों के बीच से होकर जाना पड़ा—और पार्टी के तीन आदमियों को नलों वाली बीमारी हुई और वह वहीं मर गये। मेकाईल डाक्टर भी था। उसने उस नई बीमारी का कारण जानना चाहा। उसने उस बीमारी के सम्बन्ध में छानबीन आरम्भ कर दी और इस निश्चय पर पहुँचा कि वहाँ उगने वाली एक विशेष प्रकार की घास मनुष्य के सड़े हुये माँस से मिलकर यह फल उत्पन्न करती है। इस अनुसन्धान का सेहरा पादरी मेकाईल के सर है। उसके बाद फिर कदाचित तुमने ही नवीन ढंगों से उस पर रिसर्च किया है—समझे प्रोफेसर! तुम जैसे बुद्धिमान और विद्वान मनुष्य को इतना छिछोरा नहीं होना चाहिये। पादरी मेकाईल की कृतियों पर इस प्रकार डाका डालना ठीक नहीं।"

राक कुछ नहीं बोला। विनोद कुछ क्षण तक चुप रहने के बाद फिर बोला।

"तुमने आज का प्लान बड़ी बुधिमानी से तैयार किया था किन्तु उसी के साथ मेरे मस्तिष्क में भी एक प्लान बन रहा था···और उसी के फल स्वरूप तुम मुझे यहाँ देख रहे हो। नहीं तो भला मैं इस इमारत तक कैसे पहुँच सकता। यह इमारत जो यहां जंगल में केवल इसलिये बनाई गई थी कि यहाँ जड़ी बूटियों के अनुसन्धान का कार्य होगा—और यह बात आज ही मुझे मालूम हुई है कि

इस इमारत से तुम्हारा इतना गहरा सम्बन्ध है—और प्रोफेसर ! मैं तुम्हारी ही कार में यहां तक आया हूँ।"

"तुम झूठे हो—" राक चीखा।

"विश्वास करो प्रोफेसर ! मैं शहर से निकला ही नहीं। मैं शहर ही में अपनी कार से इस प्रकार चुपके से उतर गया कि हमीद को पता भी नहीं चल सका। फिर सबसे पहले मैंने यह किया कि कोतवाली में तुम्हें दो घन्टे तक रुकवाये रक्खा और इतनी देर में मैंने सब व्यवस्था ठीक कर ली—फिर मेरे लिये उस कार की स्टेपनी खोलकर उसमें बैठ जाना कोई दुष्कर कार्य नहीं था, जो प्रिस्टन के चौराहे पर तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही थी। मैं जानता था कि हमीद पकड़ लिया गया होगा और तुम कोतवाली से छुट्टी पाते ही सीधे वहीं जाओगे जहाँ हमीद को रक्खा गया होगा—लेकिन प्रोफेसर ! अगर तुम्हें यह मालूम हो गया होता कि विनोद नहीं पकड़ा गया है तो तुम कभी इधर नहीं आते। मुझे दुख है प्रोफेसर कि तुम अपनी एक मूर्खता के कारण आज यह दिन देख रहे हो। तुमने स्वयं नियाग्रा होटल के मैनेजर से ग्रेटा से लिये सिफारिश करके बहुत बड़ी भूल की—और इसी आधार पर मुझे तुम पर सन्देह हुआ और मैं तुम्हारे फेर में पड़ गया। अगर तुमने यह काम किसी दूसरे से लिया होता तो मैं कभी तुम तक नहीं पहुँच सकता था।"

सहसा विनोद की टामीगन से तीन-चार गोलियाँ निकलीं और एक ऐंग्लो इन्डियन ढेर हो गया। वास्तव में उसका एक हाथ नीचे गिर गया था।

"तुम सब इस बात का ध्यान रक्खो—" विनोद लापरवाही से बोला, फिर राक को सम्बोधित किया।

"प्रोफेसर ! मैं तुम्हारी जान नहीं लेना चाहता—बल्कि एक सौदा करना चाहता हूँ। अगर तुमने मान लिया तो मैं तुम्हें यहां से निकल जाने दूंगा।"

"कैसा सौदा ?" प्रोफेसर राक ने जल्दी से पूछा।

"तुम मेरे लिये एक सर्टीफिकेट लिख दो।"

"कैसा सर्टीफिकेट ?"

"बस तुम यह लिखकर दे दो कि नखों वाली बीमारी के प्रति जो छान-बीन विनोद ने की है, मैं उससे सहमत हूँ और सन्तुष्ट भी। विनोद कीटाणुओं का विशेषज्ञ है। उसने इन कीटाणुओं की उत्पति का जो ढङ्ग आविष्कार किया है वह आश्चर्यजनक तथा एशिया वालों के लिये गौरव पूर्ण है।"

"इससे तुम्हारा मतलब ?" राक ने पूछा।

"बस इसे एक ऐसी रिश्वत या घूस समझ लो, जिसके बदले तुम छोड़ दिये जाओगे ?" बड़ी देर के हां नहीं के बाद राक इस पर तैयार हो गया।

"हमीद !" विनोद ने उसे सम्बोधित करके कहा "मेरी जेब से फाउन्टेनपेन और दस्तावेज का कागज निकालकर प्रोफेसर को दे दो—मगर रिवाल्वर की नाल सामने ही रखना।"

"यह आप क्या करने जा रहे हैं ?" हमीद बौखला गया।

"चुप रहो—तुम नहीं समझते। मैं इस अनुसन्धान को दूसरा रूप देकर लाखों करोड़ों रुपये कमा लूँगा।"

राक ने कलम उठाया और लिखने के लिये हाथ बढ़ाया, मगर फिर रुककर कुछ सोचने लगा। उसने एक बार फिर विनोद की ओर संदिग्ध नजर से देखा।

"लिख दो प्रोफेसर ! या फिर हथकड़ी पहिनने के लिये तैयार हो जाओ।"

राक विवश होकर लिखने लगा। अभी वह एक पंक्ति भी नहीं लिख पाया था कि एकधमाके के साथ फाउन्टेनपेनफट गया और साथ ही एक तीव्र प्रकाश की किरन राक के चेहरे पर लगी और उसने चीखकर अपने दोनों हाथ अपनी आंखों पर रख लिये।

एक ऐंग्लो इन्डियन विनोद की ओर झपटा, मगर टामीगन की गोलियों ने उसे भी जमीन पर गिरा दिया। विनोद इस समय राक्षस का रूप धारण कर चुका था। उसके नेत्र इस प्रकार लाल हो रहे थे मानो आग के अंगारे हो। अचानक प्रोफेसर राक चीखने लगा "मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा है...अन्धेरा...विनोद...सूवर के बच्चे...तूने...मुझे...अन्धा कर दिया।"

"तुम तो अभी थोड़ी देर पहले बड़े अच्छे मूड में थे प्रोफेसर!" विनोद ने व्यंग करते हुए कहा "तुम अपने आविष्कार का रोब डाल रहे थे ना...इसीलिये मैंने भी सोचा कि तुम्हें भी मैं अपने एक तुच्छ आविष्कार का चमत्कार दिखा दूं...यह केवल एक घन्टे के परिश्रम का फल था प्रोफेसर! अगर थोड़ा समय और लगा देता तो तुम्हारी आने वाली नस्लें भी अन्धी हो जातीं—फिर उसने हमीद से कहा—"उस आलमारी के पीछे हथकड़ियाँ हैं—इन पाँच सभ्य पुरुषों को उनकी आवश्यकता है।"

राक मेज पर सर औंधाये चुपचाप बैठा था।

जब हमीद उनको हथकड़ियाँ लगा चुका तो उसने विनोद से कहा—"यहां एक लड़की भी थी, जो उस कार को ड्राइव कर रही थी, जिस पर वह दोनों वह रुपिये बैठे थे।"

"लड़की! विनोद मुँह बनाकर बोला "वह दूसरे कमरे में बेहोश पड़ी है।"

सहसा प्रोफेसर राक उछल कर खड़ा हो गया और विनोद को गालियाँ देने लगा। विनोद हँसता रहा। फिर बोला।

"प्रोफेसर! थोड़ी देर पहले तुमने एक ऐसे आदमी की ज़ान लेने का प्रयत्न किया था, जिसे मैं अपनी जान से भी अधिक प्यारा समझता हूँ अब तुम अन्धेरे में भटकते रहो—यही तुम्हारे लिये दण्ड है। मैं तुम्हें यहां अकेला छोड़ जाऊँगा। "पुलिस को तो कैलब की तलाश है—और उसे मैं अपने साथ लिये जा रहा हूँ। तुम्हारी

स्कीमों को वही सफल बनाता था और मैं जानता हूँ कि वह एक युद्ध प्रेमी देश का एजेन्ट है। ऐसे युद्ध प्रेमी देश का एजेन्ट जो एशिया को पंगुल बना देना चाहता है—जो यह चाहता है कि एशिया कभी अपने पैरों पर खड़ा न हो सके, कभी प्रगति की ओर न बढ़ सके।"

राक ने पागलों के समान चिल्लाना आरम्भ कर दिया, फिर वह एक ओर बढ़ा। एक मेज उलट गई और शीशे के कई आलात फर्श पर गिर कर चूर-चूर हो गये। राक उठकर दूसरी मेज पर जा पड़ा। उसी मेज पर कीटाणुओं वाला वह मर्तवान भी था। मर्तवान उलटागया और राक के चेहरे पर कीटाणू मिला हुआ अर्क फैल गया, उसके मुख से एक भयंकर चीख निकली और वह उछल कर एक दीवार से जा टकराया—उसकी अन्तिम चीख बड़ी लोम हर्षक थी। वह दो तीन मिनट तक फर्श पर तड़पता रहा, फिर उसके हाथ-पांव ऐंठ गये। उसके नख उँगलियों का माँस छोड़कर ऊपर उठ गये थे। बीरान आंखें छत पर लगी हुई थीं मुख खुल गया था और उसका चेहरा किसी मुर्दा बन्दर का चेहरा मालूम होने लगा था।

कमरे के वातावरण पर दिल हिला देने वाली भयंकर शान्ति छाई हुई थी—और अब ऐसा लग रहा था जैसे विनोद भी उसकी मृत्यु से प्रभावित हो गया हो। वह सब चुपचाप खड़े थे और उनकी परछाइयां मिलजुल कर ऐसी प्रतीत हो रही थीं मानो कालदेव की **विकराल छाया** दीवार पर स्थिर हो गई हो।

समाप्त

www.akfunworld.wordpress.com
www.freehindinovel.blogspot.com

जासूसी दुनिया हिन्दी

का

छत्तीसवाँ अंक—द्वितीय संस्करण

दो शिकार

लेखक :—इब्ने सफी बी० ए०

अनुवादक :—प्रेम प्रकाश

* बूढ़े ने जब गठरी खोली तो हमीद की आँखें चौंधिया गईं, क्योंकि उसमें एक लड़की थी जो बेहोश थी।

* लड़की गूंगी थी—बूढ़ा चाहता था कि विनोद उससे विवाह कर ले और विनोद ने उसकी शादी हमीद से कर दी—मगर क्या सच मुच वह शादी थी?

* वह आदमी जैसे ही विनोद की कोठी से निकला कत्ल कर दिया गया।

* गूँगी लड़की हमीद को तिगनी नाच नचाती है—

* हमीद की चुहिया और गूँगी लड़की की उछल कूद।

* षड़यँत्रों का एक भयँकर जाल जो विनोद और हमीद के लिये तैयार किया जा रहा था—तथा गूँगी लड़की के लिये एक उपद्रव।

प्रकाशन तिथि—८ नवम्बर १९६८ ई०   मूल्य—१ रुपया

प्रकाशक

जासूसी दुनिया प्रकाशन

इलाहाबाद—२

Jasoosi Duniya Dec 68
Registered with Registrar of News papers for India
Regd. No. 2156/57 Phone No. 5120 Allahabad-3

इब्ने सफ़ी की नई अनुपम भेंट

रौशनी की दीवार

प्रकाशन तिथि-
२५ नवम्बर १९६८
पृष्ठ ३०० मूल्य ३.००

प्रकाशक

जासूसी दुनिया प्रकाशन इलाहाबाद-३

A.H.W.